04

CHAPTER

बाह्य क्षेत्रः समृद्धि के बीच स्थिरता

स्थिर मुद्रास्फीति के साथ चल रही भू-राजनीतिक चुनौतियों के बीच भारत का बाह्य क्षेत्र मजबूत रहा। हालांकि प्रमुख व्यापारिक भागीदारों की कम मांग के कारण व्यापारिक निर्यात कम हो गया, लेकिन सेवाओं का निर्यात बेहतर रहा, जिससे समग्र व्यापार घाटा वित्त वर्ष-23 में 121.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर से वित्त वर्ष-24 में 78.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। आयातित वस्तुओं जिसमें कच्चा तेल भी शामिल था की कम कीमतों ने भी मदद की।

व्यापारिक आयात में कमी और सेवा निर्यात में बढ़ोतरी से भारत के चालू खाता घाटे (सीएडी) में सुधार हुआ है। सेवाओं के निर्यात में सॉफ्टवेयर/आईटी सेवाओं ने समग्र निर्यात में वृद्धि को प्रेरित किया है; साथ ही, व्यावसायिक सेवाओं का निर्यात भी बढ़ रहा है, जिसे भारत के वैश्विक क्षमता केंद्रों (जीसीसी) के केंद्र के रूप में उभरने से समर्थन मिला है।

भारत वैश्विक मूल्य शृंखला (जीवीसी) को आगे बढ़ा रहा है, सकल व्यापार में जीवीसी से संबंधित व्यापार की हिस्सेदारी 2019 में 35.1 प्रतिशत से बढ़कर 2022 में 40.3 प्रतिशत हो गई है। जीवीसी भागीदारी में सुधार पश्चगामी निवल जीवीसी भागीदारी में वृद्धि में भी परिलक्षित होता है। व्यापार में सुविधा और लाजिस्टिक लागत में कमी संबंधी सरकारी उपायों के कारण, विश्व बैंक के लोजिस्टिक परफॉरमेंस इंडेक्स में 139 देशों में भारत की रैंक छह अंकों में सुधार के साथ 2018 में 44वें से 2023 में 38वें स्थान पर पहुंच गई।

भारत ने वित्त वर्ष-24 में 44.1 बिलियन अमरीकी डालर का सकारात्मक निवल विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) इन्फ्लो दर्ज किया, जो मजबूत आर्थिक विकास, एक स्थिर कारोबारी माहौल और निवेशकों के विश्वास में वृद्धि के कारण है। बढ़ते एफईपीआई इन्फ्लो ने भारतीय रुपये को वित्त वर्ष-24 में 82 से 83.5/अमरीकी डॉलर की सीमा में रखा। वित्त वर्ष-24 में अपने उभरते बाजार साथियों और कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बीच रुपया सबसे कम अस्थिर मुद्रा के रूप में चमका। भारत के बाह्य क्षेत्र की चुनौतियों के अवरोधक - विदेशी मुद्रा भंडार, स्थायी बाह्य ऋण संकेतक, या बाजार-निर्धारित विनिमय दर, वैश्विक चुनौतियों को कम करने के लिए मौजूद हैं।

भविष्य में, भारत के निर्यात समूह की बदलती संरचना, व्यापार अवसंरचना में वृद्धि, निजी क्षेत्र में गुणवत्ता जागरूकता और उत्पाद सुरक्षा संबंधी चिंताओं में वृद्धि और स्थिर नीतिगत परिवेश से वस्तुओं और सेवाओं के वैश्विक आपूर्तिकर्ता के रूप में भारत की स्थिति को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है।

प्रस्तावना

4.1 कोविड-19 महामारी के बाद से, वैश्विक अर्थव्यवस्था को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा रूस-यूक्रेन युद्ध, मध्य पूर्व में हुए परिवर्तनों और लाल सागर संकट, जिससे कई वस्तुओं की आपूर्ति अव्यवस्था और कई देशों में मुद्रास्फीति में काफी वृद्धि हुई है। इसके अलावा, लगभग 64 देशों (साथ ही यूरोपीय संघ) के नागरिक, जो विश्व की जनसंख्या का लगभग 49 प्रतिशत है, 2024 में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था के समक्ष विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आव्रजन नीतियों के संदर्भ में नीतिगत अनिश्चितता बढ़ जाती है। विदेशी निवेश, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य को संचालित करते हैं, हाल ही में विकसित दुनिया में उच्च ब्याज दरों और विकसित देशों द्वारा सक्रिय औद्योगिक नीतियों की खोज जैसी अनिश्चितताओं के कारण धीमें हो गए हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त

राज्य अमेरिका के इंफलेशन रिडक्शन ऐक्ट ने न केवल निवेश पूंजी को देश मे ही बनाए रखने में मदद की, बल्कि अन्यत्र से भी पूंजी को आकर्षित किया।[1]

4.2 व्यापार एवं विकास संबंधी संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीटीएडी) के अनुसार, वैश्विक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई)[2] वर्ष 2023 में 2 प्रतिशत घटकर 1.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जो 2022 में 1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर था। वैश्विक व्यापार भी धीमी गति से चल रहा है, वर्ष 2023 में विश्व वस्तु व्यापार के मूल्य में 5 प्रतिशत की गिरावट आई है। उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) के सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में बाह्य ऋण वर्ष 2012 में 26.2 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2023 में 29.8 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2022 में चालू खाता शेष में घाटे के बाद, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) ने वर्ष 2023 में अधिशेष देखा। ईएमडीई के लिए, चालू खाता शेष वर्ष 2022 और वर्ष 2023 में अधिशेष में रहा है, हालांकि यह वर्ष 2022 में सकल घरेलू उत्पाद के 1.5 प्रतिशत से घट कर वर्ष 2023 में सकल घरेलू उत्पाद के 0.6 प्रतिशत है।[3]

4.3 इस पृष्ठभूमि में, अध्याय बाहरी क्षेत्र से संबंधित मापदंडों पर भारत के प्रदर्शन से संबंधित है। खंड 1 में प्रचलित वैश्विक व्यापार गतिशीलता और व्यापार पर चल रहे भू-राजनीतिक विपरीत परिस्थितियों के प्रभाव पर चर्चा की गई है। खंड 2 भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र पर केंद्रित है, जो उन उद्योगों पर कुछ विशिष्ट केस स्टडी प्रस्तुत करता है जिन्होंने सामान्य रुझानों पर ध्यान देते हुए उल्लेखनीय निर्यात दर्शाया है। यह भारत के कुछ नवीनतम मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) के परिणामों को भी दर्शाता है। यह खंड विभिन्न देशों से आयातों के लिए हमारे निर्यात के जोखिम और किसी भी बाहरी अप्रत्याशित आपूर्ति चुनौतियों के मद्देनजर तैयारी की आवश्यकता की कुछ विश्लेषणात्मक समझ प्रस्तुत करता है। खंड 3 में देश में पूंजी प्रवाह की प्रवृत्तियों को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है और प्रवृत्तियों से कुछ अंतर्दृष्टि प्राप्त की गई है। खंड 4 देश के भुगतान संतुलन (बीओपी) की स्थिति को प्रस्तुत करता है और इसकी तुलना कुछ समकक्ष देशों से करता है। यह हमारे विदेशी मुद्रा भंडार (एफईआर) और अंतर्राष्ट्रीय निवेश स्थिति (आईआईपी) को भी दर्शाता है, जो अर्थव्यवस्था को अनिश्चित बाहरी वातावरण से प्रतिकूल रूप से प्रतिरोध करता है। खंड 5 भारत के बाहय ऋण प्रवृत्तियों और इसे कैसे विवेकपूर्ण ढंग से प्रबंधित किया गया पर आधारित है। खंड 6 प्रमुख चुनौतियों का समाधान की जाने का उल्लेख करते हुए बाहरी क्षेत्र के संभावना के साथ समाप्त होता है।

वैश्विक व्यापार की गतिशीलता में बदलाव

4.4 व्यापार एक अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्ण स्तंभ है जो निवेश, रोजगार सृजन, आर्थिक विकास और जीवन स्तर के बेहतरी को प्रेरित करता बनाता है। वैश्विक व्यापार पैटर्न में पुनः परिवर्तन हो रहे हैं। मेक्सिको, वर्ष 2023 में, चीन और कनाडा को पीछे छोड़ते हुए अमेरिका का सबसे बड़ा माल व्यापार भागीदार बन गया, जिसका कुल व्यापार 798 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।[4] चीन और अमेरिका के साथ वियतनाम के व्यापार में हाल ही में वृद्धि देखी गई है। वर्ष 2017 में वियतनाम से अमेरिकी आयात 46 बिलियन अमेरिकी डॉलर से दोगुना होकर वर्ष 2023 में 114 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। इसी दौरान, चीन से वियतनाम का आयात 58 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 111 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया।[5] अन्य उदाहरण में, यूरोपीय अर्थव्यवस्थाएं अपने ऊर्जा आयात को रूस से नॉर्वे और अमेरिका में स्थानांतरित कर रही हैं। वर्ष 2021 में रूस से यूरोपीय संघ की पाइपलाइन गैस का आयात 150.2 बिलियन क्यूबिक मीटर से घटकर वर्ष 2023 में 42.9 बिलियन क्यूबिक मीटर हो गया।[6] इसी दौरान, अमेरिका से इसकी पाइपलाइन गैस आयात 18.9 बिलियन क्यूबिक मीटर से बढ़कर 56.2 बिलियन क्यूबिक मीटर हो गया। ये बदलाव अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में नई प्रथाओं के उद्भव

1 कैसे अमेरिका ने कोविड के बाद से वैश्विक पूंजी प्रवाह का एक तिहाई हिस्सा जुटाया, ब्लूमबर्ग, 16 जून 2024 (https://www.bloomberg.com/news/articles/2024-06-16/how-the-us-mopped-up-a-third-of-global-capital-flows-since-covid & accessed 22 June 2024)

2 UNCTAD वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट 2024-इन्वेस्टमेंट फैसिलिटेशन एंड डिजिटल गवर्नमेंट; https://unctad.org/system/files/official&document/wir2024_overview_en.pdf

3 आईएमएफ वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक डेटाबेस के अनुसार

4 भारत-मेक्सिको व्यापार और वाणिज्यिक संबंध, पैरा 3, https://tinyurl.com/5h4v96jp

5 स्रोत: वियतनाम सीमा शुल्क कार्यालय और अमेरिकी जनगणना ब्यूरो, https://www.customs.gov.vn/index.jsp\pageId=4964, https://www.census.gov/en.html

6 स्रोत: ENTSO-G और Refinitiv पर आधारित यूरोपीय आयोग, https://www.consilium.europa.eu/en/infographics/eu-gas-supply/#0

जैसे कि 'डिकपलिंग', 'डीरिस्किंग', 'रीशोरिंग', 'नियरशोरिंग', और 'फ्रेंड शेयरिंग' और डी-ग्लोबलाइजेशन की बढ़ती कहानी को दर्शाते हैं।[7]

4.5 एक तर्क यह है कि वैश्विक वित्तीय संकट के बाद से सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में व्यापार की वृद्धि रुक गई है हालांकि, वैश्विक व्यापार की मंदी इसकी पहले की तेज वृद्धि के बाद एक स्वाभाविक विकास प्रतीत होती है (चार्ट IV.2)।[8] डी-ग्लोबलाईजेशन की प्रवृत्तियां देशों में अत्यधिक विषम हैं। अमेरिका और चीन धीरे-धीरे वैश्विक बाजारों पर अपनी निर्भरता कम कर रहे हैं, जबकि यह दुनिया के बाकी हिस्सों के लिए सच नहीं लगता है। बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट (बीआईएस) के शोध से पता चलता है कि अपनी नीतियों के बावजूद, अमेरिका चीन के इनपुट पर निर्भर है।[9] वास्तव में, मेक्सिको और वियतनाम के माध्यम से व्यापार में वृद्धि चीनी फर्मों द्वारा इन देशों के माध्यम से अपनी आपूर्ति को री-रूट करने (या इन देशों में खुद को स्थापित करके) का परिणाम है। इसके अलावा, संसाधित महत्वपूर्ण खनिजों और एनर्जी ट्रांसिसन के लिए सामग्रियों की आपूर्ति में चीन का प्रभुत्व के कारण दोनों देशों के बीच डिकपलिंग न तो सरल है और न ही इसकी संभावना है।

चार्ट IV.1: वैश्विक वस्तु व्यापार में वृद्धि: वास्तविक और पूर्वानुमान

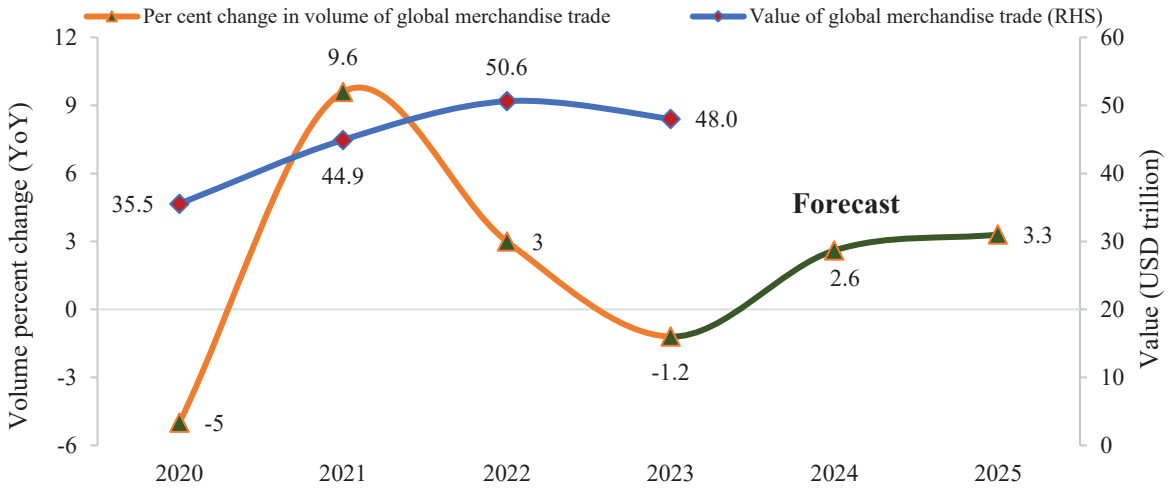

स्रोत: विश्व व्यापार संगठन, यूएनसीटीएडी

4.6 जैसा कि चार्ट IV.1 में देखा जा सकता है, रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद, 2022 में 3 प्रतिशत विस्तार दर्ज करने के बाद 2023 में वैश्विक व्यापार की मात्रा में 1.2 प्रतिशत की गिरावट आई।[10] वर्ष 2023 में विश्व वस्तु व्यापार का मूल्य 5 प्रतिशत से गिर गया, जो कम कीमतों के प्रभाव को दर्शाता है। इस गिरावट की भरपाई मुख्य रूप से वाणिज्यिक सेवाओं के व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि से हुई, जो वर्ष 2023 में 9 प्रतिशत बढ़कर 7.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई। वाणिज्यिक सेवाओं के व्यापार में वृद्धि, अंतरराष्ट्रीय यात्रा की पुन: प्रारंभ करके और डिजिटल रूप से वितरित सेवाओं में वृदधि के कारण हुई । वर्ष 2023 में डिजिटल रूप से वितरित सेवाओं का वैश्विक निर्यात 9 प्रतिशत बढ़कर 4.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जो वस्तुओं और सेवाओं के विश्व निर्यात का 13.8 प्रतिशत है।

4.7 वर्ष 2023 में प्रतिकूल व्यापार वातावरण इस वर्ष और अगले वर्ष कुछ हद तक कम होने और वर्ष 2024 और वर्ष 2025 में माल व्यापार में वृद्धि होने की उम्मीद है।[11] विश्व व्यापार की मात्रा वर्ष 2024 और वर्ष 2025 में क्रमश:

7 विश्व आर्थिक मंच के अनुसार, मित्र-शोरिंग व्यापार के प्रवाह में व्यवधान से बचने के लिए राजनीतिक और आर्थिक रूप से सुरक्षित या कम जोखिम वाले देशों को आपूर्ति श्रृंखलाओं को फिर से शुरू करने को संदर्भित करता है। नियरशोरिंग से तात्पर्य एक कंपनी से है जो व्यवसाय संचालन को पड़ोसी देश, जिसके साथ सीमा साँझ होती हो, में स्थानांतरित करता है। रीशोरिंग तब होती है जब कोई व्यवसाय अपने देश में संचालन को पुन: स्थानांतरित करता है।

8 गोल्डबर्ग, पीके, और रीड, टी. (2023)। क्या वैश्विक अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण हो रहा है? और यदि हां, तो क्यों? और आगे क्या है? (संख्या w31115)। राष्ट्रीय आर्थिक अनुसंधान ब्यूरो, https://www.nber.org/papers/w31115

9 किउ, एच., शिन, एचएस, और झांग, एलएसवाई (2023)। वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के पुनर्गठन का मानचित्रण (संख्या 78)। अंतर्राष्ट्रीय निपटान के लिए बैंक

10 विश्व व्यापार संगठन वैश्विक व्यापार आउटलुक और सांख्यिकी (अप्रैल 2024), https://www.wto.org/english/res_e/booksp_e/trade_outlook24_e.pdf

11 उपरोक्त टिप्पणी 10

2.6 प्रतिशत और 3.3 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है, क्योंकि व्यापारिक वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है। यूएनसीटीएडी द्वारा जारी नवीनतम रिपोर्ट में वर्ष 2025 में वैश्विक व्यापार में उछाल के प्रमाण दिखाई दे रहे हैं।[12] रिपोर्ट के अनुसार, 2024 की पहली तिमाही में वैश्विक व्यापार रुझान सकारात्मक हो गए, जिसमें वस्तुओं के व्यापार का मूल्य तिमाही-दर-तिमाही लगभग 1 प्रतिशत और सेवाओं में लगभग 1.5 प्रतिशत बढ़ा। यह वृद्धि मुख्य रूप से चीन (9 प्रतिशत), भारत (7 प्रतिशत) और अमेरिका (3 प्रतिशत) से निर्यात में वृद्धि के कारण हुई। हालांकि, भू-राजनीतिक तनाव और नीतिगत अनिश्चितता किसी भी व्यापार में परिवर्तन के दायरे को सीमित कर सकती है। जबकि कई अर्थव्यवस्थाओं में निर्यात वृद्धि में सुधार होने की उम्मीद है क्योंकि माल की बाहय मांग बढ़ी है, भू-राजनीतिक घटनाओं और जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्य और ऊर्जा की कीमतें फिर से बढ़ सकती हैं। इसके अलावा, कई देशों द्वारा अपनाई गई प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहारों से कीमतें बढ़ रही हैं क्योंकि आपूर्ति श्रृंखला निरंतर से जटिल हो गई है।[13]

4.8 वैश्विक व्यापार के लचीलेपन का परीक्षण दुनिया के दो प्रमुख शिपिंग मार्गों, पनामा नहर और स्वेज नहर में व्यवधानों द्वारा किया जा रहा है। पनामा नहर वैश्विक व्यापार का 6 प्रतिशत और अमेरिका से होने वाले 70 प्रतिशत से अधिक का संचलन करता है। यह वर्तमान में ताजे पानी की कमी के कारण अपनी आंशिक क्षमता पर काम कर रही है, जिस पर कुछ समय के लिए प्रतिबंध लागू रहने की संभावना है। इस बीच, स्वेज नहर के जरिए वैश्विक व्यापार लगभग 12 प्रतिशत हो रहा है एशिया और यूरोप के बीच लगभग एक तिहाई कंटेनर शिपिंग भेजे जा रहे है।[14] लाल सागर और केप ऑफ गुड होप के आसपास से यातायात मोड़ ने एशिया-यूरोप की यात्रा में दस दिन की वृद्धि के है, जबकि ईंधन की लागत भी बढ़ रही है। हालांकि वैश्विक शिपिंग लागत पिछले साल के मध्य तक महामारी से पहले के स्तर पर लौट आई हैं, कंटेनर शिपिंग दरें फिर से बढ़ गई हैं। इसके अलावा, स्वेज नहर प्राधिकरण ने पनामा नहर से गुजरने वाले जहाजों के लिए पारगमन शुल्क में 5-15 प्रतिशत की बढ़ोतरी की घोषणा की है।[15]

4.9 मौजूदा भू-राजनीतिक उथल-पुथल के बीच, भारत को अन्य देशों के साथ अपने मजबूत व्यापार संबंधों से लाभ होने की उम्मीद है, जैसा कि बाद के खंडों में विश्लेषण से पता चलता है। भारत के एशिया, यूरोप और अमेरिका के साथ व्यापक और विविध व्यापारिक संबंध हैं। निम्नलिखित खंड में भारत के व्यापार प्रदर्शन पर चर्चा की गई है।

भारत का व्यापार: वैश्विक उथल-पुथल के बीच लचीलापन

4.10 अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ने भारत के आर्थिक विकास में योगदान दिया है। समय के साथ-साथ व्यापार बढ़ाने के लिए ठोस सुधारों और सुविधाजनक उपायों के जरिए सकल घरेलू उत्पाद में व्यापार (वस्तुओं एवं सेवाओं) के हिस्से में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ट्रेड ओपननेस इंडिकेटर[16], जो वित्त वर्ष 05 में 37.5 से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 45.9 हो गया, ने आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है क्योंकि इसने तुलनात्मक लाभ के माध्यम से संसाधनों के कुशल आवंटन की सुविधा प्रदान की है।जीडीपी में व्यापार की हिस्सेदारी (पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात और कच्चे तेल के आयात को छोड़कर) वित्त वर्ष 2005 में 32.3 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष 23 में 40.8 हो गई। भारत का व्यापार वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है, जैसा कि नीचे चार्ट IV.2 में दर्शाया गया है।

12 यूएनसीटीएडी की रिपोर्ट, '2024 की पहली तिमाही में वैश्विक व्यापार वृद्धि फिर से शुरू होगी' https://tinyurl.com/3hefazed

13 वर्ल्ड बैंक ब्लॉग दिनांक 22 फरवरी 2024, 'वैश्विक व्यापार लगभग सपाट हो गया है। लोकलुभावनवाद विकास पर भारी पड़ रहा है', https://blogs.worldbank.org/en/voices/global-trade-has-nearly-flatlined-populism-taking-toll-growth

14 उपरोक्त टिप्पणी 10

15 जीईपी इंटेलिजेंस ड्राइव इनोवेशन ब्लॉग 'लाल सागर संकट: कैसे रीरूटिंग शिपिंग लागत को प्रभावित कर रहा है', https://www.gep.com/blog/mind/red-sea-crisis-how-rerouting-is-impacting-shipping-costs

16 व्यापार खुलापन सूचक की गणना नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात और आयात के योग को लेकर की जाती है।

चार्ट IV.2: बढ़ती व्यापार खुलापन संबंधी संकेतक

स्रोत: विश्व बैंक डेटाबेस, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय भारत
नोट: विश्व के लिए डेटा 2022 तक है, और भारत के लिए 2023 तक है

तालिका IV.1: भारत के व्यापार के प्रमुख पहलू (कैलेंडर वर्षवार)

	2020	2021	2022
निर्यात प्रदर्शन (प्रतिशत में)			
विश्व वस्तु निर्यात में हिस्सेदारी	1.6	1.8	1.8
विश्व वाणिज्यिक सेवा निर्यात में हिस्सेदारी	4.1	4.0	4.4
विश्व वस्तु प्लस सेवा निर्यात में हिस्सेदारी	2.1	2.2	2.4
आयात प्रदर्शन (प्रतिशत में)			
विश्व वस्तु आयात में हिस्सेदारी	2.1	2.5	2.8
विश्व वाणिज्यिक सेवा आयात में हिस्सेदारी	3.3	3.5	4.0
विश्व वस्तु प्लस सेवा आयात में हिस्सेदारी	2.3	2.7	3.0
विश्व व्यापार में भारत का रैंक			
मरचंडाईज वस्तु निर्यात	21.0	18.0	18.0
मरचंडाईज वस्तु आयात	14.0	10.0	9.0
सेवा निर्यात	7.0	8.0	7.0
सेवाओं का आयात	10.0	10.0	8.0

स्रोत: डीजीएफटी, विदेशी व्यापार सांख्यिकी पर मासिक बुलेटिन, अप्रैल 2024

4.11 चार्ट IV.3 दर्शाता है कि भारत वस्तुओं और सेवाओं के वैश्विक निर्यात में बाजार हिस्सेदारी हासिल कर रहा है। वैश्विक वस्तुओं के निर्यात में इसकी हिस्सेदारी वित्त वर्ष 24 में 1.8 प्रतिशत थी, जबकि यह वित्त वर्ष 16 से वित्त वर्ष 20 के दौरान औसतन 1.7 प्रतिशत थी। इसी तरह, वैश्विक सेवाओं के निर्यात में इसकी हिस्सेदारी वित्त वर्ष 23 में बढ़कर 4.3 प्रतिशत हो गई, जो वित्त वर्ष 16 से वित्त वर्ष 20 के दौरान औसतन 3.3 प्रतिशत थी।

चार्ट IV.3: वैश्विक वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात में भारत की बढ़ती हिस्सेदारी

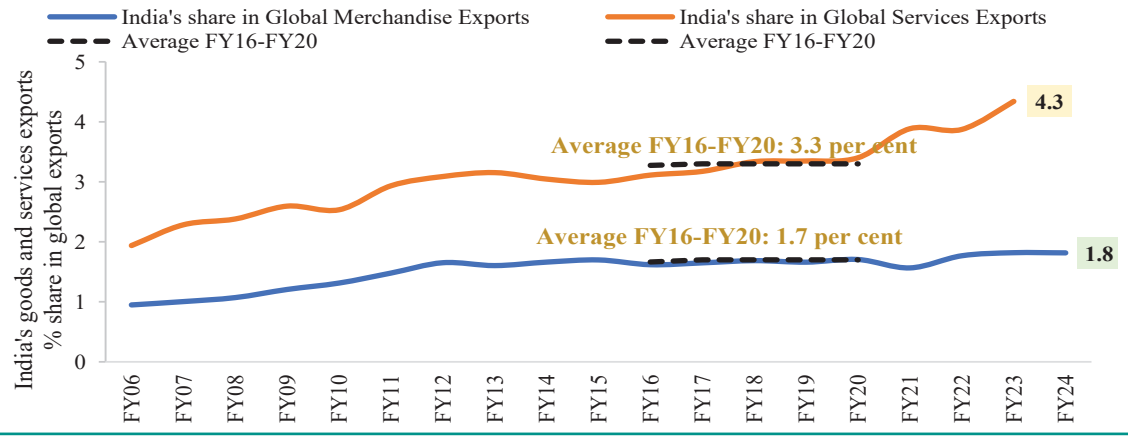

स्रोत: यूएनसीटीएडी

भारत का समग्र व्यापार

4.12 वित्त वर्ष-17 से भारत का कुल निर्यात (वस्तुओं और सेवाओं) लगभग तीन वर्षों से समान आधार पर बढ़ रहा है। हालांकि, वित्त वर्ष-20 में आर्थिक मंदी देखी गई, जो वैश्विक महामारी के प्रकोप से बढ़ गई, जिसने इस प्रवृत्ति पर रोक लगाई। वित्त वर्ष-22 एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया। भारत के कुल आयात (वस्तुओं और सेवाओं) में भी इसी तरह की प्रवृत्ति देखी गई है। सकारात्मक वृद्धि वित्त वर्ष-23 में भी देखने को मिली, जिसमें भारत का कुल निर्यात 776 बिलियन अमरीकी डालर को पार कर गया। वित्त वर्ष-22 में 760.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर की तुलना में वित्त वर्ष-23 में कुल आयात भी बढ़कर 898 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। लगातार वैश्विक चुनौतियों के बावजूद, वित्त वर्ष-24 में कुल निर्यात वित्त वर्ष-23 के रिकॉर्ड को पार कर गया, इसमें 0.23 प्रतिशत की वृद्धि हुई, और मजबूत घरेलू मांग के बावजूद वित्त वर्ष-24 में कुल आयात में 4.9 प्रतिशत की गिरावट आई। वित्त वर्ष-25 के पहले दो महीनों के दौरान कुल निर्यात बढ़कर 133.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में यह 122.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। इसी अवधि के दौरान कुल आयात भी 136.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 149. 9 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जिससे कुल व्यापार घाटा 14 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 16.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।

चार्ट IV.4: पिछले दस वर्षों में भारत का समग्र व्यापार प्रदर्शन

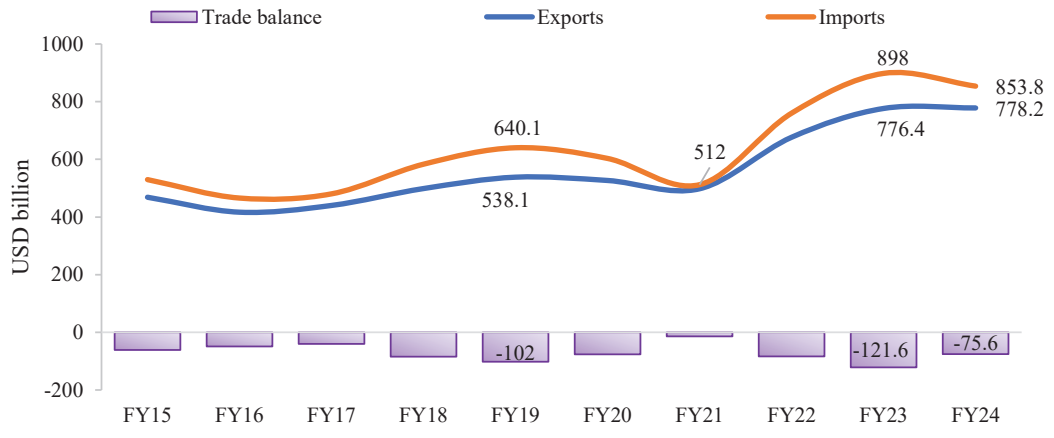

स्रोत: निर्यात आयात डेटा बैंक (वार्षिक), व्यापार सांख्यिकी, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, सेवाओं में भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, आरबीआई

पण्य व्यापार: वैश्विक प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना

पण्य निर्यात

4.13 भारत के व्यापारिक निर्यात में वित्त वर्ष-23 की दूसरी छमाही और वित्त वर्ष-24 की पहली छमाही में चल रहे भू-राजनीतिक तनावों के कारण कमी देखी गयी। हालांकि, वित्त वर्ष-24 की दूसरी छमाही में ट्रेंड रिवर्सल हुआ, जिसमें पण्य निर्यात में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। बॉक्स IV.1 में उन क्षेत्रों पर चर्चा की गई जिनमे पिछले कुछ वर्षों में अपने निर्यात प्रदर्शन के साथ चमकते रहे हैं। बढ़ते निर्यात के साथ, आयात में भी वित्त वर्ष-24 की दूसरी छमाही में सकारात्मक वृद्धि देखी गई। वित्त वर्ष-24 की दूसरी छमाही में सकारात्मक वृद्धि दर्ज करने के बावजूद, वित्त वर्ष-23 की तुलना में वित्त वर्ष-24 में वस्तु निर्यात और आयात में कमी देखी गई। कई देशों द्वारा बढ़ती मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए किए गए मौद्रिक सख्ती के पश्च प्रभाव के अलावा थी। व्यापारिक निर्यात में गिरावट मुख्य रूप से भारत के प्रमुख निर्यात भागीदारों (विशेष रूप से यूरोपीय संघ, जिसकी वास्तविक जीडीपी 2022 में 3.6 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में 2023 में मुश्किल से 0.6 प्रतिशत बढ़ी) में मंदी के कारण कमी। जबकि वित्त वर्ष-24 में आयात की मात्रा में कमी नहीं आई, लेकिन वैश्विक कमोडिटी की कीमतों में गिरावट के कारण वस्तु आयात का समग्र मूल्य में कमी आयी है । निर्यात की तुलना में आयात में बड़ी गिरावट के कारण, पिछले वर्ष में 264.9 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में वित्त वर्ष -24 में वस्तु व्यापार घाटा 238.3 बिलियन अमरीकी डालर तक सीमित हो गया। गैर-पेट्रोलियम और गैर-रत्न और आभूषण व्यापारिक वस्तुओं के निर्यात ने पिछले कुछ महीनों में निरंतर वृद्धि के साथ लचीलापन दिखाया है, जिसके परिणामस्वरूप वित्त वर्ष-24 में 320.2 बिलियन अमरीकी डालर का निर्यात हुआ, जो पिछले वर्ष की तुलना में 1.5 प्रतिशत अधिक है। इसी समय, गैर-पेट्रोलियम, गैर-रत्न और आभूषण आयात (सोना, चांदी और कीमती धातुओं) में वित्त वर्ष-24 में (-) 3.5 प्रतिशत की कमी देखी गयी।

चार्ट IV.5: भारत का वस्तु व्यापार प्रदर्शन

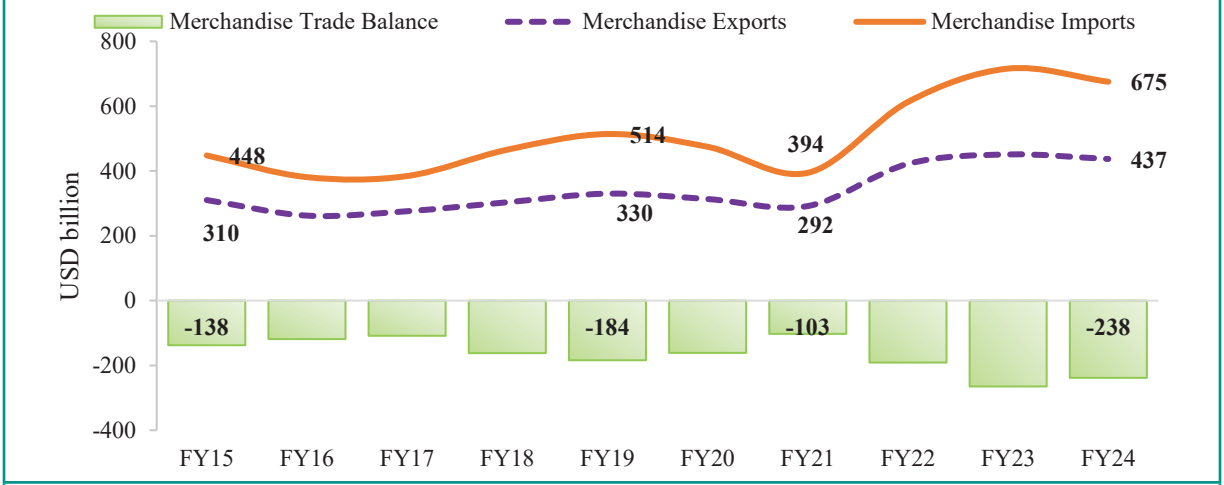

स्रोत: निर्यात आयात डेटा बैंक (वार्षिक), व्यापार सांख्यिकी, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

4.14 वित्त वर्ष-25 के पहले दो महीनों उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति के दबाव में कमी के कारण वैश्विक निर्यात मांग में वृद्धि हुई है। वित्त वर्ष-25 के के अप्रैल- मई के दौरान भारत का पण्य निर्यात बढ़कर 73.1 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 69.6 बिलियन अमरीकी डॉलर था।

चार्ट IV.6: विभिन्न वर्गीकरणों में वस्तु निर्यात की संरचना

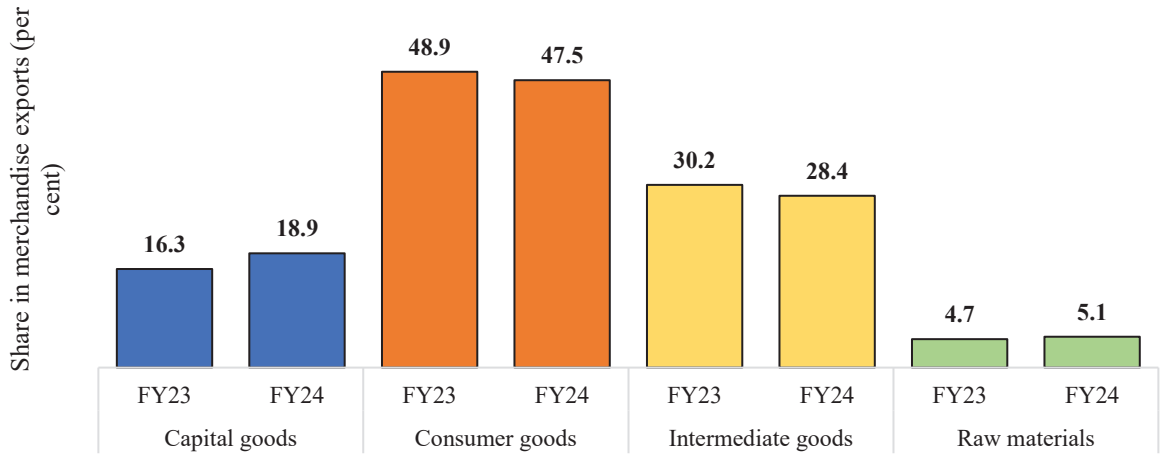

स्रोत: डीजीसीआई एंड एस[17]

4.15 वित्त वर्ष-23 से वित्त वर्ष-24 तक, विभिन्न वर्गीकरणों में निर्यात की संरचना में बदलाव दिखाई देता है। विशेष रूप से, पण्य निर्यात में पूंजीगत वस्तुओं की हिस्सेदारी वित्त वर्ष-23 में 16.3 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष-24 में 18.9 प्रतिशत हो गई। यह वृद्धि भारत की मशीनरी, उपकरण और उत्पादन प्रक्रियाओं में उपयोग की जाने वाली अन्य टिकाऊ वस्तुओं की बेहतर आपूर्ति को दर्शाती देती है, जो इसकी औद्योगिक क्षमताओं में संभावित विस्तार या उन्नयन को दर्शाती है। इसके विपरीत, पण्य निर्यात में उपभोक्ता वस्तुओं की हिस्सेदारी वित्त वर्ष-23 में 48.9 प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष-24 में 47.5 प्रतिशत हो गई, जो प्रत्यक्ष उपभोग के लिए तैयार उत्पादों के निर्यात में मामूली गिरावट को दर्शाती देती है। मध्यवर्ती वस्तुओं की हिस्सेदारी भी 30.2 प्रतिशत से घटकर 28.4 प्रतिशत हो गई।

बॉक्स IV.1: निर्यात बढ़ाने की उत्पाद विशिष्ट सफलता की कहानियाँ

सरकार द्वारा किए गए अनेक उपायों से उत्पाद-विशिष्ट निर्यातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सफलता के कुछ कहानियों का उल्लेख नीचे किया गया है: -

खिलौना निर्यात: भारत के खिलौना उद्योग ने लंबे समय से वैश्विक व्यापार परिदृश्य में चुनौतियों का सामना किया है, जो लगातार कई वर्षों से खिलौनों का निवल आयातक रहा है। हालांकि, इस उद्योग द्वारा निर्यात में वर्ष 2023 में उल्लेखनीय वृद्धि का अनुभव किया। वाणिज्यिक जानकारी एवं सांख्यिकी महानिदेशालय डीजीसीआईएस के आंकड़ों के अनुसार, भारत के खिलौना निर्यात ने वृद्धि की प्रवृति रही है, जिसमें वित्त वर्ष-13 और वित्त वर्ष-24 के बीच 15.9 प्रतिशत की मिश्रित वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) दर्ज की गई है।[18] बढ़ते निर्यात के साथ-साथ घटते आयात ने भारत को खिलौनों के व्यापार में घाटे से अधिशेष राष्ट्र में बदल दिया। एक दशक से अधिक समय से, भारत अपने खिलौनों के आयात के लगभग 76 प्रतिशत के लिए चीन पर बहुत अधिक निर्भर था। चीन से खिलौनों के लिए भारत का आयात बिल वित्त वर्ष-13 में 214 मिलियन अमरीकी डालर से घटकर वित्त वर्ष-24 में 41.6 मिलियन अमरीकी डालर हो गया, जिससे भारत के खिलौना आयात में चीन की हिस्सेदारी वित्त वर्ष-13 में 94 प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष-24 में 64 प्रतिशत हो गई, जो अंतरराष्ट्रीय खिलौना बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता को दर्शाती है।[19] वर्ष 2014 से वर्ष 2020 की अवधि में, सरकार के केंद्रित प्रयासों के परिणामस्वरूप विनिर्माण इकाइयों की संख्या दोगुनी

17 6-अंकीय एचएस स्तर पर वस्तुओं का वर्गीकरण विश्व एकीकृत व्यापार समाधान (डब्लूआईटीएस) से 'मानक उत्पाद समूहों' और संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी प्रभाग (यूएनएसडी) से 'व्यापक आर्थिक श्रेणियों (बीईसी संशोधन 5)' से लिया गया है। कुछ अवर्गीकृत वस्तुओं को समान उत्पाद समूहों की प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। कुल मिलाकर, वर्गीकृत वस्तुएँ वित्त वर्ष 23 और वित्त वर्ष 24 दोनों में निर्यात समूह का 99.9 प्रतिशत और आयात समूह का 99.8 प्रतिशत कवर करती हैं।

18 व्यापार डेटा एचएस कोड 9503, 9504 और 9505 के लिए रिपोर्ट किया गया है

19 व्यापार डेटा एचएस कोड 9503 के लिए रिपोर्ट किया जाता है, क्योंकि चीन से खिलौनों के आयात में इसका 80 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है

हो गई, आयातित इनपुट पर निर्भरता 33 प्रतिशत से घटकर 12 प्रतिशत हो गई, सकल बिक्री मूल्य 10 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ गया, और श्रम उत्पादकता में समग्र वृद्धि हुई।[20]

खिलौना उद्योग के लिए सरकार द्वारा किए गए उपायों में 21 विशिष्ट कार्रवाई बिन्दुओं के साथ खिलौनों हेतु एक व्यापक राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार करना, खिलौनों पर आधारभूत सीमा शुल्क में वृद्धि, घटिया आयातों को नियंत्रित करने के लिए विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) द्वारा प्रत्येक आयात खेप का नमूना परीक्षण, खिलौनों के लिए गुणवत्ता नियंत्रण आदेश जारी करना और क्लस्टर आधारित पद्धति के माध्यम से सहायता करना शामिल है। खिलौना निर्यातक राष्ट्र के रूप में भारत के उभरने का श्रेय वैश्विक खिलौना मूल्य श्रृंखला में इसके एकीकरण और संयुक्त अरब अमीरात और ऑस्ट्रेलिया जैसे महत्वपूर्ण देशों में घरेलू स्तर पर निर्मित खिलौनों के लिए शुल्क रहित बाजार पहुंच को दिया जा सकता है।[21]

चार्ट IV.7: भारत के खिलौनों के निर्यात और आयात में रुझान

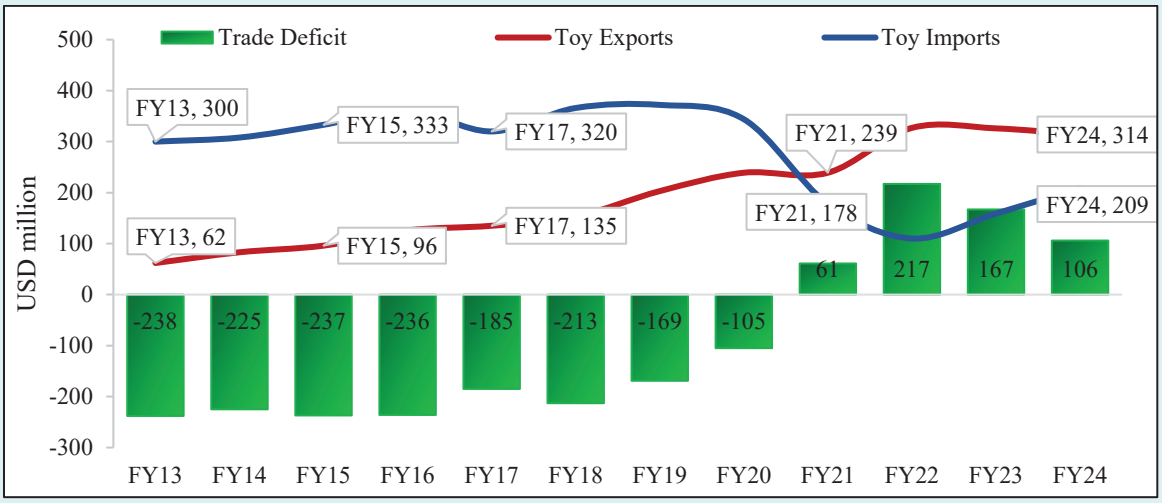

स्रोत: निर्यात आयात डेटा बैंक (वार्षिक), व्यापार सांख्यिकी, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

रक्षा निर्यात: भारत का रक्षा उत्पादन वित्त वर्ष-17 में ₹74,054 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष-23 में ₹108,684 करोड़ हो गया, जिससे रक्षा निर्यात को बढ़ावा मिला।[22] वर्ष 2015 और वर्ष 2019 के बीच, भारत ने दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक होने का गौरव प्राप्त किया। हालाँकि, यह परिस्थिति बदल गयी है। भारत अब हथियार आयातक से पारगमन कर रहा है और शीर्ष 25 हथियार निर्यातक देशों की सूची में एक स्थान पाया है। निजी क्षेत्र और रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (डीपीएसयू) सहित रक्षा उद्योग ने अब तक के सबसे अधिक रक्षा निर्यात को प्राप्त करने के लिए जबरदस्त प्रयास किए हैं। इसके अलावा, रक्षा निर्यातकों को जारी किए गए निर्यात प्राधिकारों की संख्या में वृद्धि हुई है। वित्त वर्ष-23 में 1,414 निर्यात प्राधिकारों से, संख्या वित्त वर्ष-24 में बढ़कर 1,507 हो गई है। लगभग 100 घरेलू कंपनियां रक्षा उत्पादों और उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला का निर्यात कर रही हैं, जैसे डोर्नियर -228 जैसे विमान, आर्टिलरी गन, ब्रह्मोस मिसाइल, पिनाका रॉकेट और लॉन्चर, रडार, सिमुलेटर और बख्तरबंद वाहन, लगभग 100 घरेलू कंपनियों द्वारा निर्यात किए जा रहे हैं।

रक्षा निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने पिछले दस वर्षों में कई नीतिगत पहल की हैं। निर्यात प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है और उद्योग के अनुकूल बनाया गया है, जिसमें एंड-टू-एंड ऑनलाइन निर्यात प्राधिकार देरी को कम करता है और व्यापार करने में आसानी की सुविधा प्रदान करता है। इसके अलावा, आत्मनिर्भर भारत पहल ने रक्षा उपकरणों के स्वदेशी डिजाइन, विकास और निर्माण को प्रोत्साहित करके देश की मदद की है, जिससे लंबे समय में आयात पर निर्भरता कम हुई है।

20 वाणिजय मंत्रालय की 4 जनवरी 2024 की पीआईबी विज्ञप्ति, https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1993109
21 उपरोक्त
22 रक्षा मंत्रालय की 24 फरवरी 2024 की पीआईबी विज्ञप्ति, https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID-2008632

चार्ट IV.8: बढ़ता रक्षा निर्यात

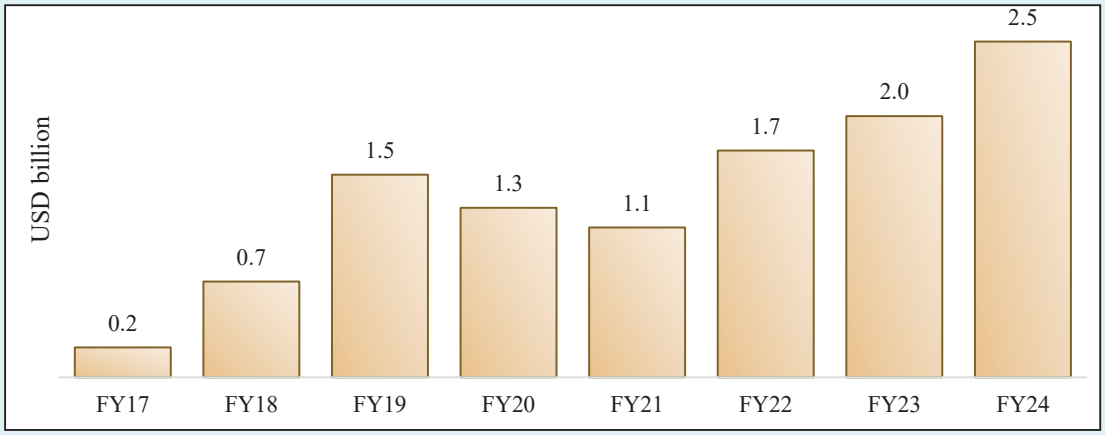

स्रोत: रक्षा मंत्रालय

फुटवियर निर्यात: भारतीय फुटवियर और चमड़ा उद्योग एक महत्वपूर्ण विदेशी मुद्रा अर्जक है। चीन के बाद भारत फुटवियर का दूसरा सबसे बड़ा वैश्विक उत्पादक है, जो वैश्विक फुटवियर उत्पादन का 13 प्रतिशत और वैश्विक निर्यात का 2.2 प्रतिशत के लिए उत्तरदायी है। भारत नौवां सबसे बड़ा वैश्विक फुटवियर निर्यातक है।[23] DGCIS के अनुसार, भारत का फुटवियर निर्यात वित्त वर्ष-21 में 1.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष-24 में 2.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है।[24]

चार्ट IV.9: फुटवियर निर्यात में रुझान

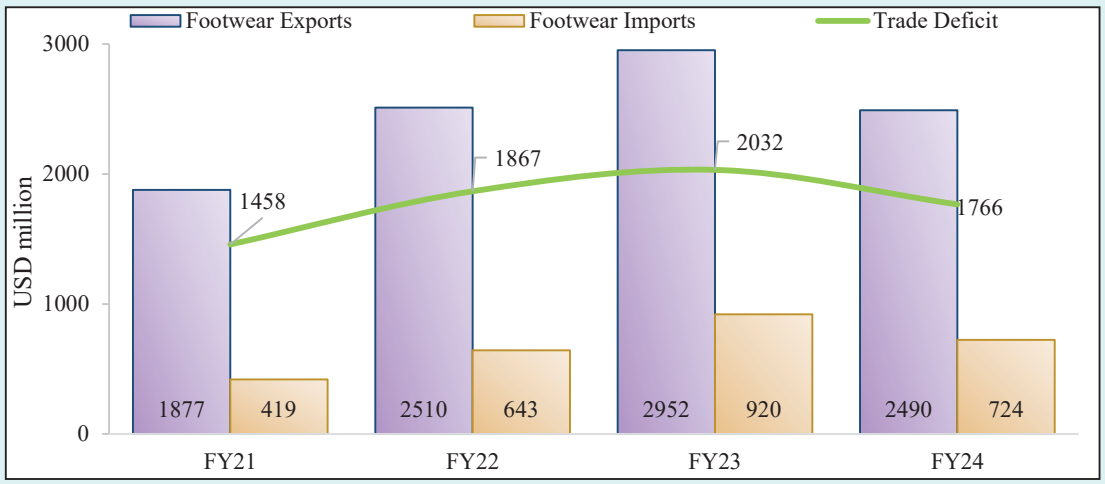

स्रोत: निर्यात आयात डाटा बैंक (वार्षिक), व्यापार सांख्यिकी, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

सरकार ने फुटवियर निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए हैं। इनमें भारतीय मानक ब्यूरो के परामर्श के बाद फुटवियर और चमड़ा क्षेत्र के लिए तीन गुणवत्ता नियंत्रण आदेश जारी करना, कम बार किए जाने वाले अधिकांश परीक्षणों की आउटसोर्सिंग की अनुमति देकर परीक्षण सुविधाओं के निर्माण में छूट, पूरे भारत में फुटवियर के फुटवियर निर्माताओं के बीच जागरूकता पैदा करना शामिल है। सरकार ने 31 मार्च 2026 तक श्भारतीय फुटवियर और चमड़ा विकास कार्यक्रमश को जारी रखने की मंजूरी दी है। चमड़ा और फुटवियर क्षेत्र विदेश व्यापार नीति 2023 के तहत निर्यात संवर्धन योजनाओं और मार्केट एक्सेस इनिशिएटिव स्कीम, ट्रेड इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर एक्सपोर्ट स्कीम,

23 जीटीआरआई की रिपोर्ट, 'भारत की फुटवियर क्रांति: 90 बिलियन डॉलर के भविष्य की ओर अग्रसर', https://tinyurl.com/yvbzadwr.

24 HS Code-6401, 6402, 6403, 6404, 6405 and 6406

इंटरेस्ट इक्वलाइजेशन स्कीम आदि के तहत प्रदान किए गए अन्य लाभों का लाभ उठा सकता है।[25] भारतीय फुटवियर बाजार जो 26 बिलियन अमरीकी डालर का है, वर्ष 2030 तक 90 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंचने की उम्मीद है। यह वृद्धि गैर-चमड़े के जूते की मांग में वृद्धि और चमड़े के जूते के उत्पादन में लघु पैमाने के कुटीर उद्योगों से बड़े कॉरपोरेट्स में संभावित बदलाव से प्रेरित होगी।[26] बदलते बाजार की गतिशीलता, जो मुख्य रूप से खरीदारी की आदतों में बदलाव, तेजी से शहरीकरण, अधिक ब्रांड जागरूकता, खुदरा परिसरों/मॉल के विकास और बढ़ते विवेकाधीन बजट से बढ़ा है इस प्रवृत्ति में योगदान करते हैं।

स्मार्टफोन निर्यात: भारत का घरेलू उत्पादन और स्मार्टफोन का निर्यात लगातार बढ़ रहा है, विशेष रूप से वर्ष 2020 में प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) योजना के लॉन्च के बाद से महत्वपूर्ण बदलाव हासिल किए गए हैं। वित्त वर्ष-20 ने पहली बार घरेलू उत्पादन घरेलू मांग को पार कर लिया, और स्मार्टफोन भारत की शीर्ष निर्यात श्रेणियों में से एक बन गया। निर्यात अब इस क्षेत्र के विकास के लिए प्राथमिक प्रोत्साहन प्रदान करता है। वित्त वर्ष-24 (वर्षानुवर्ष वार-आधार पर) में निर्यात में 42.2 प्रतिशत की वृद्धि ने स्मार्टफोन को छह अंकों की एच एस उत्पाद श्रेणियों में भारत की शीर्ष पांच निर्यात वस्तुओं के रैंक में स्थापित करने में सक्षम बनाया।[27]

चार्ट IV.10: बढ़ता घरेलू उत्पादन, घरेलू मांग और स्मार्टफोन का निर्यात

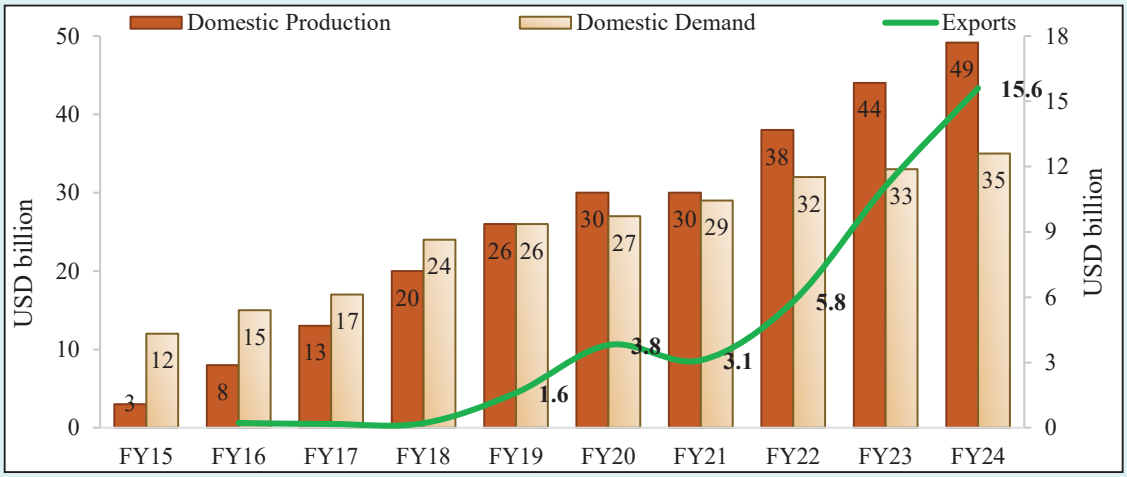

स्रोत: आईसीईए, निर्यात आयात डाटा बैंक (वार्षिक), व्यापार सांख्यिकी, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

भारत ने वर्ष 2014 में 23वें सबसे बड़े स्मार्टफोन निर्यातक से वर्ष 2022 में दुनिया का छठा सबसे बड़ा स्मार्टफोन निर्यातक भी बन गया।[28] इस उच्च निर्यात वृद्धि के कारण निर्यात और उत्पादन के अनुपात में वृद्धि हुई है, जिसमें वित्त वर्ष-24 में भारत में स्मार्टफोन का निर्यात कुल उत्पादन के 31 प्रतिशत से अधिक रहा है।

4.16 भारत अधिक निर्यात गंतव्यों को जोड़ रहा है जो की निर्यात के क्षेत्रीय विविधीकरण का संकेत है। डीजीसीआईएस डेटा के आधार पर गणना से पता चलता है कि भारत के पण्य निर्यात में शीर्ष 10 देशों की हिस्सेदारी में गिरावट की प्रवृत्ति दर्ज की गई है, जो वित्त वर्ष 2000 में 61.9 प्रतिशत से गिरकर वित्त वर्ष 24 में 50.5 प्रतिशत हो गई है। इसके अलावा, शीर्ष 10 देशों के लिए क्षेत्रीय हर्फिंडाहल इंडेक्स (देशों में निर्यात की एकाग्रता का अनुमान)[29] वित्त वर्ष- 2000 में 0.071 से घटकर वित्त वर्ष-24 में 0.046 हो गया।

25 डीपीआईआईटी राज्यसभा अतारांकित प्रश्न 1818 का उत्तर 4 अगस्त 2023 को दिया गया, https://tinyurl.com/yumj98fb

26 ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इंस्टीट्यूट (GTRI) की 7 जनवरी 2024 की रिपोर्ट-भारत की फुटवियर क्रांति: 90 बिलियन अमेरिकी डॉलर के भविष्य की ओर अग्रसर, https://tinyurl.com/bd7rdub5

27 (एचएस 6 कोड-851713)-स्मार्टफोन

28 आईटीसी ट्रेड मैप पर उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार

29 क्षेत्रीय/क्षेत्रीय हर्फिंडाल सूचकांक (आरएचआई) =∑Si2, जहां Si क्षेत्रीय विविधीकरण के मामले में भारत की निर्यात टोकरी में देश/क्षेत्र शेयर के हिस्से को संदर्भित करता है

चार्ट IV.11: भारत के निर्यात लक्ष्य

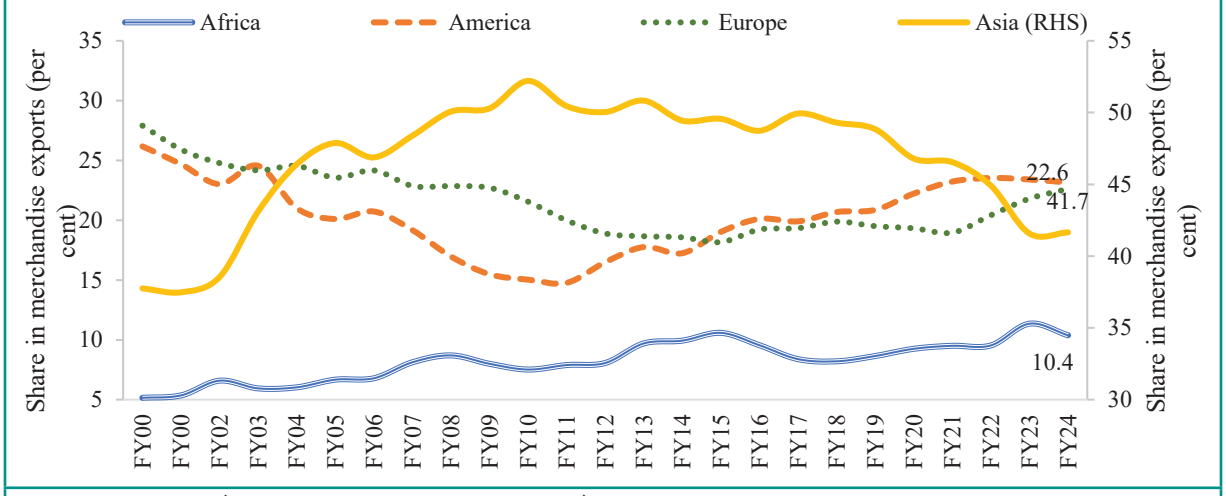

स्रोत: निर्यात आयात डेटा बैंक (वार्षिक), व्यापार सांख्यिकी, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

4.17 वित्त वर्ष 2000 के बाद, एशियाई, अफ्रीकी और मध्य पूर्वी राष्ट्र, जैसे संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, हांगकांग और चीन, यूके, जर्मनी, बेल्जियम आदि जैसे पारंपरिक निर्यात भागीदारों की जगह निर्यात गंतव्यों के रूप में उभरे हैं। विकासशील क्षेत्रों अर्थात् एशिया और अफ्रीका का निर्यात में कुल हिस्सा वित्त वर्ष-2000 में लगभग 42.9 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष-24 में 52 प्रतिशत हो गया। वित्त वर्ष-24 में, यूएई, सिंगापुर, चीन, रूस और ऑस्ट्रेलिया भारत के प्रमुख निर्यात भागीदार के रूप में उभरे हैं।

क्षेत्रीय रुझान

4.18 पीओएल और गैर-पीओएल उत्पादों में पण्य निर्यात के विभाजन से पता चलता है कि वित्त वर्ष-24 में दोनों श्रेणियों में निर्यात में गिरावट आई है। पीओएल निर्यातों में गिरावट का मुख्य कारण वैश्विक पेट्रोलियम उत्पाद मूल्यों में गिरावट को माना जा सकता है। भले ही पीओएल निर्यात की मात्रा वित्त वर्ष-23 में 99 मिलियन टन से बढ़कर वित्त वर्ष-24 में 108 मिलियन टन हो गई, लेकिन निर्यात का मूल्य इसी अवधि के दौरान 97.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 13.5 प्रतिशत घटकर 84.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। हालांकि, पिछले छह वर्षों में, पीओएल निर्यात वित्त वर्ष-19 में 46.6 बिलियन अमरीकी डालर से 80.7 प्रतिशत बढ़कर वित्त वर्ष-24 में 84.2 बिलियन अमरीकी डालर हो गया, इसके साथ ही वैश्विक पीओएल निर्यात (एचएस 2710 से 2713) निर्यात में हिस्सेदारी वर्ष 2018 में 4.3 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022 में 4.8 प्रतिशत हो गई।[30]

4.19 गैर-POL उत्पादों के तहत इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक सामान और ड्रग्स और फार्मास्यूटिकल्स का निर्यात वित्त वर्ष-24 में वर्षानुवर्ष वार के आधार पर बढ़ गया। इसके विपरीत, कृषि और संबद्ध उत्पादों, रसायन, प्लास्टिक और वस्त्रों के निर्यात में गिरावट देखी गई है। पिछले छह वर्षों में, इन श्रेणियों में निर्यात की संरचना बदल गई है। वित्त वर्ष-2019 में इंजीनियरिंग वस्तुओं का निर्यात सबसे अधिक रहा और कुल निर्यात में इसका योगदान 25.3 प्रतिशत रहा। यह प्रवृत्ति बनी रही, वित्त वर्ष-24 में इंजीनियरिंग वस्तुओं का निर्यात 109.3 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंच गया, जिसमें हिस्सेदारी 25 प्रतिशत पर समान बनी रही। कृषि और संबद्ध उत्पादों ने भी स्थिर हिस्सेदारी बनाए रखी। वित्त वर्ष-19 में 36.6 बिलियन अमरीकी डालर से, उनका निर्यात वित्त वर्ष-23 में 52.7 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया, वित्त वर्ष-24 में थोड़ा घटकर 48.3 बिलियन अमरीकी डालर हो गया, और इसका पण्य निर्यात में लगभग 11 प्रतिशत हिस्सेदारी थी। रासायनिक और प्लास्टिक निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो वित्त वर्ष-19 में 31 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष-24 में 37.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। मूल्य में इस वृद्धि के बावजूद, उनकी हिस्सेदारी वित्त वर्ष-19 में 9.4 प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष-24 में 8.6 प्रतिशत हो गई। कपड़ा क्षेत्र में प्रमुखता में सापेक्ष गिरावट देखी

30 आईटीसी व्यापार मानचित्र पर आधारित

गई। वित्त वर्ष-19 में उनके निर्यात में 37.5 बिलियन अमरीकी डालर से वित्त वर्ष-24 में 34.8 बिलियन अमरीकी डालर की गिरावट के साथ, कुल निर्यात में उनका हिस्सा भी इसी अवधि के दौरान 11.4 प्रतिशत से 8 प्रतिशत तक काफी गिर गया। यह कटौती, भारत के निर्यात ढांचे के भीतर बदलती प्राथमिकताओं और उभरते क्षेत्रों को प्रतिबिंबित करने के अलावा, इस क्षेत्र में अंतर्निहित चुनौतियों को भी प्रतिबिंबित करती है जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है।

4.20 विश्व इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात में भारत की हिस्सेदारी (एचएस अध्याय 84, 85 और 90 को शामिल करके) वर्ष 2018 में 0.63 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022 में 0.88 प्रतिशत हो गया है।[31] इस प्रकार, भारत वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात में वर्ष 2018 में 28वें से बढ़कर वर्ष 2022 में 24वें स्थान पर पहुंच गया। भारत के पण्य निर्यात में इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं की हिस्सेदारी वित्त वर्ष-19 में 2.7 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष-24 में 6.7 प्रतिशत हो गई।

4.21 भारत ने ड्रग्स और फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्रों में मजबूत पकड़ बनाए रखी। वित्त वर्ष 2019 में 5.8 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 6.4 प्रतिशत हो गया, निर्यात वित्त वर्ष 2019 में 19.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 27.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।

पण्य आयात

4.22 भारत की अर्थव्यवस्था की अपेक्षाकृत मजबूत वृद्धि के कारण उच्च घरेलू मांग के बावजूद, वित्त वर्ष-24 में पण्य वस्तुओं का आयात 5.7 प्रतिशत तक संकुचित हो गया, जो वित्त वर्ष-23 में 716 बिलियन अमेरिकी डॉलर से घटकर वित्त वर्ष-24 में 675.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। पण्य आयात में नरमी मुख्य रूप से पेट्रोलियम, कच्चे तेल और उत्पादों, उर्वरकों, मोती, कीमती और अर्ध-कीमती पत्थरों, कार्बनिक और अकार्बनिक रसायनों और कपड़ा धागे के कपड़े से प्रेरित थी। घरेलू मांग में वृद्धि के कारण, अप्रैल-मई 2024 के दौरान पण्य आयात 106.5 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर अप्रैल-मई 2024 के दौरान 116 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया।

चार्ट IV.12: विभिन्न वर्गीकरणों में व्यापारिक वस्तुओं के आयात की संरचना

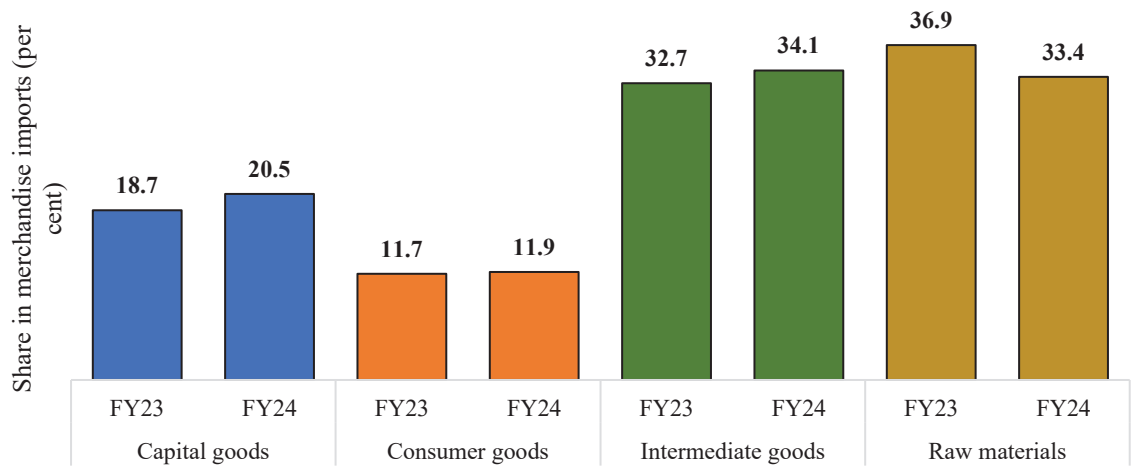

Source: DGCI&S[32]

4.23 वित्त वर्ष-23 और वित्त वर्ष-24 के बीच आयात की संरचना में कई बदलाव देखे जा सकते हैं। पूंजीगत वस्तुओं के आयात में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई जो की प्रशसनीय है क्योंकि यह उत्पादन प्रक्रियाओं में उपयोग की जाने वाली मशीनरी, उपकरण और अन्य टिकाऊ वस्तुओं की बढ़ती मांग को इंगित करता है, जो औद्योगिक बुनियादी ढांचे में संभावित निवेश या तकनीकी उन्नयन का सुझाव देता है। पण्य वस्तु आयात में उपभोक्ता वस्तुओं की हिस्सेदारी में मामूली वृद्धि प्रत्यक्ष उपभोग के लिए तैयार उत्पादों के आयात में स्थिर लेकिन सीमित वृद्धि को दर्शाती है। पण्य आयात में मध्यवर्ती

31 आईटीसी व्यापार मानचित्र पर आधारित

32 उपरोक्त टिप्पणी 17

वस्तुओं का हिस्सा भी वित्त वर्ष-24 में थोड़ा बढ़ गया, जो आगे की विनिर्माण प्रक्रियाओं में उपयोग किए जाने वाले अर्ध-तैयार उत्पादों, घटकों या सामग्रियों की निरंतर आवश्यकता को दर्शाता है।

निर्यात में चमकते सितारे के रूप में सेवाएं

4.24 अमेरिकी डॉलर टर्म्स में भारत का सेवा निर्यात पिछले 30 वर्षों (वर्ष 1993 और वर्ष 2022 के बीच) में 14 प्रतिशत से अधिक की मजबूत सीएजीआर से बढ़ा, जो भारत के पण्य निर्यात वृद्धि (10.7 प्रतिशत) और विश्व सेवाओं के निर्यात में वृद्धि (6.8 प्रतिशत) से काफी अधिक है। तदनुसार, विश्व सेवा निर्यात में भारत के सेवा निर्यात की हिस्सेदारी वर्ष 1993 में 0.5 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022 में 4.3 प्रतिशत हो गई है। भारत अब वैश्विक स्तर पर सातवां सबसे बड़ा सेवा निर्यातक देश है, जो वर्ष 2001 में अपने 24 वें स्थान से अभूतपूर्व वृद्धि की है। भारत दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाओं के निर्यात में दुनिया में 2 वें स्थान पर, व्यक्तिगत, सांस्कृतिक और मनोरंजक सेवाओं के निर्यात में 6 वें, अन्य व्यावसायिक सेवाओं के निर्यात में 8 वें, परिवहन सेवाओं के निर्यात में 10 वें और यात्रा सेवाओं के निर्यात में 14 वें स्थान पर है। जैसा कि आरबीआई ने उल्लेख किया है, सेवा निर्यात में स्वस्थ और स्थिर वृद्धि ने देश के व्यापारिक व्यापार घाटे के एक महत्वपूर्ण हिस्से को ऑफसेट करके भारत की बीओपी स्थिति को मजबूत किया है।[33]

चार्ट IV.13: पिछले दस वर्षों में भारत के सेवा व्यापार का उल्लेखनीय प्रदर्शन

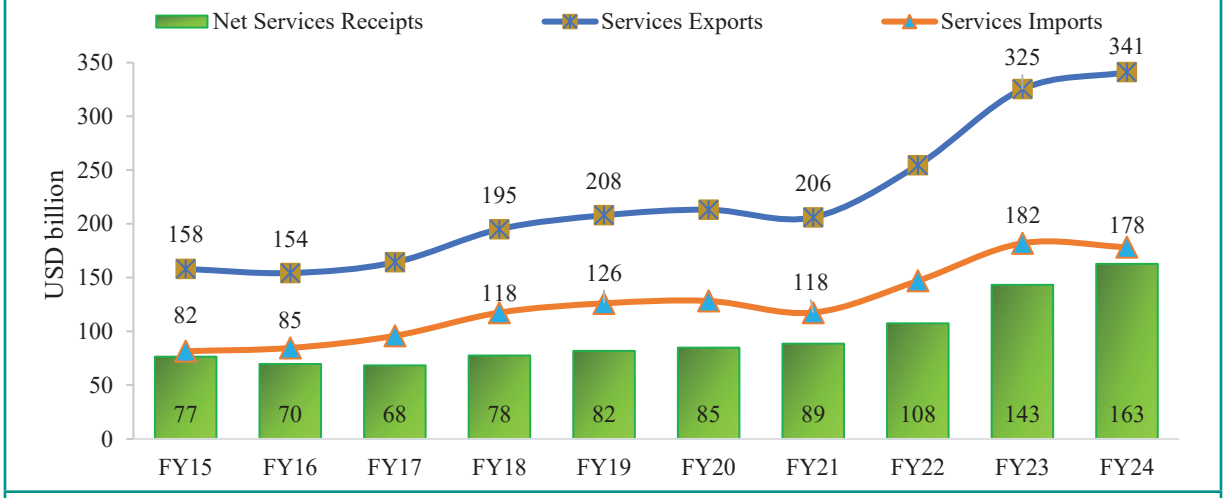

स्रोत: सेवाओं में भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, आरबीआई

4.25 वैश्विक सॉफ्टवेयर उद्योग की मूल्य श्रृंखलाओं में भारत के गहरे एकीकरण ने इसकी सेवा निर्यात बास्केट की संरचना में बदलाव किया है। जबकि वर्ष 2000 के दशक की शुरुआत बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (बीपीओ) की अवधि थी, जो लागत-कटौती बैक-एंड आईटी सेवाएं प्रदान करती थी, भारत अब ऐसी सेवाओं से परे देखता है। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत वर्ष 2010 में कानून, आईटी और प्रबंधन में बैक-एंड सेवाएं प्रदान करने से वर्ष 2020 तक इन क्षेत्रों में अपस्ट्रीम और उच्च-मूल्य वर्धित सेवाएं प्रदान करने के लिए चला गया।[34] रूस-यूक्रेन संघर्ष और वैश्विक मुद्रास्फीति के दबाव वाले वेतन ने वैश्विक खिलाड़ियों को अपने लागत मॉडल को संतुलित करने के लिए अपने बैक-ऑफिस संचालन स्थापित करने के लिए भारत की ओर देखने के लिए प्रोत्साहित किया। इसने वैश्विक क्षमता केंद्रों (जीसीसी) के अचानक प्रसार को जन्म दिया। जीसीसी में वृद्धि सेवा बीओपी में परिलक्षित होती है, जिसमें आईटी सेवाओं (46.2 प्रतिशत) के बाद अक्टूबर-दिसंबर 2023 (25.4 प्रतिशत) में सेवा निर्यात में 'अन्य व्यावसायिक सेवाएँ' दूसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता है। जीसीसी में वृद्धि सेवा बीओपी में परिलक्षित होती है, आईटी सेवाओं (48 प्रतिशत) के बाद वित्त वर्ष 2014 में सेवाओं के निर्यात में 'अन्य व्यावसायिक सेवाएं' (26 प्रतिशत) दूसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता है। समग्र सेवा निर्यात में अन्य व्यावसायिक सेवाओं के बढ़ते योगदान को वित्त वर्ष 2020 और वित्त वर्ष 24

33 भारत के सेवा निर्यात को क्या प्रेरित करता है?' आरबीआई बुलेटिन दिनांक 22 अप्रैल 2024, https://tinyurl.com/4vjerjex
34 एशियाई इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस 2021, 'वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं को बनाए रखना', https://inyurl.com/yfzj6tkm

के बीच 18 प्रतिशत की सीएजीआर प्राप्त करने से दर्शाया गया है। समग्र सेवा निर्यात में सॉफ्टवेयर निर्यात की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2011 में 50 प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष 2014 में 48 प्रतिशत हो गई।[35] बॉक्स IV.2 में जीसीसी के विकास पर चर्चा की गई है।

तालिका IV.2: सेवा व्यापार का लचीला प्रदर्शन (मूल्य बिलियन अमेरिकी डॉलर में)

क्षेत्रों	वित्त वर्ष-23		वित्त वर्ष-24 (अ)	
	Exports	Imports	Exports	Imports
कुल सेवाएं	325.3	182.0	341.1	178.3
अन्य के स्वामित्व वाले भौतिक इनपुट पर विनिर्माण सेवाएं	1.5	0.2	1.4	0.1
रखरखाव और मरम्मत सेवाएं एन.आई.ई..	0.2	1.9	0.2	1.5
परिवहन	36.1	40.6	29.2	29.3
यात्रा	27.0	28.4	33.7	33.7
निर्माण	3.8	2.8	4.6	2.8
बीमा और पेंशन सेवाएं	3.3	2.3	3.3	2.9
वित्तीय सेवाएं	7.8	5.7	8.1	4.6
बौद्धिक संपदा के उपयोग के लिए प्रभार अर्थात	1.3	10.6	1.6	15.0
दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं	152.3	19.8	163.6	20.9
अन्य व्यावसायिक सेवाएं	80.4	59.7	88.6	59.3
व्यक्तिगत, सांस्कृतिक और मनोरंजक सेवाएं	3.9	5.5	4.4	6.3
सरकारी वस्तुएं और सेवाएं एन.आई.के.	0.7	1.0	0.6	1.1
अन्य एन.आई.ई.	7.1	3.4	1.8	0.8

स्रोत: सांख्यिकी, भारत का समग्र भुगतान संतुलन-अमेरिकी डॉलर, आरबीआई
नोट: पी का मतलब अनंतिम है

बॉक्स IV.2: भारत में वैश्विक क्षमता केंद्रों का सफर

जीसीसी की उत्पत्ति: पिछले कुछ वर्षों में, 150 से अधिक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में अपने जीसीसी स्थापित किए हैं।[36] वर्ष 1985 में बेंगलुरु में अपना कार्यालय स्थापित करके टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स द्वारा ऑफशोरिंग की अथम शुरुआत के साथ शुरू होकर, भारत जीसीसी विकास के उपरिकेंद्र में होने का एक लंबा सफर तय कर चुका है।[37] 1990 के दशक में, अन्य कंपनियों ने अनुकरण किया, और कई एयरलाइंस और प्रौद्योगिकी कंपनियों ने भारत में अपना परिचालन शुरू किया। इन्हें पहले 'कैप्टिव सेंटर' कहा जाता था और अब इन्हें जीआईसी (ग्लोबल इन-हाउस सेंटर) या जीसीसी के रूप में संबोधित किया जाने लगा है। वर्ष 2012 में, लगभग 760 जीसीसी भारत से बाहर काम कर रहे थे। वर्ष 2016 में, यह संख्या 1000 से अधिक हो गई और मार्च 2023 तक, भारत में 1,600 से अधिक जी.सी.सी. थें।

35 आरबीआई के तिमाही भुगतान संतुलन (बीओपी) आंकड़ों पर आधारित
36 जून 2023: नैसकॉम और जिनोव: भारत वैश्वीकरण की रूपरेखा को पुनर्परिभाषित कर रहा है। https://tinyurl.com/3za5cj3j, https://tinyurl.com/mvcx8tdm
37 https://tinyurl.com/mvcx8tdm

चार्ट IV.14: भारत में जीसीसी की उल्लेखनीय वृद्धि

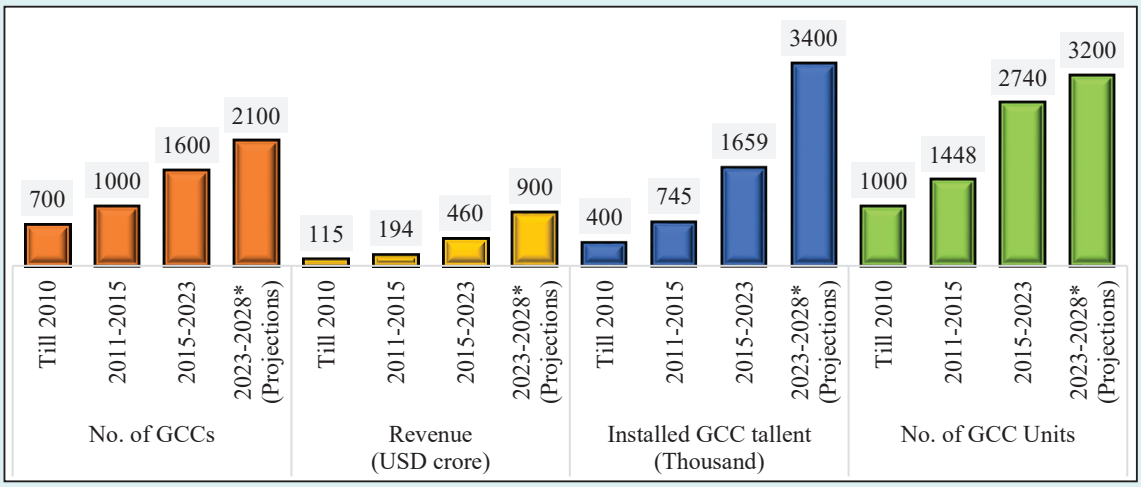

स्रोत: पीडब्ल्यूसी रिपोर्ट 'भारत में वैश्विक क्षमता केंद्र बाजार को बढ़ाने के लिए छह अनिवार्यताएं'

विभिन्न एजेंसियों ने अनुमान लगाया है कि आने वाले वर्षों में जीसीसी की संख्या बढ़ेगी, जिससे नौकरियां भी उत्पन्न होंगी। पीडब्ल्यूसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2028 तक, देश में 2100 जीसीसी होने की ओर अग्रसर है, जिसमें केंद्रों का बाजार आकार 90 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंच जाएगा।[38] विजमैटिक के एक अध्ययन के अनुसार, जीसीसी वर्तमान में 32 लाख लोग, मुख्य रूप से इंजीनियरों और वैज्ञानिकों को रोजगार देते हैं।[39] उन्होंने वर्ष 2023 में 46 बिलियन अमेरिकी डॉलर का संयुक्त राजस्व उत्पन्न किया और वर्ष 2030 तक 121 बिलियन अमेरिकी डॉलर का कुल राजस्व उत्पन्न करने का अनुमान है, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 3.5 प्रतिशत है। इसमें से 102 बिलियन अमरीकी डालर निर्यात आय का प्रतिनिधित्व करेगा।

जीसीसी की भूमिका: जीसीसी संचालन, उत्पाद विकास और नवाचार में बीस्पोक सेवाएं प्रदान करते हैं। आज, जीसीसी सभी आईटी, बीपीओ, इंजीनियरिंग और सॉफ्टवेयर उत्पाद विकास सेवा लाइनों में काम करते हैं, जटिल कार्य प्रदान करते हैं जिसके लिए व्यावसायिक संदर्भ और अनिवार्यताओं की महत्वपूर्ण समझ की आवश्यकता होती है। उन्होंने एयरोस्पेस, मोटर वाहन, तेल और गैस, स्वास्थ्य सेवा और फार्मा में बढ़ती एकाग्रता के साथ बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं, सॉफ्टवेयर, दूरसंचार और अर्धचालक जैसे प्रमुख उद्योग कार्यक्षेत्रों में एक छाप छोड़ी है।

जीसीसी के लिये सरकारी सहायता: 'डिजिटल इंडिया' जैसी विभिन्न पहलों के तहत रणनीतिक हस्तक्षेप और व्यापार करने में आसानी के लिए नीतियों ने जीसीसी के लिए ऑनलाइन अनुमोदन और लाइसेंसिंग प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया है। जीसीसी की स्थापना के लिए विदेशी कंपनियों के लिए सुव्यवस्थित कर नियम और अनुपालन प्रक्रियाएं, लचीले श्रम कानून और तेजी से अनुमोदन के लिए एकल-खिड़की निकासी प्रणाली जैसी पहलों ने व्यापार प्रक्रिया को आसान बना दिया है। बेहतर डिजिटल बुनियादी ढांचा (हाई-स्पीड इंटरनेट, डेटा सेंटर) जीसीसी संचालन के लिए एक वरदान रहा है।

विभिन्न राज्य उच्च क्षमता वाले उद्योगों की पहचान करके जीसीसी पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण अपना रहे हैं। उदाहरण के लिए, कर्नाटक, तेलंगाना और तमिलनाडु की राज्य सरकारों ने राज्यों में ऑटो और इलेक्ट्रिक वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा और जीवन विज्ञान जैसे क्षेत्रों में जीसीसी परिदृश्य का विस्तार करने के लिए अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) नीतियां शुरू की हैं। इन नीतियों का उद्देश्य मौजूदा उद्योग उपस्थिति और शैक्षणिक और अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठाकर राज्यों में नवाचार हब विकसित करना है। उदाहरण के लिए, तेलंगाना भारत के फार्मा उत्पादन में 30 प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है और 1,000 से

38 पीडब्ल्यूसी की रिपोर्ट 'भारत में वैश्विक क्षमता केंद्र बाजार को बढ़ाने के लिए छह अनिवार्यताएं', https://tinyurl.com/4ehuhu6m tw

39 द इकोनॉमिस्ट (23 मई 2024), 'वैश्विक कंपनियां भारत के श्रमिकों का पहले की तरह उपयोग कर रही हैं', https://tinyurl.com/37psdw3s

अधिक जीवन विज्ञान कंपनियों और 200 से अधिक एफडीए-अनुमोदित साइटों का घर है, जो नवीन और जेनेरिक दवाओं का उत्पादन करते हैं।[40] कर्नाटक डिजिटल इकोनॉमी मिशन (केडीईएम)[41] का उद्देश्य वर्ष 2026 तक भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था में राज्य के योगदान को बढ़ाकर 300 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ाना है, जो उद्योग के खिलाड़ियों के साथ साझेदारी को गहरा करके और उच्च योगदान प्राप्त करने के लिए राज्य की राजधानी से परे तकनीकी समूहों को विकसित करके तकनीकी क्षेत्रों और स्टार्ट-अप के समग्र विकास को सक्षम करता है। नतीजतन, प्रमुख प्रौद्योगिकी कंपनियों ने मैसूरु, मैंगलोर और हुबली समूहों में परिचालन शुरू कर दिया है, जिससे 5,000 से अधिक लोगों के लिए रोजगार उत्पन्न हुआ है।

वैश्विक प्रौद्योगिकी आवश्यकताओं का समर्थन करने के लिए स्टार्टअप्स के साथ साझेदारी: नैसकॉम की एक रिपोर्ट के अनुसार, जीसीसी भारत के महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग अनुसंधान और विकास सेवा प्रदाता समुदाय है, इसके परिपक्व स्टार्ट-अप और इसके सहकर्मी-जीसीसी पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने भारतीय स्टार्ट-अप के साथ सहयोग चलाने के लिए 15 से अधिक इनक्यूबेटर, 40 से अधिक त्वरक और कई भागीदार कार्यक्रम स्थापित किए हैं।[42] हेल्थकेयर और फार्मा जीसीसी ने नई तकनीक तक पहुंचने के लिए स्टार्ट-अप और शिक्षाविदों के साथ साझेदारी में वृद्धि देखी है। जीसीसी ने सहयोग के विभिन्न रूपों की खोज की है, जैसे नवाचार प्रयोगशालाएँ, हैकथॉन और स्टार्ट-अप इनक्यूबेटर।

टियर-II शहरों में विस्तार: जीसीसी अपने परिचालन का विस्तार करने के लिये टियर-II शहरों का तेजी से मूल्यांकन कर रहे हैं, जो महामारी के दौरान देखे गए रिवर्स माइग्रेशन और ऐसे अपेक्षाकृत कम-प्रवेश वाले बाजारों द्वारा पेश किए गए लागत मध्यस्थता से प्रभावित हैं। इन शहरों में अवसंरचना के विकास पर हाल ही में दिए गए जोर ने भी उनकी अपील को जोड़ा है। सीबीआरई रिसर्च रिपोर्ट[43] के अनुसार, वर्ष 2023 की पहली छमाही के दौरान, लगभग 22 प्रतिशत जीसीसी केंद्र टियर- II शहरों में स्थापित किए गए थे, जो मौजूदा और नई प्रतिभाओं की उपलब्धता से प्रेरित थे।

भारत की बढ़ती वैश्विक मांग: अमेरिका और यूरोप स्थित बहुराष्ट्रीय कंपनियां लंबे समय से अपने क्षमता केंद्र स्थापित कर रही हैं, एशिया प्रशांत क्षेत्र, विशेष रूप से जापान और दक्षिण कोरिया के अंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने पिछले कुछ वर्षों में भारत में अपने आरएंडडी/नवाचार केंद्र स्थापित करना शुरू कर दिया है। हालांकि जीसीसी उपस्थिति वाले अन्य देशों की हाल ही में बढ़ोतरी हुई हैं, भारत अपनी पर्याप्त प्रतिभा बंदोबस्ती और लागत लाभ के कारण अत्यधिक प्रतिस्पर्धी वैश्विक वातावरण में जीसीसी पसंदीदा बना हुआ है।

भविष्य का मार्ग: आज, जीसीसी अपने मूल संगठनों की सफलता में योगदान करते हैं और भारत के आर्थिक विकास को प्रेरित करते हैं। वे देश के सकल घरेलू उत्पाद का 1 प्रतिशत से अधिक हिस्सा हैं, और हिस्सेदारी आगे बढ़ने की उम्मीद है।[44] चूंकि अधिक वैश्विक कंपनी अपने जीसीसी परिचालन स्थापित करने के लिए भारत पर नजर रखते हैं, इसलिए सरकार की उनके प्रवेश को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत में जीसीसी के भविष्य में साझेदारी के लिए नए व्यापार मॉडल की पहचान करने, प्रवेश प्रक्रिया को सरल बनाने और दूसरों के बीच विश्वास और डेटा सुरक्षा पर जोर देने आदि के लिए सरकारी समर्थन, जीसीसी के स्थापना को और भी प्रोत्साहित करेगा।

भारत की बढ़ती वैश्विक मूल्य शृंखला (जीवीसी) भागीदारी

4.26 जीवीसी अंतरराष्ट्रीय उत्पादन साझाकरण को संदर्भित करता है, जहां संचालन राष्ट्रीय सीमाओं के पार फैले हुए हैं (सटीक स्थान तक सीमित होने के बजाय) और एक जटिल उत्पाद का उत्पादन करते हैं। जिसे 'हाइपरग्लोबलाइजेशन'

40 तेलंगाना जीवन विज्ञान: विजन 2023, http://tinyurl.com/4ws4a3ub

41 कर्नाटका डिजिटल अर्थव्यवस्था मिशन, https://karnatakadigital.in/about-us/

42 नैसकॉम की 4 अक्टूबर 2021 की रिपोर्ट-भारत में विकसित हो रहा जीसीसी पारिस्थितिकी तंत्र, https://tinyurl.com/4y3zstj5

43 नवंबर 2023 की सीबीआरई रिसर्च रिपोर्ट-भारत के वैश्विक क्षमता केंद्र: एक नए युग की शुरुआत, https://tinyurl.com/4bmadaxy

44 एससीएमपी प्लस ब्लॉग 'सेवा क्षेत्र में तेजी के कारण भारत का 'विश्व के बैक ऑफिस' के रूप में उदय, सुर्खियों में', https://tinyurl.com/3b4wex69

की अवधि कहा जाता है, 2000 के दशक की शुरुआत में दुनिया भर में तेजी से जीवीसी विस्तार देखा गया। इससे व्यापार में घातीय लाभ, आपूर्ति श्रृंखला लागत में कमी और राष्ट्रों में व्यापार में गहरे अंतर्संबंध पैदा हुए। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफसी) के बाद 'हाइपरग्लोबलाइजेशन'[45] से 'स्लोबैलाइजेशन'[46] में एक नाटकीय बदलाव आया। GVC के आसपास के जोखिमों और अनिश्चितताओं के बारे में चिंताओं को चीन-अमेरिका व्यापार युद्ध, COVID.19 महामारी और रूस-यूक्रेन संघर्ष जैसे झटकों के साथ और बढ़ा दिया गया। हाल ही में, इस प्रवृत्ति में उलटफेर दिखना शुरू हो गया है। विश्व व्यापार संगठन की जीवीसी विकास रिपोर्ट 2023[47] जीवीसी में सुधार को प्रदर्शित करती है, जो विदेशी निर्यात इनपुट की हिस्सेदारी में वृद्धि और दुनिया भर में अर्थव्यवस्थाओं की बढ़ी हुई भागीदारी दरों से रेखांकित होती है।

4.27 वैश्विक प्रवृत्ति के अनुरूप, भारत की जीवीसी भागीदारी जीएफसी से पहले 1990 और 2000 के दशक में लगातार बढ़ी, जिसके बाद इसमें गिरावट शुरू हो गई। उदाहरण के लिए, भारत के निर्यात में विदेशी मूल्य वर्धित सामग्री 1995 में 10 प्रतिशत से बढ़कर 2009 में 22 प्रतिशत हो गई (ब्रिक्स देशों में चीन के बाद दूसरी सबसे अधिक),[48] जो उत्पादन के बढ़ते विखंडन और जीवीसी में एकीकरण को दर्शाती है। वैश्विक वित्तीय संकट के बाद के वर्षों में देखी गई खामोशी के बाद, भारत की जीवीसी भागीदारी पीएलआई, डिस्ट्रिक्ट्स ऐज एक्सपोर्ट्स हब (डीईएच) पहल योजनाओं के माध्यम से प्रदान किए गए प्रोत्साहनों की बदौलत फिर से बढ़ने लगी है। बॉक्स IV.3 में भारत की जीवीसी भागीदारी की प्रवृत्ति और क्षेत्रीय संरचना में बदलाव पर विस्तार से चर्चा की गई है। बॉक्स IV.4 में डीईएच की सफलता के वृत्तांतों पर प्रकाश डाला गया है।

4.28 भारत की बढ़ी हुई वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला भागीदारी का प्रमाण भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स, परिधान और खिलौने, ऑटोमोबाइल और घटक, पूंजीगत सामान और अर्धचालक विनिर्माण में विदेशी फर्मों द्वारा किए गए बढ़ते निवेश में परिलक्षित होता है। भारत का बड़ा घरेलू उपभोक्ता बाजार यहां व्यवसाय स्थापित करने वाली फर्मों के लिए एक अतिरिक्त आकर्षण है। उदाहरण के लिए, Apple ने FY24 में अपने वैश्विक पचीवदमे का 14 प्रतिशत भारत में असेंबल किया। फॉक्सकॉन ने घटकों के लिए नए विनिर्माण संयंत्र स्थापित करने के लिए कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों में निवेश किया।

4.29 आपूर्ति श्रृंखलाओं में बदलाव का प्राथमिक लाभार्थी एशिया है। उत्पादन सुविधाओं की स्थापना या विस्तार के संबंध में भारत में फर्मों (130 में से 28 फर्म) की ओर से सबसे अधिक रुचि देखी गई है, जिसके बाद वियतनाम, मैक्सिको, थाईलैंड, मलेशिया और इंडोनेशिया का स्थान है।[49]

बॉक्स IV.3: भारत की जीवीसी भागीदारी और क्षेत्रीय संरचना में परिवर्तन की प्रवृत्ति

विश्व व्यापार संगठन के विश्व एकीकृत व्यापार समाधान (डब्लूआईटीएस) डेटाबेस से पता चलता है कि भारत का जीवीसी से संबंधित व्यापार वर्ष 2010 में 62.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर से लगभग चार गुना बढ़कर वर्ष 2022 में 233.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।[50] भारत की जीवीसी भागीदारी को चलाने वाले आवश्यक उत्पादों में कोयला और पेट्रोलियम, व्यापार सेवाएं, रसायन और परिवहन उपकरण शामिल हैं। भारत का जीवीसी व्यापार वर्ष 2018 और वर्ष 2022 के बीच 14.6 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ा। यह वर्ष 2014 और वर्ष 2018 के बीच 13.3 प्रतिशत और वर्ष 2010 और वर्ष 2014 के बीच 6.9 प्रतिशत के सीएजीआर से अधिक है।

45 सुब्रमण्यन, ए., एट अल. (2023)। व्यापार हाइपरग्लोबलाइजेशन खत्म हो चुका है। जिंदाबाद? पीटरसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स वर्किंग पेपर, (23-11)। https://www.piie.com/sites/default/files/2023-11/wp23-11.pdf

46 कोनोनेंको, वी., एट अल. (2020)। धीमा करना या ट्रैक बदलना? स्लोबलाइजेशन की गतिशीलता को समझना', https://tinyurl.com/j43864ja

47 https://www.wto.org/english/res_e/publications_e/gvc_dev_rep23_e.htm

48 ओईसीडी भारत नीति संक्षिप्त दिनांक नवंबर 2014, https://www.oecd.org/india/India-Enhancing-Global-Value-Chain-Participation.pdf

49 नोमुरा ग्लोबल मार्केट रिसर्च 28 May 2024, 'Asia's new flying geese'

50 WITS डेटाबेस के अनुसार, GVC-संबंधित व्यापार उस व्यापार के मूल्य को संदर्भित करता है जो एक से अधिक सीमाओं को पार करता है, https://wits.worldbank.org/gvc/gvc-output.table.html

चार्ट IV.15: सकल व्यापार में जीवीसी से संबंधित व्यापार की बढ़ती हिस्सेदारी[51]

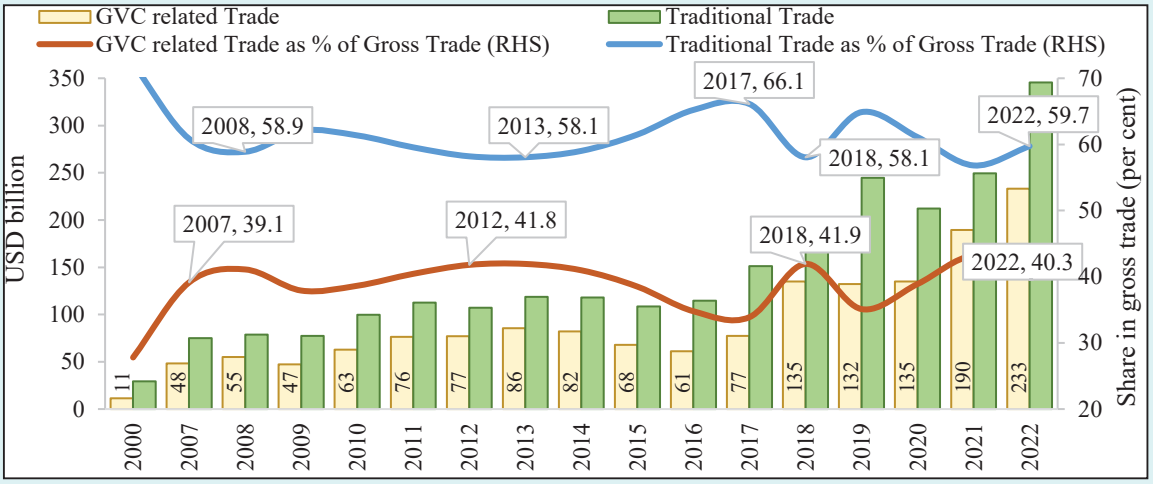

स्रोत: विश्व व्यापार संगठन डब्लूआईटीएस डेटाबेस

इन वर्षों में, भारत के जीवीसी से संबंधित व्यापार की क्षेत्रीय संरचना स्पष्ट रूप से बदल गई है। विनिर्माण क्षेत्र के भीतर, पिछले कुछ वर्षों में कम प्रौद्योगिकी विनिर्माण[52] की हिस्सेदारी में गिरावट आई है, जबकि मध्यम[53] और उच्च-प्रौद्योगिकी विनिर्माण[54] की हिस्सेदारी बढ़ रही है। मध्यम प्रौद्योगिकी विनिर्माण में वृद्धि को कोक और पेट्रोलियम, परिवहन उपकरण और प्राथमिक और गढ़े धातुओं जैसे उद्योगों की ओर बदलाव में भी देखा जा सकता है, जिनका भारत के जीवीसी से संबंधित व्यापार में महत्वपूर्ण हिस्सा है।

चार्ट IV.16: जीवीसी से संबंधित व्यापार में विभिन्न विनिर्माण उप-क्षेत्रों की हिस्सेदारी

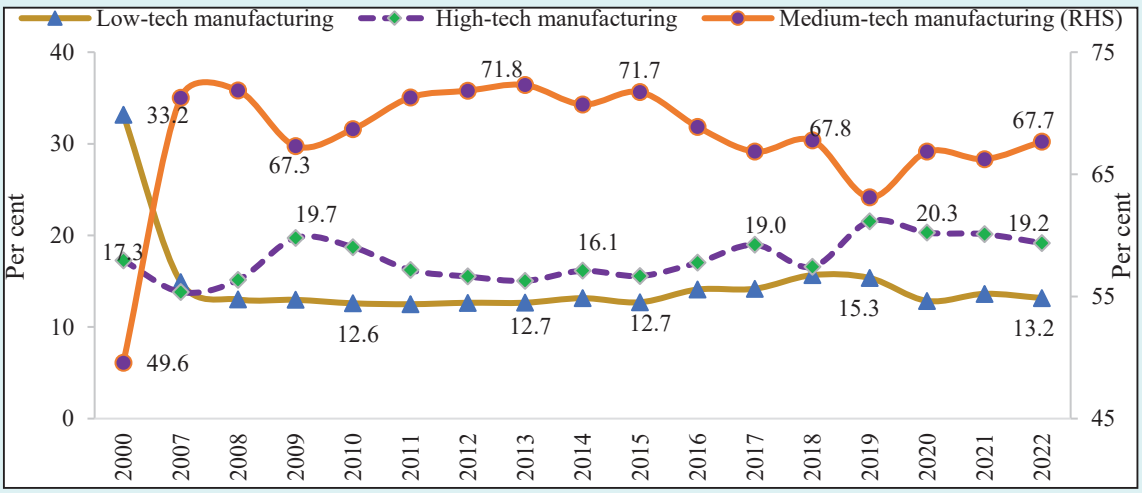

स्रोत: विश्व एकीकृत व्यापार समाधान (डब्लूआईटीएस)

51 सकल व्यापार जीवीसी-संबंधित व्यापार और पारंपरिक व्यापार का योग है। पारंपरिक व्यापार से तात्पर्य उस व्यापार से है जो केवल एक बार सीमा पार करता है

52 निम्न-प्रौद्योगिकी विनिर्माण में भोजन, पेय पदार्थ और तंबाकू शामिल हैं; कपड़ा और कपड़ा उत्पाद; चमड़ा और चमड़े के उत्पाद और जूते; लकड़ी और लकड़ी और कॉर्क और लुगदी के उत्पाद; कागज, कागज उत्पाद; मुद्रण एवं प्रकाशन

53 मध्यम-प्रौद्योगिकी विनिर्माण में कोक, परिष्कृत पेट्रोलियम और परमाणु ईंधन, रसायन और रासायनिक उत्पाद, रबर और प्लास्टिक, अन्य गैर-धात्विक खनिज, मूल धातुएं और निर्मित धातु और मशीनरी शामिल हैं।

54 उच्च प्रौद्योगिकी विनिर्माण में विद्युत और ऑप्टिकल उपकरण, परिवहन उपकरण और विनिर्माण, एनईसी और रीसाइक्लिंग शामिल हैं।

आईटी और प्रौद्योगिकी-सक्षम सेवाओं के निर्यात से भारत की जीवीसी सेवाओं का निर्यात होता है। इसके अलावा, सेवाओं में जीवीसी भागीदारी धीरे-धीरे कम-मूल्यवर्धित व्यवसाय प्रक्रिया आउटसोर्सिंग (बीपीओ) सेवाओं से उच्च-मूल्य वर्धित सेवाओं तक परिपक्व हो गई है, जैसे कि वैश्विक क्षमता केंद्रों (जीसीसी) द्वारा प्रदान की जाती हैं।

चार्ट IV.17: जीवीसी से संबंधित व्यापार में विभिन्न सेवा उप-क्षेत्रों की हिस्सेदारी

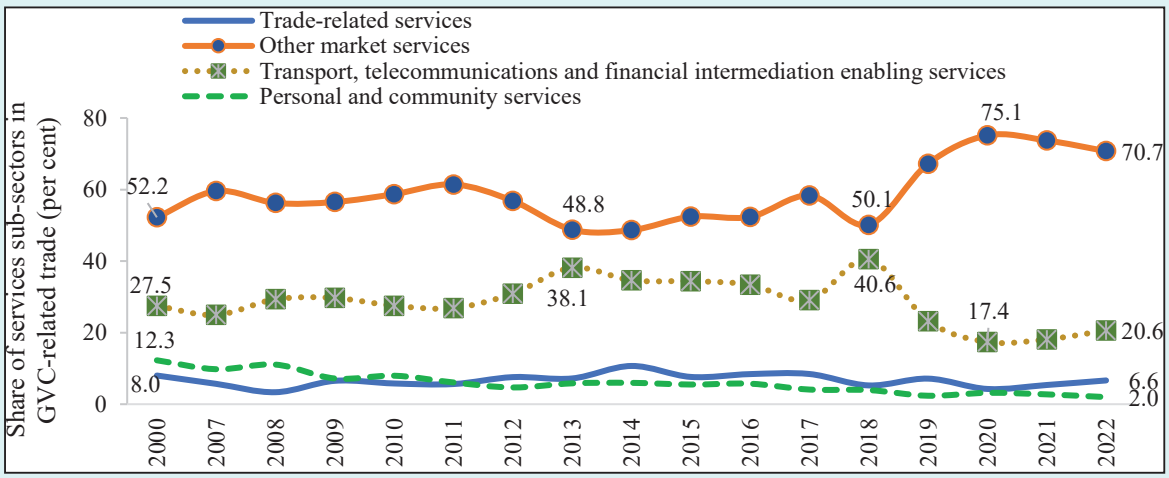

Source: World Integrated Trade Solution (WITS)

पहले, भारत के जीवीसी में उच्च स्तर की आगे की भागीदारी शामिल थी, जिसके परिणामस्वरूप देश के भीतर निर्यात के लिए कम मूल्यवर्धन हुआ था। हालांकि, हाल के वर्षों में, भारत ने डाउनस्ट्रीम की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है और दुनिया के बाकी हिस्सों में तैयार माल का निर्यात किया है। इसे शुद्ध रूप से पश्चगामी जीवीसी भागीदारी की हिस्सेदारी में वृद्धि में देखा जा सकता है, जो वर्ष 2019 में 13.8 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022 में 16.3 प्रतिशत हो गया। खाद्य और पेय पदार्थ, विद्युत और ऑप्टिकल उपकरण और वित्तीय मध्यस्थता जैसे क्षेत्रों में पश्चगामी जीवीसी भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। यहां तक कि सख्त अनुमान से, यानी कोक, परिष्कृत पेट्रोलियम और परमाणु ईंधन को छोड़कर, सकल व्यापार में शुद्ध पश्चगामी भागीदारी का हिस्सा वर्ष 2019 में 12.1 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022 में 14 प्रतिशत हो गया। इसके विपरीत, खुदरा व्यापार, कोक, परिष्कृत और परमाणु ईंधन, रसायन और प्राथमिक और गढ़े हुए धातुओं जैसे क्षेत्रों में व्यापार में शुद्ध फॉरवर्ड जीवीसी भागीदारी (या अपस्ट्रीम भागीदारी) की हिस्सेदारी 2016 में 19.1 प्रतिशत से घटकर 2022 में 17.6 प्रतिशत हो गई है। पश्चगामी जीवीसी भागीदारी भारत के लिए अच्छा है। प्रोफेसर वीरमणि और धीर के नवीनतम शोध से पता चलता है कि अधिक पश्चगामी जीवीसी भागीदारी के परिणामस्वरूप सकल निर्यात, घरेलू मूल्य वर्धित और रोजगार का उच्च स्तर होता है।

चार्ट IV.18: शुद्ध पिछड़ी जीवीसी भागीदारी की हिस्सेदारी में वृद्धि

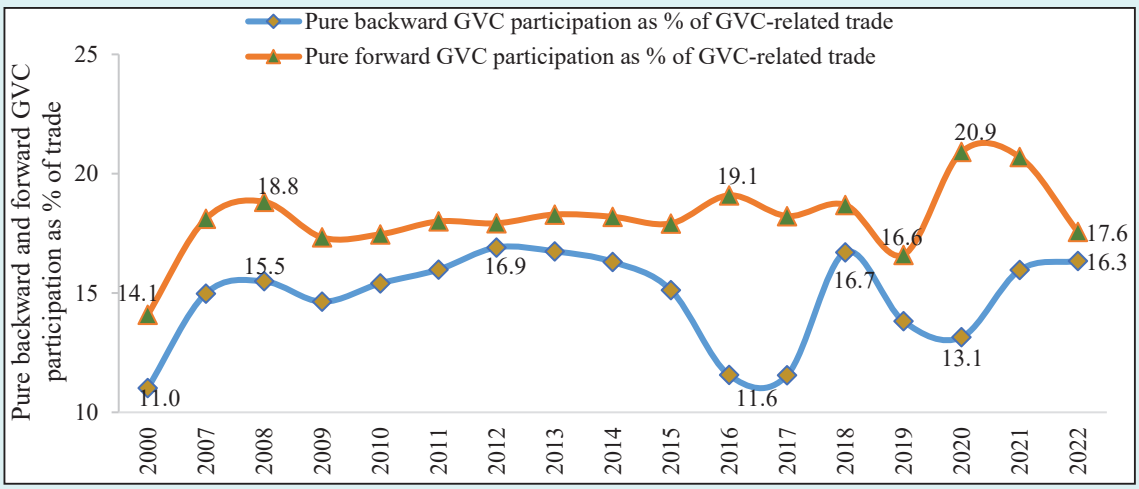

Source: World Integrated Trade Solution (WITS)

इतनी प्रगति के बावजूद, भारत की जीवीसी भागीदारी (जीवीसी से संबंधित व्यापार 2022 में सकल व्यापार के प्रतिशत के रूप में 40.3 प्रतिशत) अभी भी न केवल संयुक्त राज्य अमेरिका (43.7 प्रतिशत), यूके (47.8 प्रतिशत) और जापान (46.6 प्रतिशत) जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कम है, बल्कि दक्षिण कोरिया (56.2 प्रतिशत) और मलेशिया (60 प्रतिशत) जैसे एशियाई समकक्षों की तुलना में भी कम है। जीवीसी को और अधिक अपनाने और भागीदारी बढ़ाने के लिए, गुणवत्ता वाले व्यापार अवसंरचना को विकसित करने, जीवीसी नेटवर्क में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को एकीकृत करने, छोटे व्यवसायों के प्रवेश और निकास के लिए प्रक्रियाओं को सरल बनाने और व्यापार सुविधा उपायों की दिशा में काम करने की आवश्यकता है।

पूर्व में, भारत के जीवीसी में उच्च स्तर की आगे की भागीदारी शामिल थी, जिसके परिणामस्वरूप देश के भीतर निर्यात के लिए कम मूल्यवर्धन हुआ था। हालांकि, हाल के वर्षों में, भारत ने डाउनस्ट्रीम की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है और दुनिया के बाकी हिस्सों में तैयार माल का निर्यात किया है।[55] इसे शुद्ध रूप से पिछड़ी जीवीसी भागीदारी की हिस्सेदारी में वृद्धि में देखा जा सकता है, जो 2019 में 13.8 प्रतिशत से बढ़कर 2022 में 16.3 प्रतिशत हो गया। खाद्य और पेय पदार्थ, विद्युत और ऑप्टिकल उपकरण और वित्तीय मध्यस्थता जैसे क्षेत्रों में पिछड़ी जीवीसी भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। यहां तक कि सख्त अनुमान से, यानी कोक, परिष्कृत पेट्रोलियम और परमाणु ईंधन को छोड़कर, सकल व्यापार में शुद्ध पिछड़ी भागीदारी का हिस्सा 2019 में 12.1 प्रतिशत से बढ़कर 2022 में 14 प्रतिशत हो गया। इसके विपरीत, खुदरा व्यापार, कोक, परिष्कृत और परमाणु ईंधन, जैसे क्षेत्रों में व्यापार में शुद्ध आगे जीवीसी भागीदारी (या अपस्ट्रीम भागीदारी) की हिस्सेदारी 2016 में 19.1 प्रतिशत से घटकर 2022 में 17.6 प्रतिशत हो गई।

पिछड़ी जीवीसी भागीदारी भारत के लिए अच्छा है। प्रोफेसर वीरमणि और धीर[56] के नवीनतम शोध से पता चलता है कि अधिक पिछड़ी जीवीसी भागीदारी के परिणामस्वरूप सकल निर्यात, घरेलू मूल्य वर्धित और रोजगार का उच्च स्तर होता है।

इतनी प्रगति के बावजूद, भारत की जीवीसी भागीदारी (जीवीसी से संबंधित व्यापार 2022 में सकल व्यापार के प्रतिशत के रूप में 40.3 प्रतिशत) अभी भी संयुक्त राज्य अमेरिका (43.7 प्रतिशत), यूके (47.8 प्रतिशत) और जापान (46.6 प्रतिशत) जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में कम है, बल्कि दक्षिण कोरिया (56.2 प्रतिशत) और मलेशिया (60 प्रतिशत) जैसे एशियाई समकक्षों की तुलना में भी कम है। जीवीसी को और अधिक अपनाने और भागीदारी बढ़ाने के लिए, गुणवत्ता वाले व्यापार बुनियादी ढांचे को विकसित करने, जीवीसी नेटवर्क में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को एकीकृत करने, छोटे व्यवसायों के प्रवेश और निकास के लिए प्रक्रियाओं को सरल बनाने और व्यापार सुविधा उपायों की दिशा में काम करने की आवश्यकता है।

अंत में, यह ध्यान देने योग्य है कि भारत का जीवीसी विस्तार एक ऐसे युग में हो रहा है जो जीवीसी के लिए विशेष रूप से अनुकूल नहीं है। दुनिया भर के देश व्यापारीवाद को अपना रहे हैं। बहरहाल, व्यापारिकता में वृद्धि के बावजूद, सामूहिक देश के ब्लॉकों के लिए एक दूसरे के साथ गहनता से व्यापार करने की गुंजाइश है। इस संदर्भ में, जीवीसी आत्मनिर्भरता बनाने और इन देश समूहों के बीच साझा व्यापार लाभ को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

55 किसी देश की अग्रिम भागीदारी का तात्पर्य कच्चे माल और मध्यवर्ती इनपुट (उदाहरण के लिए, यार्न) का उत्पादन और शिपिंग करना है, ताकि अन्य देशों द्वारा आगे की प्रक्रिया और निर्यात किया जा सके (कपड़ा)। इसके विपरीत, पिछड़ी भागीदारी का तात्पर्य आयातित मध्यवर्ती इनपुट (आयातित कपड़े) का उपयोग करके निर्यात किए जाने वाले सामान (परिधान) का उत्पादन करना है।

56 वीरमणि, सी., और धीर, जी. (2022)। क्या विकासशील देशों को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भाग लेने से लाभ होता है? भारत से साक्ष्य। वर्ल्ड इकोनॉमिक्स की समीक्षा, 158(4), 1011-1042, https://shorturl.at/jixnb

बॉक्स IV.4: निर्यात हब के रूप में भारतीय जनपद

देश का हर जिला एक छोटे देश के बराबर आर्थिक क्षमता रखता है। वे वैश्विक बाजार में अपनी विशिष्ट पहचान और संभावनाओं का उपयोग करके निर्यात केंद्र बन सकते हैं। इसे आगे बढ़ाने के लिए, देश के सभी जिलों में संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए अगस्त 2019 में निर्यात केंद्र के रूप में जिले (डीईएच) पहल शुरू की गई थी। इसका उद्देश्य घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रत्येक जिले से उत्पादों का चयन, ब्रांडिंग और बिक्री को बढ़ावा देना था। डीईएच पहल के माध्यम से, सरकार का लक्ष्य शहरी क्षेत्रों से विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा देना है, जबकि ग्रामीण इलाकों में रुचि और आर्थिक गतिविधि पैदा करने पर ध्यान केंद्रित करना है। भारत की विदेश व्यापार नीति 2023 ने भारत के निर्यात प्रयासों में डीईएच की भूमिका को दोहराया।

डीईएच - फोकस / 75 पहल के तहत अपनी हालिया पहल के हिस्से के रूप में, सरकार ने निर्यात को बढ़ावा देने के लिए लक्षित सहायता प्रदान करने के लिए भारत भर में 75 जिलों की पहचान की है। प्रमुख कार्यक्रमों में वाणिज्य सप्ताह, स्थानीय निर्यातकों को शिक्षित करने और उन्हें सशक्त बनाने के उद्देश्य से कार्यशालाओं की एक श्रृंखला और दुबई एक्सपो 2020 में भागीदारी शामिल है जहाँ भारतीय उत्पादों को वैश्विक दर्शकों के सामने प्रदर्शित किया गया। एक्सपो की एक उल्लेखनीय सफलता दुबई के सुपरमार्केट में लद्दाख के खुबानी को पेश करना है। इसके अतिरिक्त, समुद्री क्रेता-विक्रेता मीट ने भारतीय समुद्री उत्पाद निर्यातकों को अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों से जोड़ा, जबकि विपणन और ब्रांडिंग कार्यशालाओं ने निर्यातकों को अपने उत्पाद प्रस्तुतिकरण को बेहतर बनाने में मदद की है।

डीईएच पहल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और देश के सभी जिलों को वैश्विक बाजार के लिए कम से कम एक वस्तु विकसित करने और इस प्रकार निर्यात को बढ़ावा देने में शामिल करने के लिए रसद और बुनियादी ढांचे के समर्थन की सुविधा प्रदान करने के लिए एक व्यापक आधार प्रदान करती है। बॉटम-अप दृष्टिकोण भारत को उत्पादन इकाइयों के बीच सीधा संबंध स्थापित करने और राष्ट्रीय निर्यात दायित्वों को पूरा करने में मदद करता है।

सभी राज्यों/संघ शासित प्रदेशों ने राज्य निर्यात संवर्धन समितियों (एसईपीसी) और जिला निर्यात संवर्धन समितियों (डीईपीसी) का गठन करके एक संस्थागत तंत्र स्थापित किया है। चिन्हित किए गए उत्पादों/सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने में निर्यातकों और निर्माताओं का समर्थन करने के लिए बाधाओं और आवश्यक हस्तक्षेपों की पहचान करने के लिए डीईपीसी द्वारा समय-समय पर जिला निर्यात कार्य योजनाएँ तैयार और अद्यतन की गई हैं। अब तक, 567 जिलों ने अपनी निर्यात कार्य योजनाएँ (डीईएपी) तैयार की हैं। जिलों ने देश भर में 13 क्षेत्रों में फैले 304 अद्वितीय उत्पादों की पहचान की है। उल्लेखनीय रूप से, इन 304 अद्वितीय उत्पादों में से 14 को 100 से अधिक जिलों में रणनीतिक रूप से वितरित सेवाओं के रूप में पहचाना गया है।

सरकार अपनी डीईएच पहल के माध्यम से ई-कॉमर्स निर्यात को भी बढ़ावा दे रही है, जिसमें प्रासंगिक ई-कॉमर्स भागीदारों, निर्यात संवर्धन परिषदों और संबंधित सरकारी विभागों के साथ सहयोग किया जा रहा है। यह पहल एमएसएमई को ई-कॉमर्स निर्यात के बारे में शिक्षित करने, उन्हें वैश्विक स्तर पर बेचने में सक्षम बनाने और उत्पादों की इमेजिंग और डिजिटल कैटलॉगिंग पर प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करने पर केंद्रित है। इन सहयोगों के परिणामस्वरूप, 2024 की पहली तिमाही के दौरान फरीदाबाद, मुरादाबाद, लुधियाना, जोधपुर, बैंगलोर, अहमदाबाद, हैदराबाद, मुंबई, जमशेदपुर और वाराणसी में जिलों के निर्यात आउटरीच कार्यक्रमों में 10 आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रमुख ई-कॉमर्स भागीदारों के साथ आयोजित इन कार्यक्रमों ने भाग लेने वाले व्यवसायों के लिए मूल्यवान सहायता, क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण सत्र प्रदान किए, जिससे उन्हें वैश्विक बाजारों में सफल होने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि और समर्थन मिला।

सरकार इस योजना के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए अधिक कदम उठा रही है। उदाहरण के लिए, विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने ओडीओपी (एक जिला, एक उत्पाद) और डीईएच पहल के तहत निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक्जिम बैंक के साथ भागीदारी की है। यह सहयोग एक्जिम बैंक के अध्ययन से निकला है, जिसमें निर्यात क्षमता वाले 59 मध्यम निर्यात जिलों की पहचान की गई है। सहयोग के तहत, डीजीएफटी 20 जिलों में

एक्जिम बैंक के साथ काम करेगा। इन जिलों को एक्जिम बैंक के ग्रिड कार्यक्रम (विकास के लिए जमीनी स्तर की पहल) के माध्यम से सहायता मिलेगी। कार्यक्रम का उद्देश्य क्षेत्र-विशिष्ट चुनौतियों का समाधान करना और सहायता के लिए उपयुक्त लाभार्थियों की पहचान करना है। एक्जिम बैंक का लक्ष्य सहयोगात्मक कार्यान्वयन के लिए चुनौतियों और समाधानों को रेखांकित करते हुए एक विस्तृत प्रस्ताव तैयार करना है।

भारत की वैश्विक व्यापार व्यवस्थाओं का बदलता परिदृश्य

4.30 वैश्विक आर्थिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अनिश्चितता के एक विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण चरण से गुजर रहे हैं, जैसा कि ऊपर पैरा 4.4 से 4.8 में बताया गया है। इस संदर्भ में, खुला, समावेशी, पूर्वानुमेय, गैर-भेदभावपूर्ण और पारस्परिक रूप से लाभप्रद व्यापार आर्थिक विकास को गति प्रदान कर सकता है। इसी अर्थ में, भारत नि:शुल्क व्यापार समझौतों (एफटीए) को व्यापार उदारीकरण की लिखत और डब्ल्यूटीओ के अंतर्गत बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली का पूरक मानता है। तदनुसार, यह देश लागत-प्रतिस्पर्द्धात्मक तरीके से घरेलू मांग को पूरा करने के लिए आवश्यक आयातों हेतु बेहतर स्थिति सुनिश्चित करते हुए अपने निर्यात बाजारों का विस्तार करने के लिए अपने व्यापार भागीदारों/ब्लाकों के साथ जुड़ गया है।

4.31 लगभग 10 वर्षों के अंतराल के बाद, वर्ष 2021 से वर्ष 2024 तक चार नए एफटीए पर हस्ताक्षर किए हैं।[57] ये एफटीए मॉरीशस (फरवरी 2021 में हस्ताक्षरित), संयुक्त अरब अमीरात (फरवरी 2022), ऑस्ट्रेलिया (अप्रैल 2022) और यूरोपीय नि:शुल्क व्यापार संघ या ईएफटीए (मार्च 2024) के साथ हस्ताक्षरित समझौता हैं। अंतिम एफटीए को छोड़कर सभी एफटीए लागू हो गए हैं। अधिकांश पूर्वी-एशियाई भागीदारों के साथ एफटीए पर हस्ताक्षर करने के बाद, ये नए व्यापारिक सहभागिताएं पश्चिमी और अफ्रीकी बाजारों तक पहुंच प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं और साथ ही इससे संभावित साझेदारों के साथ व्यापार संपूरकता भी होगी।। भारत की युवा जनसांख्यिकी और बढ़ती मध्यमवर्गीय आबादी अपने पश्चिमी एफटीए भागीदारों के लिए आकर्षक बाजार के रूप में उभर रही है।

4.32 एफटीए भागीदार से जुड़ने के महत्वपूर्ण मानदंडों से एक मानदंड यह सुनिश्चित करता है कि व्यापार भागीदार व्यापार पूरकता के संदर्भ में एक प्राकृतिक भागीदार है। प्राकृतिक व्यापार भागीदारों पर अकादमिक लिट्रेचर उन कारकों की पहचान करता है जो एफटीए भागीदारों के बीच मजबूत व्यापार को बढ़ावा देंगे और और यह गहन आर्थिक एकीकरण को सुगम बनाएगा।। उनमें से प्रारंभिक व्यापार मात्रा, भौगोलिक निकटता और व्यापार पूरकता प्रमुख हैं।[58]

भारत-मॉरीशस सीईसीपीए

4.33 वर्ष 2005 के बाद से, भारत मॉरीशस के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से अग्रणी व्यापारिक भागीदार रहा है। वित्त वर्ष 23 में भारत ने मॉरीशस को 462.7 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निर्यात किया था, जबकि मॉरीशस ने भारत में 91.8 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निर्यात किया था, जिससे 554.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर का कुल व्यापार हुआ। वित्त वर्ष 06 से वित्त वर्ष 23 तक पिछले 17 वर्षों के दौरान व्यापार में 168 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जब तक कि वर्ष 2019 के मध्य में मैंगलोर रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड द्वारा आपूर्ति अनुबंध समाप्त नहीं किया गया था, तब तक पेट्रोलियम उत्पाद वर्ष 2007 और वर्ष 2019 के बीच भारत के लिए सबसे बड़ी निर्यात वस्तु थे। भारत ने मॉरीशस को जिन चीजों की आपूर्ति की थी उनमें औषध, अनाज, कपास, प्रिम्प, झींगे और पशु मांस आदि शामिल हैं। मॉरीशस ने भारत को जिन चीजों की आपूर्ति की थी उनमें मुख्य रूप से वेनिला, चिकित्सा उपकरण, सुई, एल्यूमीनियम मिश्र धातु, रद्दी कागज, परिष्कृत तांबा, पुरुषों की सूती कमीजें आदि शामिल हैं।[59]

4.34 भारत और मॉरीशस ने फरवरी 2021 में व्यापक आर्थिक सहयोग और भागीदारी समझौते (सीईसीपीए) पर हस्ताक्षर किए थे। सीईसीपीए किसी अफ्रीकी देश के साथ भारत द्वारा हस्ताक्षरित पहला व्यापार समझौता है। इस समझौते में वस्तुओं

57 2021 से पहले, आखिरी एफटीए फरवरी 2011 में जापान के साथ हस्ताक्षर किया गया था, जो अगस्त 2011 में लागू हुआ।

58 कंडोगन, वाई. (2008)। क्षेत्रवाद बनाम बहुपक्षवाद: यूरो-भूमध्यसागरीय क्षेत्र से प्राकृतिक व्यापार भागीदार सिद्धांत के लिए साक्ष्य? जर्नल ऑफ इकोनॉमिक इंटीग्रेशन, 23(1), 138–160, https://www.jstor.org/stable/23001115

59 भारत-मॉरीशस द्विपक्षीय संबंध, https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Mauritius_2023.pdf

का व्यापार, उद्गम के नियम, व्यापारिक सेवाएं, व्यापार में उत्पन्न तकनीकी बाधाएं, स्वच्छता एवं पादप स्वच्छता उपाय आदि शामिल हैं। इस समझौते में भारत के लिए 310 निर्यात वस्तुएं शामिल हैं, जिनमें खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ, कृषि उत्पाद आदि शामिल हैं। मॉरीशस को भारत के बेहतर बाजार में संसाधित मछली, विशेष शर्करा, बिस्कुट, ताजे फल, जूस, मिनरल वाटर आदि जैसे अपने उत्पादों की आपूर्ति से लाभ होता है।

4.35 व्यापारिक सेवाओं के संबंध में, भारतीय सेवा प्रदाताओं की 11 व्यापक सेवा क्षेत्रों जैसे कि पेशेवर सेवाओं, कंप्यूटर से संबंधित सेवाओं, अनुसंधान और विकास, अन्य व्यावसायिक सेवाओं, दूरसंचार, निर्माण, वितरण, शिक्षा, पर्यावरण, वित्तीय, पर्यटन और यात्रा संबंधी, मनोरंजन, योग, श्रव्य-दृश्य सेवाओं और परिवहन सेवाओं से लगभग 115 उप-क्षेत्रों तक पहुंच है। भारत ने 11 व्यापक सेवा क्षेत्रों में से लगभग 95 उप-क्षेत्र में व्यापारिक सेवाओं की पेशकश की है, जिसमें पेशेवर सेवाएं, अनुसंधान और विकास, अन्य व्यावसायिक सेवाएं, दूरसंचार, वित्तीय, वितरण, उच्च शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य, पर्यटन और यात्रा संबंधी, मनोरंजन और परिवहन सेवाएं शामिल हैं।[60]

भारत-यूएई सीईपीए

4.36 यूएई को प्राकृतिक व्यापारिक भागीदार के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो पिछले दो दशकों से भारत के शीर्ष तीन व्यापार भागीदारों में शामिल है। यूएई रत्न और आभूषण, अनाज और ईंधन के लिए भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार रहा है। यूएई सीईपीए (व्यापक आर्थिक भागीदारी करार) के माध्यम से, इन श्रम-प्रधान उत्पादों को बेहतर पहुंच प्राप्त होगी।[61]

4.37 वित्त वर्ष 24 में भारत और यूएई के बीच द्विपक्षीय व्यापार 83.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। संयुक्त अरब अमीरात भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात स्थान है, जिससे वित्त वर्ष 24 में लगभग 35.6 बिलियन अमेरिकी डालर का निर्यात हुआ है। संयुक्त अरब अमीरात 18 अरब डॉलर के अनुमानित निवेश सहित भारत में आठवां सबसे बड़ा निवेशक भी है, जबकि संयुक्त अरब अमीरात में अनुमानित भारतीय निवेश लगभग 85 अरब डॉलर है[62]। सीईपीए से हस्ताक्षर के पांच वर्षों के भीतर वस्तुओं में द्विपक्षीय व्यापार को 100 बिलियन अमेरिकी डालर तक बढ़ने और सेवाओं में व्यापार को 15 बिलियन अमेरिकी डालर तक बढ़ने की उम्मीद है। भारत-यूएई सीईपीए से लगभग 26 बिलियन अमेरिकी डालर के भारतीय उत्पादों को लाभ होने की संभावना है जो यूएई द्वारा 5 प्रतिशत आयात शुल्क के अध्यधीन हैं। यूएई अन्य अफ्रीकी और यूरोपीय रूझानों में भावी मूल्य वर्धित निर्यात के लिए भारत के पूंजीगत सामान और मध्यवर्ती स्रोत के लिए केंद्र भी बन सकता है। इसके अतिरिक्त, किसी भी व्यापार करार में पहली बार, विकसित देश विनियामकों, अर्थात् संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसएफडीए), यूनाइटेड किंगडम (यूकेएमएचआरए), यूरोपीय संघ (ईएमए), और जापान (पीएमडीए) द्वारा अनुमोदित उत्पादों के लिए 90 दिनों में भारतीय औषध उत्पादों, विशेष रूप से स्वचालित पंजीकरण और विपणन प्राधिकरण तक पहुंच की सुविधा के लिए औषध पर अलग अनुबंध शामिल किया गया है।

4.38 इसके अतिरिक्त भारत ने पहली बार संयुक्त अरब अमीरात के साथ अपने एफटीए के दायरे में डिजिटल व्यापार को शामिल किया है जो डिजिटल भुगतान और ई-कॉमर्स सेवाओं में भारत को लाभ उठाने में मदद करेगा। इस करार में सरकारी खरीद और डेटा उपयोग प्रावधान भी शामिल हैं। सामान्य वित्तीय नियमों और उसके अंतर्गत जारी किए गए आदेशों के प्रावधानों को पूरी तरह से सुरक्षित करते हुए इसमें 'मेक इन इंडिया' आदेश और एमएसएमई वरीयता नीतियों के लिए अधिमान शामिल है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया ईसीटीए

4.39 संयुक्त अरब अमीरात के विपरीत, ऑस्ट्रेलिया का भारत के साथ उतना वृहत प्रारंभिक व्यापार परिणाम नहीं था। फिर भी, भारत के साथ ऑस्ट्रेलिया के व्यापार समूह में भारत के लिए पर्याप्त पूरकता है, इस प्रकार इसे एक प्राकृतिक

60 वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की दिनांक 31 मार्च 2021 की पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति, https://tinyurl.com/24cjb5sv

61 वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की दिनांक 27 मार्च 2022 की पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति, https://pib.gov.in/PressReleasePage-aspx?PRID=1810279.

62 भारत-यूएई सीईपीए (एफएक्यू), प्रश्न 3, https://www.nsez.gov.in/Resources/Trade/FAQs%20on%20CEPA.pdf

व्यापारिक भागीदार के रूप में वर्गीकृत किया गया है।[63] भारत ऑस्ट्रेलिया से संसाधनों और प्राथमिक उत्पादों का आयात करता है और तैयार माल का निर्यात करता है।

4.40 वित्त वर्ष 24 में ऑस्ट्रेलिया भारत का 13वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था और वर्ष 2023 में भारत ऑस्ट्रेलिया का 5वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था। भारत-ऑस्ट्रेलिया द्विपक्षीय वस्तुगत व्यापार वित्त वर्ष 22 में 25 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 23 में 26 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।[64] भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार करार (ईसीटीए) का यह अनुमान है कि दोनों देशों के लिए व्यापार और सेवाओं का द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2021 में 27.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 5 वर्षों में 45 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगा।

4.41 इस कारा से भारत के विभिन्न श्रम-प्रधान क्षेत्रों को लाभ मिलने की संभावना है, जो पहले अधिकांश उत्पादों पर आस्ट्रेलिया के 5 प्रतिशत आयात शुल्क के अध्यधीन थे। इसके परिणामस्वरूप शून्य शुल्क पर 98.3 प्रतिशत प्रशुल्क सीमा तत्काल बाजार तक पहुंच होगी, जो मूल्य के संदर्भ में ऑस्ट्रेलिया में भारत का निर्यात 96.4 प्रतिशत है। भारत ऑस्ट्रेलिया का तीसरा सबसे बड़ा सेवा निर्यात बाजार है। सेवाओं के लिए बाजार पहुंच के संबंध में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 135 उप-क्षेत्रों की पेशकश की है और भारत ने ऑस्ट्रेलिया को 103 उप-क्षेत्रों की पेशकश की है। यह करार कंप्यूटर से संबंधित सेवाओं, दूरसंचार, निर्माण, स्वास्थ्य और पर्यावरण सेवाओं में निवेश के लिए अवसर प्रदान करेगा।[65]

भारत-ईएफटीए टीईपीए

4.42 भारत-ईएफटीए व्यापार और आर्थिक साझेदारी करार (टीईपीए) का बल ईएफटीए देशों अर्थात्- स्विट्जरलैंड, नॉर्वे, आइसलैंड और लिकटेंस्टीन के साथ गहन आर्थिक संबंध पर है। यह किसी भी यूरोपीय देश के साथ समझौता करने वाला प्रथम भारतीय एफटीए है। विकसित देशों के इस समूह के साथ एफटीए का सफल समापन विश्व के लिए एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संकेत है, जो विकसित और विकासशील दोनों देशों में बढ़ते संरक्षणवाद के समय व्यापार उदारीकरण के प्रति भारत की दृढ़ प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। यह एक अभिनव और पूर्ण रूप से संतुलित करार है जो व्यापार और सेवाओं के साथ-साथ द्विपक्षीय निवेश में दो-तरफे व्यापार को जोड़कर रखता है।

4.43 इसके अतिरिक्त, भारत वर्तमान में अपने कुछ व्यापारिक भागीदारों के साथ एफटीए वार्ताओं में भी जुड़ा हुआ है। इन एफटीए वार्ताओं में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं – (i) भारत-यूके एफटीए, (ii) भारत-यूरोपीय संघ एफटीए, (iii) भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापक आर्थिक सहयोग करार (सीईसीए), भारत-ऑस्ट्रेलिया ईसीटीए का निर्माण, (iv) भारत-पेरू व्यापारिक करार, जिसमें माल, सेवाएं और निवेश शामिल हैं, (v) भारत-यूरेशियन आर्थिक संघ (भारत-ईएईयू) एफटीए और (अप) भारत-श्रीलंका आर्थिक और तकनीकी सहयोग करार (ईसीटीए)। सरकार व्यापक अंतर-मंत्रालयी और उद्योग परामर्शों के आधार पर एफटीए की समीक्षा करती है। तदनुसार, इसके मौजूदा नि:शुल्क व्यापार करारों, नामत भारत-दक्षिण कोरिया सीईपीए और आसियान-भारत वस्तु व्यापार करार (एआईटीआईजीए) की समीक्षा शुरू कर दी गई है।

व्यापार सुविधा उपायों और लॉजिस्टिक लागत में हुई कमी के लिए सरकार की पहल

4.44 सरकार ने उत्पादन क्षमता बढ़ाने, निर्यात को बढ़ावा देने और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में शामिल लॉजिस्टिक लागतों को कम करने के लिए विभिन्न उपाय किए हैं। इनमें अन्य बातों के साथ-साथ निर्यात लक्ष्य निर्धारित करना और इन लक्ष्यों की निगरानी करना, सुधारात्मक कदम, अल्पावधिक और मध्यम और दीर्घकालिक निर्यात के लिए निर्यात ऋण बीमा सेवाओं का प्रावधान और बैंकों को सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) निर्यातकों को किफायती और पर्याप्त निर्यात ऋण प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करना, उन्हें नए बाजारों का पता लगाने और मौजूदा उत्पादों को प्रतिस्पर्धात्मक

63 व्यापार पूरकता सूचकांक यह दर्शाता है कि रिपोर्टर का निर्यात प्रोफाइल किस सीमा तक भागीदार के आयात रुपरेखा से मेल खाता है या उसका पूरक है। उच्च सूचकांक यह सुझाव दे सकता है कि दो देशों को बढ़े हुए व्यापार से लाभ होगा (डब्ल्यूआईटीएस, विश्व बैंक)। वर्ष 2021 में भारत के लिए ऑस्ट्रेलिया और यूके टीसीआई क्रमश: 60 और 67 प्रतिशत था।

64 भारत ऑस्ट्रेलिया ईसीटीए-एफएक्यू, https://commerce.gov.in/wp-content/uploads/2022/09/FAQs-for-IndAus-ECTA-2.pdf

65 वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की दिनांक 8 जनवरी 2023 को जारी पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति, https://tinyurl.com/286udedz

रूप से विविधता प्रदान करने में सक्षम बनाना आदि शामिल है। सरकार ने तुरंत[66] कस्टम[67], व्यापार सुगमता हेतु सिंगल विंडो इंटरफेस (एसडब्ल्यू आईएफटी)[68] प्री-अराइवल डेटा प्रोसेसिंग, ई-संचित[69], समन्वित सीमा प्रबंधन आदि जैसी पहलों के माध्यम से सहयोग का संवर्धन किया है।

4.45 केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न तकनीकी पहलें की हैं। इनमें अन्य वार्ता के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक कैश लेजर[70] का चरणबद्ध कार्यान्वयन, भूमि सीमा शुल्क केंद्र पर इलेक्ट्रॉनिक मंजूरी को सक्षम करना, आईएफएससी कोड का ऑनलाइन जमा करना, इलेक्ट्रॉनिक सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिन का उपयोग और दोषपूर्ण या क्षतिग्रस्त इलेक्ट्रॉनिक सामानों की उपयोग सीमा को बढ़ाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मरम्मत सेवा आउटसोर्सिंग शामिल हैं। डाक विभाग (डीओपी) ने पीबीई की इलेक्ट्रॉनिक फाइलिंग और प्रोसेसिंग के लिए पोस्टल बिल ऑफ एक्सपोर्ट ऑटोमेशन सिस्टम विकसित किया है, जिसके अंतर्गत निर्यातक को विदेशी डाकघर में जाने और निर्यात पार्सल प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। परिवर्तनकारी साझेदारी में, सीबीआईसी और डीओपी ने हब और स्पोक मॉडल शुरू किया, निर्यात प्रक्रिया को सरल बनाया, छोटे पैमाने के निर्यातकों को बढ़ावा दिया और भारत के व्यापक वैश्विक व्यापार डाक नेटवर्क का लाभ उठाया। यह योजना डिजिटल प्रौद्योगिकी और ऐप का उपयोग करते हुए 1.54 लाख डाकघरों के विशाल डाक नेटवर्क को नियंत्रित करती है और डाक सेवाओं के माध्यम से निर्बाध निर्यात मध्यवर्ती संस्थाओं को कम किया है।

4.46 दक्षता को बढ़ावा देने और लॉजिस्टिक्स को कम करने के लिए, सरकार ने क्रमशः अक्टूबर 2021 और सितंबर 2022 में पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान और राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (एनएलपी) की शुरुआत की थी। लॉजिस्टिक्स में सुधार की दिशा में किए गए यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफेस प्लेटफॉर्म (यूलिप)[71] और लॉजिस्टिक्स डेटा बैंक[72] जैसे डिजिटल सुधार अतिरिक्त उपाय हैं। रेलवे ट्रैक विद्युतीकरण, लैंड पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एलपीएआई) द्वारा जारी समय को कम करने और पत्तन से संबंधित लॉजिस्टिक्स के लिए एनएलपी मरीन के शुभारंभ जैसी पहल भी की गई। एनएलपी के शुरुआत के बाद से, 614 से अधिक उद्योग के प्लेयरों ने यूलिप पर पंजीकरण किया है, 106 निजी कंपनियों ने गैर-प्रकटीकरण करारों (एनडीए) पर हस्ताक्षर किए हैं, 142 कंपनियों ने यूलिप पर आयोजित किए जाने के लिए 382 उपयोग के मामले प्रस्तुत किए हैं और सितंबर 2023 तक 57 आवेदन लाइव किए गए हैं।[73]

4.47 इन पहलों के परिणामस्वरूप, डिजिटल और संधारणीय व्यापार सुविधा पर एशिया प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग (यूएनईएससीएपी) के वैश्विक सर्वेक्षण में भारत के निष्पादन में सुधार हुआ है।[74] सर्वेक्षण में, भारत ने वर्ष 2023 में 93.5 प्रतिशत अंक हासिल किए, जबकि वर्ष 2021 में यह 90.3 प्रतिशत था। भारत ने चार प्रमुख क्षेत्रों: पारदर्शिता, औपचारिकताओं, संस्थागत व्यवस्था और सहयोग, और कागज रहित व्यापार में 100 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। इसके अतिरिक्त, देश ने 'व्यापार सुविधा में महिला' घटक के अंक में वर्ष 2021 में 66.7 प्रतिशत से वर्ष

66 'तुरंत' एक हिंदी शब्द है जिसका अर्थ है 'शीघ्र'

67 तुरंत कस्टम्स एक संपर्क रहित सीमा शुल्क पहल है, जो सीमा शुल्क अधिकारियों और आयातकों/निर्यातकों/सीमा शुल्क ब्रोकर्स/अन्य हितधारकों के बीच वास्तविक इंटरफेस को कम करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाती है।

68 स्वीफ्ट आयातकों और निर्यातकों को एक ही स्थान पर अपने निकासी दस्तावेज ऑनलाइन दर्ज करने की सुविधा प्रदान करता है।

69 ई-संचित व्यापारी को मंजूरी प्राप्त करने के लिए सभी सहायक दस्तावेजों को डिजिटल रूप से अपलोड करने की अनुमति प्रदान करता है, जिससे व्यापारी को विभिन्न समाशोधन प्राप्त करने के लिए पीजीए (भाग लेने वाली सरकारी एजेंसियों) से संपर्क करने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है

70 इलेक्ट्रॉनिक कैश लेजर (ईसीएल) ने आयातक, निर्यातक या शुल्क, कर आदि का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी किसी भी व्यक्ति को वर्तमान में किए जा रहे लेन-देन-वार भुगतान के बजाय सरकार के पास अग्रिम जमा करने में सक्षम बनाया है, जिसका उपयोग इस अधिनियम या वर्तमान में लागू किसी अन्य कानून के अंतर्गत अपनी देनदारियों का भुगतान करने के लिए किया जा सकता है।

71 यूएलआईपी को पारदर्शी, एकल-विंडो प्लेटफॉर्म बनाकर भारत में लॉजिस्टिक्स की दक्षता बढ़ाने और लागत को कम करने के लिए तैयार किया गया है जो सभी हितधारकों को कार्गो संचलन पर वास्तविक समय की जानकारी प्रदान कर सकता है।

72 लॉजिस्टिक्स आंकड़ा बैंक आपूर्ति श्रृंखला में विभिन्न एजेंसियों में उपलब्ध सूचनाओं को एकीकृत करता है ताकि एकल विंडो के भीतर कंटेनरीकृत एक्जिम लॉजिस्टिक्स से संबंधित विस्तृत वास्तविक समय की जानकारी प्रदान की जा सके।

73 वाणिज्य मंत्रालय की दिनांक 14 सितंबर 2023 की पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति, https://pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=1957407.

74 सर्वेक्षण में डब्ल्यूटीओ व्यापार सुविधा करार (टीएफए) के साथ-साथ लगभग 60 व्यापार सुविधा उपायों का एक समूह शामिल है, जिन्हें ग्यारह उप-समूहों में वर्गीकृत किया गया है, अर्थात: पारदर्शिता; औपचारिकताएं, संस्थागत व्यवस्था और सहयोग; पारगमन सुविधा; कागज रहित व्यापार; सीमा पार कागज रहित व्यापार; एमएसई के लिए व्यापार सुविधा, कृषिगत व्यापार सुविधा, व्यापार सुविधा में महिला, व्यापार सुविधा के लिए व्यापार वित्त और संकट के समय में व्यापार सुविधा प्रदान करना। सर्वेक्षण धारणा आधारित होने के बजाय तथ्य आधारित है। तीन-चरणीय डेटा संग्रह और सत्यापन दृष्टिकोण का आमतौर पर पालन किया जाता है और प्रति दो वर्ष में 6 महीने की अवधि में लागू किया जाता है। कम अंक व्यापार सुविधा उपायों में सुधार दर्शाता है। https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID-1938008

2023 में 77.8 प्रतिशत तक पर्याप्त सुधार देखा गया है, जो व्यापार क्षेत्र में महिला समावेशिता और महिला सशक्तिकरण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

4.48 व्यापार सुविधा उपायों की सफलता का एक अन्य प्रमाण सीबीआईसी द्वारा आयोजित नेशनल टाइम रिलीज स्टडी (2023)[75] में परिलक्षित होता है। इस अध्ययन से यह पता चलता है कि वर्ष 2022 की तुलना में वर्ष 2023 में कुल औसत आयात रिलीज समय[76] में 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। औसत रिलीज समय में अधिकतम सुधार बंदरगाहों में मुंद्रा (33 प्रतिशत), एयर कार्गो कॉम्प्लेक्स (एसीसी) में हैदराबाद (44 प्रतिशत) और अंतर्देशीय कंटेनर डिपो में तुगलकाबाद (23 प्रतिशत) दर्ज किया गया था।

4.49 लॉजिस्टिक लागत में कमी विश्व बैंक के लॉजिस्टिक्स पर्फोमेंस इंडेक्स (एलपीआई)[77] पर भारत की रैंक में सुधार को दर्शाती है, जो 139 देशों में से छह पायदान सुधरकर 2018 में 44वें स्थान की तुलना में वर्ष 2023 में 38वें स्थान पर पहुंच गई। कार्गो ट्रैकिंग की शुरुआत से, विशाखापत्तनम के पूर्वी पत्तन में डवेल टाइम[78] वर्ष 2015 में 32.4 दिनों से घटकर वर्ष 2019 में 5.3 दिन हो गया। इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय शिपमेंट में भारत की स्थिति 2018 में 44 से बढ़कर 2023 में 22 हो गई, जो इसके आधुनिकीकरण और डिजिटलीकरण प्रयासों के कारण संभव हो पाया है। भारत अवसंरचना स्कोर में पंचम स्थान और लॉजिस्टिक क्षमता और समानता में चार अंक बढ़कर 48 वें स्थान पर पहुंच गया। सरकार वर्ष 2030 तक सूचकांक जिसमें 139 देश शामिल हैं, में शीर्ष 25 देशों में अपना स्थान सुरक्षित रखना चाहती है।[79] विश्व बैंक के लॉजिस्टिक्स निष्पादन सूचकांक (एलपीआई) रिपोर्ट 2023 के अनुसार, भारतीय पत्तनों का 'मेडियन टर्न अराउंड टाइम' 0.9 दिनों तक पहुंच गया है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका (1.5 दिन), ऑस्ट्रेलिया (1.7 दिन) और सिंगापुर (1.0 दिन) से बेहतर है।[80]

4.50 सागरमाला योजना ने भारत की 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा, 14,500 किलोमीटर लंबे संभावित नौगम्य जलमार्ग और प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार मार्गों पर रणनीतिक स्थान का उपयोग करके पत्तन आधारित विकास को बढ़ावा दिया है। पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय का अनुमान है कि भारत की कुल पत्तन क्षमता वर्ष 2047 तक 2,600 एमटीपीए (मिलियन टन प्रति वर्ष) से बढ़कर 10,000 एमटीपीए से अधिक हो जाएगी।[81] जलमार्ग से अप्रैल से नवंबर 2022 में 80.4 एमएमटी की तुलना में अप्रैल से नवंबर 2023 में, 86.5 एमएमटी कार्गो की आवाजाही हुई है अर्थात् इसमें 7.5 प्रतिशत की वृद्धि।[82] सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक 23 जलमार्गों को चालू करना है।

---

75 https://old.cbic.gov.in/resources/htdocs-cbec/implmntin-trade-facilitation/national-time-release-study15062023.pdf पर उपलब्ध है। नेशनल टाइम रिलीज स्टडी (एनटीआरएस) 2023 में चार पत्तन श्रेणियों का प्रतिनिधित्व करने वाले 15 प्रमुख पत्तन के लिए आयात और निर्यात रिलीज समय को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में 4 पत्तन, 6 एसीसीए, 3 अंतर्देशीय कंटेनर डिपो और 2 एकीकृत चेक पोस्ट शामिल हैं; भौगोलिक दृष्टि से अच्छी तरह से वितरित ये पत्तन कुल मिलाकर देश में दर्ज किए गए बिल ऑफ एंट्री का लगभग 80 प्रतिशत और पोत परिवहन बिलों का 70 प्रतिशत हिस्सा हैं।

76 कार्गो रिलीज टाइम आयात के मामले में सीमा शुल्क केंद्र पर कार्गो के आगमन से लेकर घरेलू निकासी के लिए उसके आउट-ऑफ-चार्ज तक और निर्यात के मामले में सीमा शुल्क केंद्र पर कार्गो के आगमन से लेकर वाहक के अंतिम प्रस्थान तक का समय है।

77 एलपीआई एक इंटरैक्टिव बेंचमार्किंग उपकरण है, जिसे देशों को व्यापार लॉजिस्टिक पर उनके निष्पादन में आने वाली चुनौतियों और अवसरों की पहचान करने और अपने निष्पादन को बेहतर बनाने के लिए वे क्या कर सकते हैं, इसकी मदद करने के लिए बनाया गया है, https://lpi.worldbank.org/sites/default/files/2023-04/LPI_2023_report_with_layout.pdf

78 विश्व बैंक एलपीआई शब्दावली के अनुसार, प्रवास समय कंटेनर के आगमन से लेकर प्रस्थान तक एक ही स्थान पर बिताए गए समय को दर्शाता है। प्रवास समय पत्तन, निर्यात, आयात या अंतर्देशीय टर्मिनल सुविधाओं पर लागू होता है। समेकित आयात और निर्यात, ठहरने का समय जहाज से उतारने (आयात) के बाद या जहाज पर कंटेनर के लादने (निर्यात) से पहले पत्तन और मध्यवर्ती अंतर्देशीय स्थानों पर प्रवास समय के योग के रूप में परिभाषित किया गया है।

79 वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की दिनांक 17 सितंबर 2022 की पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1860230

80 आपूर्ति श्रृंखला ट्रैकिंग डेटासेट से लीड टाइम डेटा, विश्व बैंक लॉजिस्टिक्स पर्फोमेंस इंडेक्स रिपोर्ट 2023 के पृष्ठ 37 का परिशिष्ट https://lpi.worldbank.org/sites/default/files/2023-04/LPI_2023_report_with_layou.-pdf

81 पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय की दिनांक 19 अगस्त 2023 की पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति, https://tinyurl.com/2n68d6em

82 पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय की दिनांक 2 जनवरी 2024 की पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति, https://tinyurl.com/572j5mnn

चार्ट IV.19: भारत के डवेल टाईम में कमी

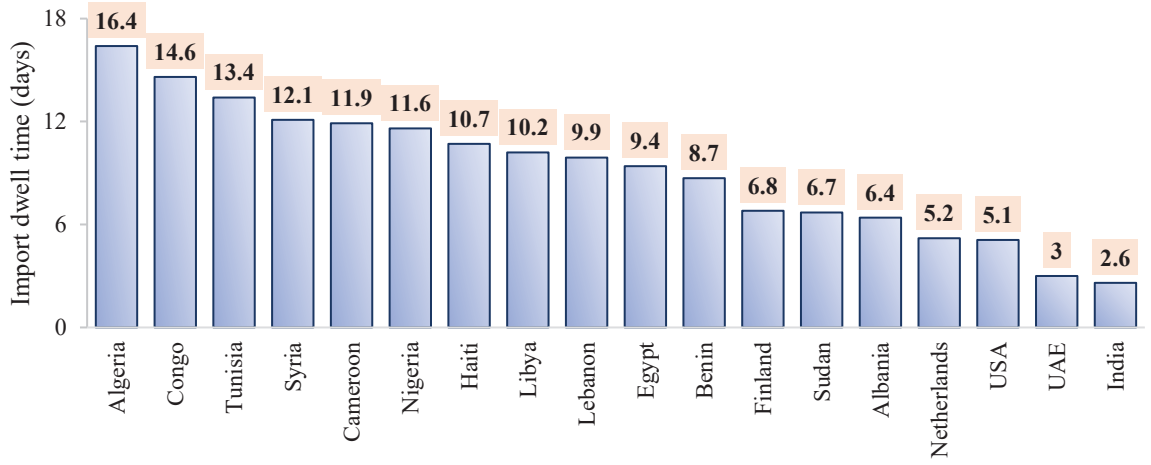

स्रोत: वर्ल्ड बैंक लॉजिस्टिक परफोर्मेंस रिपार्ट: 2023

4.51 माल और सेवा कर (जीएसटी) ने लॉजिस्टिक लागत को कम करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। श्वन नेशन, वन टैक्सश व्यवस्था ने यह सुनिश्चित किया है कि ट्रकों को राज्य की सीमाओं पर घंटों इंतजार नहीं करना पड़ता है, जिससे यात्रा का समय 30 प्रतिशत तक कम हो गया है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार लॉजिस्टिक्स लागत कम हो गई है और ट्रकों की औसत यात्रा की दूरी 300-325 किलोमीटर तक बढ़ गई है जो जीएसटी से पहले 225 किलोमीटर हुआ करती थी।[83] यह बहुत बड़ा मूल्य संवर्धन है, जो व्यापारिक सुगता और देश में विनिर्माण के विकास को जोड़ता है। दिसंबर 2023 के एनसीएईआर अध्ययन से पता चला है कि अर्थव्यवस्था में लॉजिस्टिक लागत में वित्त वर्ष 14 और वित्त वर्ष 22 के बीच जीडीपी के 0.8 से 0.9 प्रतिशत अंक की गिरावट आई है।[84]

4.52 भारत के लॉजिस्टिक्स प्रफोर्मेंस में सुधार राज्य स्तर पर भी परिलक्षित होता है। 2023 लॉजिस्टिक्स ईज अक्रॉस डिफरेंट स्टेट्स (एलईएडीएस) ने वर्ष 2019 की तुलना में वर्ष 2023 में लॉजिस्टिक्स प्रफोर्मेंस सेवाओं, अवसंरचना और नियामक परिस्थिति के सभी तीन पहलुओं में हितधारकों की धारणा में सकारात्मक बदलाव को दर्शाता है, जो सुविचारित निर्णय लेने और व्यापक विकास के लिए क्षेत्र-विशिष्ट[85] अंतर्दृष्टि प्रदान करके राज्य सरकारों को सशक्त बनाया है। हितधारकों की धारणा में एक सकारात्मक बदलाव का श्रेय पिछले कुछ वर्षों में राज्यों और संघ राज्य क्षेत्र द्वारा अपने लॉजिस्टिक्स पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के लिए शुरू किए गए कई सुधार उपायों को दिया जाता है, जिसमें लॉजिस्टिक्स नीति तैयार करना, सहायक अवसंरचना का विकास और विनियामक सुगमता बढ़ाना शामिल है।

अनुकूल चालू खाता शेष

4.53 चालू खाता दुनिया के बाकी हिस्सों के साथ किसी देश के अंतरराष्ट्रीय लेनदेन का रिकॉर्ड है। भारत के चालू खाते का प्रमुख घटक पण्य व्यापार है। जैसा कि पैरा 4.14 में चर्चा की गई है, वित्त वर्ष 24 में समग्र व्यापार घाटे को कम करने और प्रेषण में वृद्धि (नीचे पैरा 4.54 देखें) से सीएडी में सुधार हुआ है। वित्त वर्ष 24 में भारत का सीएडी पिछले वर्ष के दौरान 67 बिलियन अमेरिकी डॉलर (जीडीपी का 2 प्रतिशत) से घटकर 23.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर (जीडीपी का 0.7 प्रतिशत) हो गया। वित्त वर्ष 2024 में सीएडी में हुए सुधार को वित्त वर्ष 2024 की चौथी तिमाही में

83 जीएसटी पर सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की पुस्तिका, https://morth.nic.in/sites/default/files/Booklet_on_GST.pdf

84 'भारत में लॉजिस्टिक्स लागत-मूल्यांकन और दीर्घकालिक रूपरेखा पर नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च की रिपोर्ट, https://www.ncaer.org/wp-content/uploads/2023/12/NCAER_Report_LogisticsCost2023.pdf

85 लीड्स हितधारकों का सर्वेक्षण है और विश्व बैंक की लॉजिस्टिक्स निष्पादन सूचकांक (एलपीआई) पद्धति का उपयोग करता है। यह राज्यिक एलपीआई, लॉजिस्टिक्स के प्रमुख क्षेत्रों- अवसंरचना, सेवा समयसीमा, पता लगाने की क्षमता, प्रतिस्पर्धात्मकता, सुरक्षा, परिचालन वातावरण और विनियमन की दक्षता संबंधी बैठकों और ऑनलाइन सर्वेक्षणों की श्रृंखला के आधार पर हितधारक जुड़ाव के लिए मूल्य निर्धारण पद्धति का उपयोग करके प्राप्त किया जाता है। https://drive.google.com/drive/folders/17bWqWyvprnVwxyQUgQYpwloKhopNuubj\usp=sharing

दर्ज किए गए सीएडी में हुए अधिशेष से समर्थन मिला है, जो व्यापारिक व्यापार घाटे में कमी, निवल सेवा निर्यात में वृद्धि और बढ़ते प्रेषण के कारण हुआ है। अन्य देशों के संबंध में भारत के सीएडी के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत का सीएडी अपेक्षाकृत कम है (चार्ट IV. 21)

चार्ट IV.20: वित्त वर्ष 24 के दौरान सीएडी में सुधार

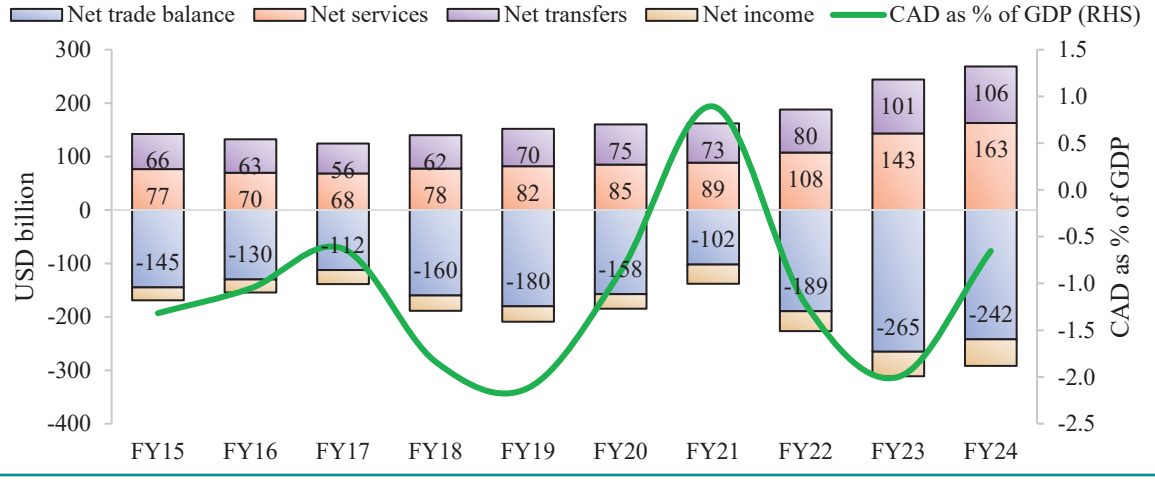

स्रोत: चार्ट संख्या 196, भारत का समग्र भुगतान संतुलन -त्रैमासिक-अमेरिकी डॉलर', बाहरी क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधी सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई

चार्ट IV.21: जीडीपी के प्रतिशत के रूप में चालू खाता शेष: भारत बनाम चुनिंदा देश

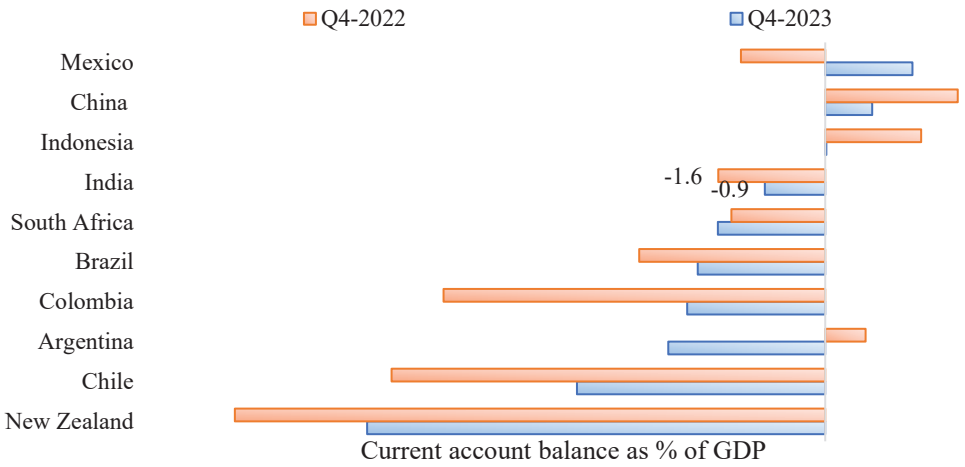

स्रोत: ओईसीडी आर्थिक आउटलुक डेटाबेस 115,

अप्रत्यक्ष

4.54 निवल सेवा प्राप्तियां वित्त वर्ष 23 के दौरान 143.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 162.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई, जिसका मुख्य कारण सॉफ्टवेयर, यात्रा और व्यावसायिक सेवाओं का बढ़ता निर्यात है। इसी प्रकार, निवल निजी अंतरण प्राप्तियां, जो मुख्य रूप से विदेशों में कार्यरत भारतीयों द्वारा प्रेषण को दर्शाती हैं, वित्त वर्ष 24 में यह 106.6 बिलियन अमेरिकी डालर थी, जबकि पिछले वर्ष के दौरान यह 101.8 बिलियन अमेरिकी डालर थी। निवल सेवा निर्यात और विप्रेषण ने अप्रत्यक्ष खाते पर अधिशेष में योगदान बढ़ाया है, जिसने व्यापारिक व्यापार घाटे को कम किया।

4.55 सेवा निर्यात के बाद विप्रेषण विदेशी वित्तपोषण का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है, जो सीएडी को कम करने में योगदान देता है और हमेशा बीओपी का स्थायी घटक रहा है। विश्व बैंक के अनुसार, भारत में सबसे बड़ी प्रवासी आबादी है और यह सबसे बड़ा प्रेषण प्राप्तकर्ता देश है, जिसमें वर्ष 2023 में प्रेषण 120 बिलियन अमेरिकी डालर महत्वपूर्ण उपलब्धी रही है।[86] प्रेषण में वृद्धि मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप जो भारत के कुशल प्रवासियों के लिए सबसे बड़ा गंतव्य स्थल है और अन्य ओईसीडी गंतव्य में घटती मुद्रास्फीति और में सुदृढ़ श्रम बाजारों के कारण हुई है, और साथ ही जीसीसी देशों में कुशल और कम कुशल श्रमिकों की सकारात्मक मांग हैं (जो संयुक्त रूप से भारतीय प्रवासियों के लिए दूसरा सबसे बड़ा गंतव्य स्थल हैं)।

चार्ट IV.22: भारत 2023 में विश्व में शीर्ष प्रेषण प्राप्तकर्ता के रूप में उभरा

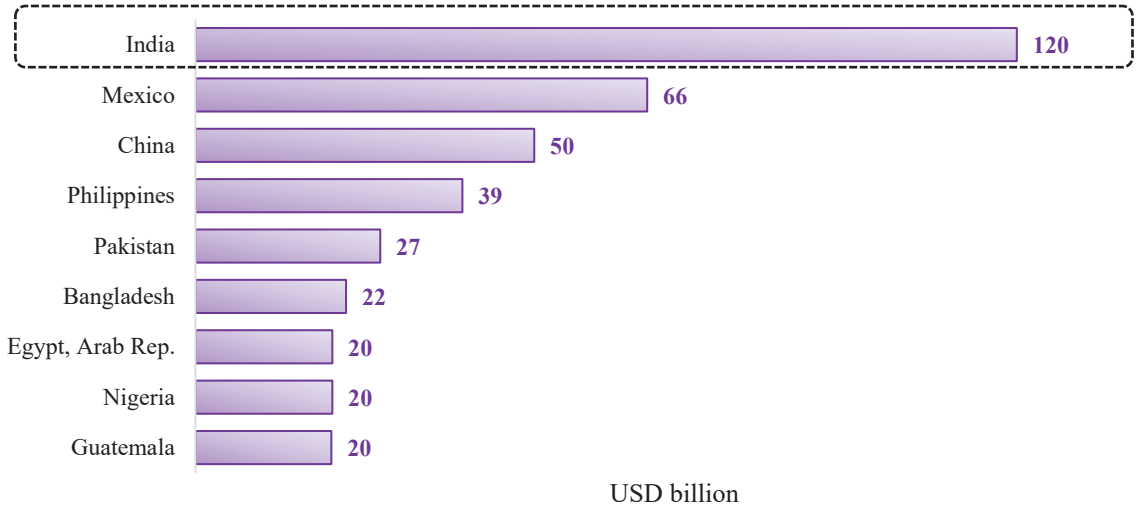

स्रोत: विश्व बैंक

4.56 सीमा पार लेनदेन के लिए दिरहम और रुपये के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त अरब अमीरात के साथ किए गए करार से भी प्रेषण प्रवाह को लाभ हुआ है। भारत में प्रेषित धनराशि वर्ष 2024 में 3.7 प्रतिशत बढ़कर 124 बिलियन अमेरिकी डॉलर और वर्ष 2025 में 4 प्रतिशत बढ़कर 129 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। दक्षिण एशियाई प्रेषण में भारत की हिस्सेदारी वर्ष 2023 में बढ़कर 64.5 प्रतिशत हो गई, जो वर्ष 2022 में 63 प्रतिशत थी।[87]

4.57 प्रेषण एफडीआई से भिन्न होते हैं, जिसे कंपनियाँ वित्तीय अनिश्चितताओं के दौरान निकासी कर सकती हैं। आर्थिक मंदी के समय में, एफडीआई को चक्रीय और अस्थिर माना जाता है। प्रेषण वित्त का स्थिर स्रोत है जो अर्थव्यवस्था में बना रहेगा और प्राप्तकर्ताओं द्वारा सीधे उपयोग किया जाता है और जो देश के विकास में योगदान देता है। बीओपी के दृष्टिकोण से, प्रेषण स्थायी विदेशी मुद्रा प्रवाह हैं और वास्तविक व्यापार घाटे को वित्तपोषित करने में मदद करते हैं, जो सीएडी को कम करने में योगदान देता है। भारत जैसे निवल आयातकों के लिए उच्च प्रेषण आंशिक रूप से पण्य व्यापार घाटे की भरपाई करते हैं और सीएडी को स्थिर करते हैं।

86 प्रवासन और विकास संक्षिप्त 40, जून 2024, https://www.knomad.org/sites/default/files/publication-doc/migration-and-development-brief-40_2.pdf
87 आईवीआईडी

चार्ट IV.23: उच्चतर प्रेषण से माल व्यापार घाटे की भरपाई होगी और सीएडी स्थिर होगा

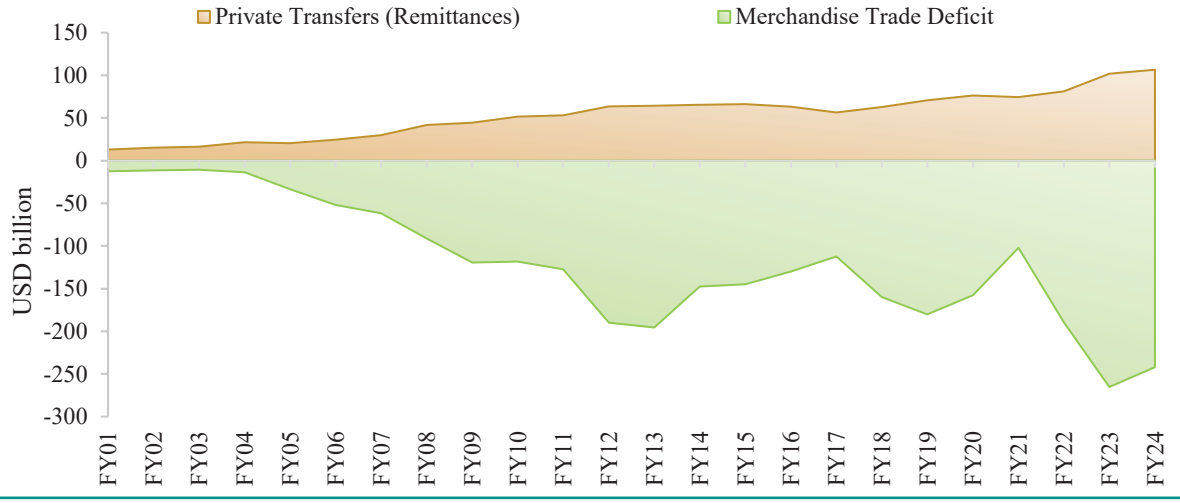

स्रोत: चार्ट संख्या 196, 'भारत का समग्र भुगतान संतुलन-तिमाही-यूएसडी डॉलर', विदेशी क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था की सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई
चार्ट संख्या 192, 'भारत का विदेशी व्यापार-यूएसडी डॉलर', विदेशी क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था की सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई
टिप्पणी: आरबीआई द्वारा जारी किए गए बीओपी डेटा में निजी अंतरण को प्रेषण के रूप में माना जाता है

बॉक्स IV.5: प्रेषण को प्रभावित करने वाले कारक

कोविड-19 महामारी की शुरुआत के बाद आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के उच्च आय वाले देशों में नौकरी बाजारों की मजबूत रिकवरी, प्रेषण का प्रमुख चालक रही है, विशेष रूप से रिकवरी के दौरान रोजगार में वृद्धि हुई थी। मूल निवासियों की तुलना में आप्रवासियों के लिए यह अधिक तीव्र है। हालाँकि, 2022 में 24.4 प्रतिशत के ऐतिहासिक शिखर की तुलना में 2023 में प्रेषण वृद्धि 7.5 प्रतिशत थी।

भारत में आने वाले धन प्रेषण की सीमा को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारकों पर नीचे चर्चा की गई है।

प्रेषण और तेल की कीमतें- भारत अपनी कच्चे तेल की मांग का एक बड़ा हिस्सा आयात से पूरा करता है, और वैश्विक तेल की कीमतों में वृद्धि अर्थव्यवस्था के लिए बड़ा झटका है क्योंकि इससे सीएडी का विस्तार, मुद्रास्फीति में वृद्धि और रुपया कमजोर होता है। जैसा कि मौद्रिक नीति रिपोर्ट (अक्टूबर 2018) में बताया गया है, ष्यह अनुमान लगाया गया है कि कच्चे तेल की एक बैरल की कीमत में प्रत्येक 1 अमेरिकी डॉलर की वृद्धि होने के, भारत का चालू खाता घाटा 0.8 बिलियन अमेरिकी डालर तक बढ़ सकता हैष। तथापि, वैश्विक तेल की कीमतों में वृद्धि आम तौर पर देश द्वारा प्राप्त प्रेषण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि भारत के प्रेषण का प्राथमिक स्रोत तेल निर्यातक देश हैं। प्रेषण और तेल की कीमतों पर तिमाही आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत में दोनों के बीच 75.4 प्रतिशत का सकारात्मक संबंध है। मुमकिन प्रक्रिया निम्नानुसार है: तेल की कीमतों में वृद्धि (सकारात्मक झटका) भारी मात्रा में तेल राजस्व सृजित कर सकती है, जिससे तेल उत्पादक देशों में उच्च निवेश और विकास हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप, प्रवासी श्रमिकों की मांग बढ़ जाती है, जिससे उच्च प्रेषण बहिर्वाह होता है।[88] दूसरी ओर, लगातार कम तेल की कीमतें (प्रतिकूल झटके) तेल राजस्व को कम करके तेल निर्यातक अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक गतिविधियों में बाधा डाल सकती हैं। इसके अनुरूप, प्रवासी श्रमिकों की मांग कम हो जाती है और जो इसके बदले में प्रवासी श्रमिक देशों में प्रेषण बहिर्वाह को कम कर सकती है।

88 उपरोक्त टिप्पणी 86

चार्ट IV.24: आगे इस सहसंबंध की पुष्टि करती है, क्योंकि तेल की कीमतों में वृद्धि की अवधि उच्च प्रेषण से जुड़ी होती है

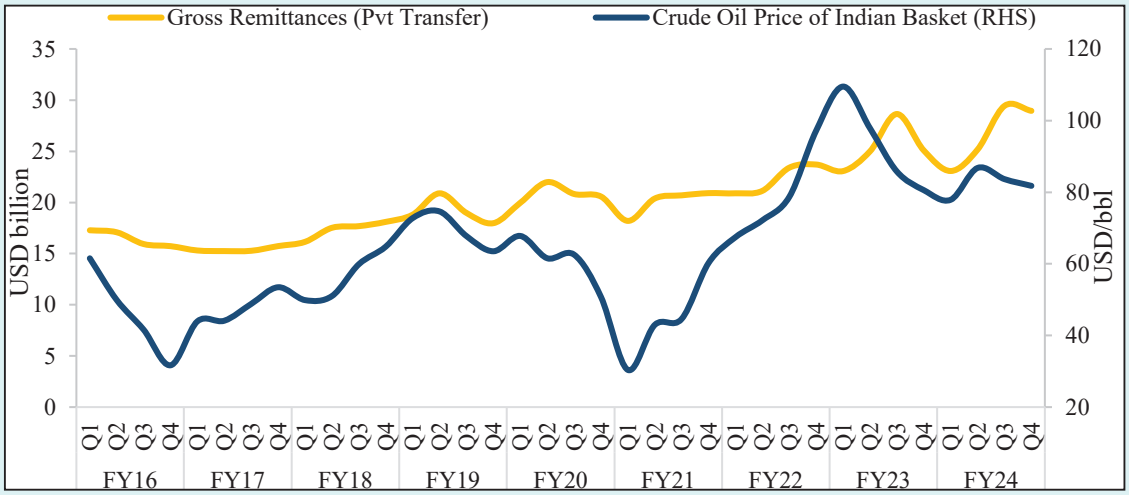

स्रोत: सारणी संख्या 196, श्भारत का समग्र बकाया भुगतान संतुलन-त्रैमासिक-अमेरिकी डालर डॉलरश, विदेशी क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था की सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई

कच्चे तेल एफओबी मूल्य (इंडियन बास्केट), पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी)

कच्चे तेल एफओबी मूल्य (इंडियन बास्केट), पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी)

प्रेषण और विनिमय दर- उच्च सीएडी के परिणामस्वरूप विदेशी मुद्रा की मांग में वृद्धि होती है और घरेलू मुद्रा की आपूर्ति में वृद्धि होती है क्योंकि फर्म और उपभोक्ता अधिक आयात करते हैं। यह विनिमय दर पर नीचे की ओर दबाव डालता है। दूसरी ओर, प्रेषकों को रुपये के संदर्भ में बेहतर मूल्य मिलता है जब यह विदेशी मुद्राओं के संदर्भ में मूल्यह्रास करता है, चाहे वह संयुक्त अरब अमीरात के दिरहम, अमेरिकी डॉलर, ब्रिटिश पाउंड या किसी अन्य मुद्रा ही क्यों न हो।

चार्ट IV.25: भारतीय रुपये/अमेरिकी डालर और प्रेषण का सकारात्मक संघ

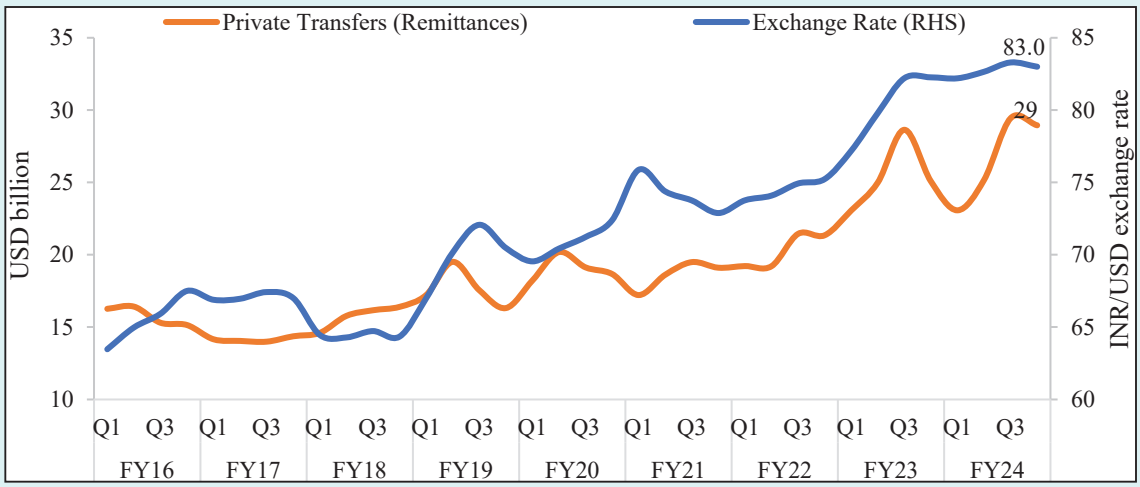

स्रोत: चार्ट संख्या 196, 'भारत का समग्र बकाया भुगतान -त्रैमासिक-अमेरिकी डालर डॉलर', विदेशी क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था की सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई

चार्ट संख्या 200, एसडीआर, अमेरिकी डॉलर, पाउंड स्टर्लिंग, यूरो और जापानी येन, विदेशी क्षेत्र, की तुलना में भारतीय रुपये की विनिमय दर भारतीय अर्थव्यवस्था की सांख्यिकी की पुस्तिका, आरबीआई

विदेश में कमाए गए प्रत्येक अमेरिकी डॉलर के लिए श्रमिक आवश्यक रूप से उस विदेशी भूमि के अनुसार राशि परिवर्तित होने के बाद बढ़ी हुई राशि पाता है जिसमें वह काम करता है। अत: विप्रेषणों में विनिमय दर में उतार-चढ़ाव

के साथ सकारात्मक संबंध देखा गया है। प्रेषण और विनिमय दर की तिमाही आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत में 91 प्रतिशत का सकारात्मक सहसंबंध मौजूद है। चार्ट IV.25 में आगे इस सहसंबंध की पुष्टि करती है, क्योंकि विनिमय दर मूल्यह्रास की अवधि उच्च प्रेषण से जुड़ी होती है।

संभावना – वर्ष 2024 में भारत की धन प्रेषण संभावना मजबूत है जिससे यह उम्मीद है कि धन प्रेषण वृद्धि 3.7 प्रतिशत तक कम हो जाएगी और इससे वर्ष 2024 में धन प्रेषण का स्तर 124 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगा। भारत के प्रवासी पूल का उच्च आय वाले ओईसीडी बाजारों में कार्यरत अत्यधिक कुशल प्रवासियों के बड़े हिस्से और जीसीसी बाजारों में कार्यरत कम कुशल प्रवासियों के बीच विविधीकरण विदेशी झटकों की स्थिति में प्रवासियों के धन प्रेषण को स्थिरता प्रदान करने की संभावना है। संयुक्त अरब अमीरात और सिंगापुर जैसे स्रोत देशों के साथ अपने एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई) को जोड़ने के भारत के प्रयासों से लागत कम होने और धन प्रेषण में तेजी आने की उम्मीद है।[89]

पूंजीगत खाता शेष

4.58 स्थिर पूंजी निरंतर अंतर्वाह सीएडी का वित्तपोषण करता है। वित्त वर्ष 24 के दौरान, निवल पूंजी प्रवाह पिछले वर्ष को 58.9 बिलियन अमेरिकी डालर की तुलना में 86.3 बिलियन अमेरिकी डालर था, जो मुख्य एफपीआई प्रवाह और बैंकिंग पूंजी (एनआरआई डिपॉजिट सहित) के निवल प्रवाह के कारण था।

4.59 निवल एफपीआई प्रवाह में वित्त वर्ष 24 में महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया। आशावाद द्वारा प्रेरित भारत की विकास कहानी, प्रगतिशील नीतिगत सुधार, आर्थिक स्थिरता, राजकोषीय निर्णय और आकर्षक निवेश मार्गों के कारण भारत में वित्त वर्ष 24 के दौरान मजबूत एफपीआई प्रवाह देखा गया। निवल एफपीआई प्रवाह वित्त वर्ष 24 के दौरान पिछले दो वर्षों को निवल बहिर्वाह की तुलना में 44.1 बिलियन अमेरिकी डालर था। यह वित्त वर्ष 2015 के बाद एफपीआई प्रवाह का सबसे ऊंचा स्तर है। भारत ने वित्त वर्ष 24 के दौरान अपने साथी उभरते बाजारों की तुलना में अधिकतम इक्विटी प्रवाह प्राप्त किया। वित्त वर्ष 24 के दौरान वित्तीय सेवाएं, ऑटोमोबाइल और ऑटो घटक, स्वास्थ्य सेवा और पूंजीगत वस्तुएं इक्विटी प्रवाह को आकर्षित करने वाले महत्वपूर्ण क्षेत्र थे। जेपी मॉर्गन गवर्नमेंट बॉन्ड इंडेक्स-इमर्जिंग मार्केट्स में भारत के सॉवरेन बॉन्ड को हाल ही में शामिल किए जाने से भविष्य में ऋण प्रवाह में वृद्धि होने की उम्मीद है तथा इससे भारत में और अधिक निवेश की मांग में भी वृद्धि होगी।[90]

चार्ट IV.26(क): भारत में निवल एफपीआई प्रवाह

स्रोत: भुगतान संतुलन सांख्यिकी, आरबीआई

चार्ट IV.26(ख): वित्त वर्ष 24 के दौरान उभरते बाजार के साथियों के बीच निवल इक्विटी प्रवाह

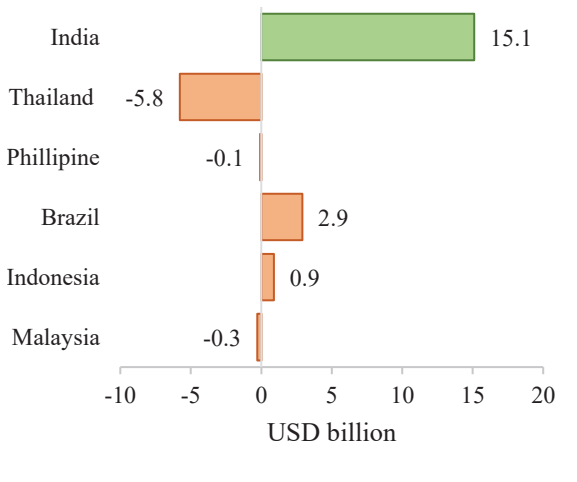

स्रोत: ब्लूमबर्ग

89 प्रवासन और विकास संक्षिप्त 40, विश्व बैंक।

90 21 सितंबर, 2023 को, जेपी मॉर्गन ने 28 जून, 2024 से अपने बेंचमार्क उभरते बाजार सूचकांक यानी जेपी मॉर्गन सरकारी बॉन्ड इंडेक्स-उभरते बाजारों में भारत सरकार के बांड को शामिल करने की घोषणा की।

4.60 यूएनसीटीएडी वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट 2024[91] में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि वैश्विक एफडीआई वर्ष 2022 में 1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से 2 प्रतिशत घटकर वर्ष 2023 में 1.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई है। विकास की कम संभावनाएं, आर्थिक मंदी के रुझान, व्यापार और भू-राजनीतिक तनाव, औद्योगिक नीतियां और आपूर्ति श्रृंखला में विविधीकरण एफडीआई पैटर्न को नया रूप प्रदान कर रहे हैं, जिससे कुछ बहुराष्ट्रीय उद्यम (एमएनई) विदेशी विस्तार के लिए सावधानीपूर्वक दृष्टिकोण अपना रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय परियोजना वित्त और सीमा पार विलय और अधि ग्रहण (एमएंडएएस) वर्ष 2023 में विशेष रूप से कमजोर थे। विकसित देशों में मुख्यत: एफडीआई को प्रभावित करने वाले एमएंडएएस के मूल्य में 46 प्रतिशत की गिरावट आई है। अवसंरचना निवेश के लिए महत्वपूर्ण परियोजना वित्त 26 प्रतिशत नीचे था। कसी हुई वित्तपोषण की स्थिति, निवेशकों की अनिश्चितता, वित्तीय बाजारों में अस्थिरता और मजबूत नियामक जांच गिरावट के प्रमुख कारण थे। तथापि, ग्रीनफील्ड निवेश परियोजना की घोषणा ने आगे का मार्ग प्रशस्त किया, जिसमें परियोजनाओं की संख्या में 2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसमें विनिर्माण को बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया गया था।

चार्ट IV-27(क): प्रत्यावर्तन में वृद्धि के कारण वित्त वर्ष 24 में निवल एफडीआई प्रवाह में कमी

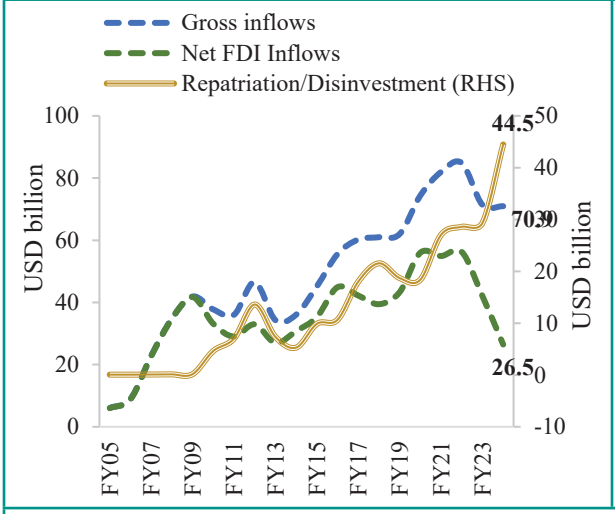

चार्ट IV.27(ख): जीडीपी के प्रतिशत के रूप में निवल एफडीआई प्रवाह में गिरावट

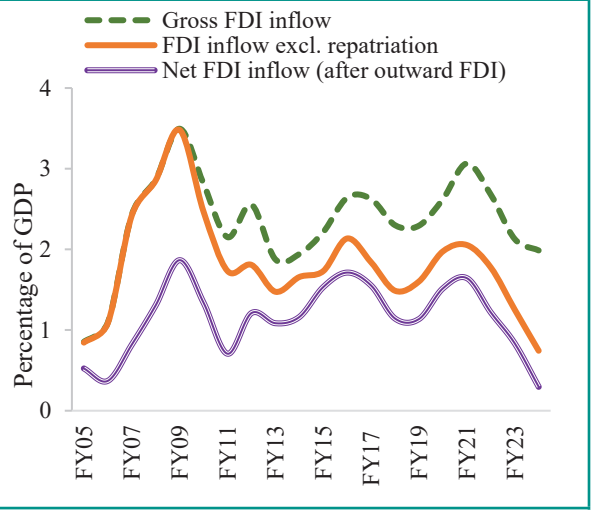

स्रोत: भुगतान संतुलन सांख्यिकी, आरबीआई[92]

4.61 वैश्विक एफडीआई प्रवाह में हुई गिरावट ने भारत की एफडीआई प्रवाह को भी प्रभावित किया है। भारत में निवल[93] एफडीआई प्रवाह वित्त वर्ष 23 के दौरान 42.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर से घटकर वित्त वर्ष 24 में 26.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। तथापि, सकल एफडीआई प्रवाह वित्त वर्ष 23 में 71.4 बिलियन अमेरिकी डालर से केवल 0.6 प्रतिशत घटकर वित्त वर्ष 24 में 71 बिलियन अमेरिकी डालर से कम हो गया। दूसरे शब्दों में, भारत में निवेशकों की रुचि में कोई बदलाव नहीं आया। निवल अंतर्वाहों में कमी मुख्यत: अनेक लाभप्रद बहिर्गमन के कारण प्रत्यावर्तन/विनिवेश में वृद्धि के कारण हुआ था। कोई बाजार जो निवेशकों को लाभ लेने और अपने निवेश से बाहर की अनुमति देता है, वह सबसे अच्छा बाजार है। यही कारण है कि निवेश का प्रत्यावर्तन वित्त वर्ष 23 में 29.3 बिलियन अमेरिकी डालर से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 44.5 बिलियन अमेरिकी डालर हो गया। हाल के वर्षों में एफडीआई प्रवाह में गिरावट विकसित देशों में उच्च ब्याज दरों और तेजी से बढ़ते शेयर बाजार के कारण तथा भारत से आकर्षक निकासी के कारण भी है।

एफडीआई प्रवाह की प्रवृत्ति और संरचना में परिवर्तन की जांच

उद्योग बनाम सेवा क्षेत्र में एफडीआई

91 यूएनसीटीएडी विश्व निवेश रिपोर्ट 2024-निवेश सुविधा और डिजिटल सरकार, https://unctad.org/system/files/official-document/wir2024_overview_en.pdf

92 यहां RBI डेटा का उपयोग किया गया है क्योंकि DPIIT स्वदेश वापसी/विनिवेश पर डेटा नहीं देता है

93 निवल एफडीआई प्रवाह = सकल एफडीआई प्रवाह-प्रत्यावर्तन/विनिवेश

4.62 प्रमुख क्षेत्रों में एफडीआई इक्विटी अंतर्वाह की गहन जांच से यह पता चलता है कि हाल के वर्षों में उद्योग और सेवा क्षेत्रों[94] में एफडीआई अंतर्वाह कमजोर हुआ है। वास्तव में, इन दोनों क्षेत्रों के लिए, एफडीआई-से-जीडीपी अनुपात पूर्व-महामारी के स्तर से नीचे गिर गया है। सकल घरेलू उत्पाद में उद्योग क्षेत्रों की एफडीआई की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 20 में 0.62 प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष 24 में 0.39 प्रतिशत हो गई। इसी अवधि के दौरान, सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का हिस्सा 0.87 प्रतिशत से गिरकर 0.69 प्रतिशत हो गया।

चार्ट IV.28: उद्योग और सेवाओं दोनों में एफडीआई इक्विटी अंतर्वाह में प्रवृत्ति

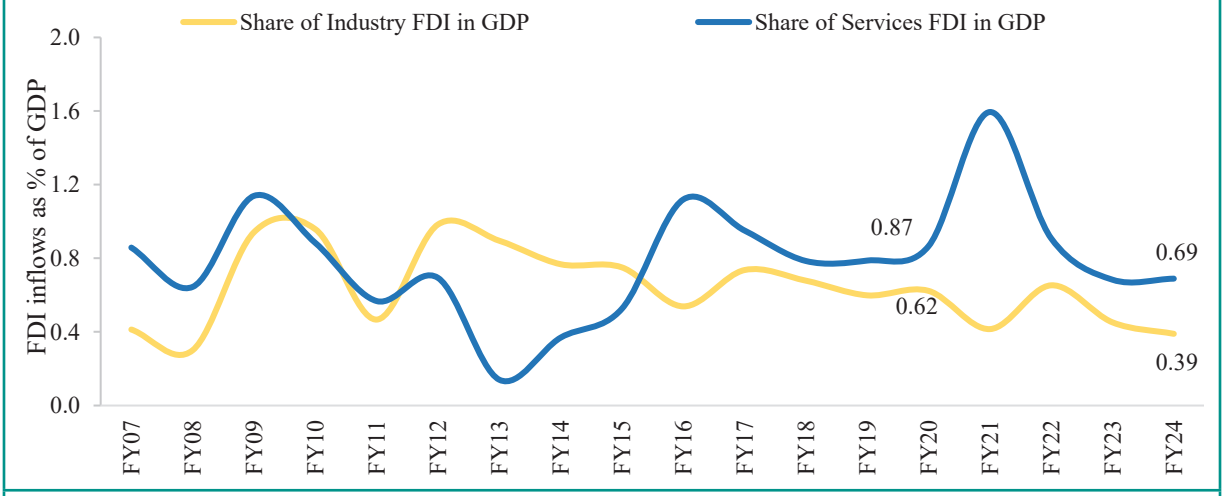

स्रोत: एफडीआई सांख्यिकी, डीपीआईआईटी

वास्तविक एफडीआई बनाम डिजिटल एफडीआई

4.63 एफडीआई प्रवाह को आगे के विश्लेषण के लिए वास्तविक और डिजिटल में विभाजित किया जा सकता है। वास्तविक एफडीआई में ऑटोमोबाइल, औषध और विनिर्माण जैसे क्षेत्र शामिल हैं, जबकि डिजिटल एफडीआई में कंप्यूटर सेवाएं, दूरसंचार, परामर्श सेवाएं और सूचना और प्रसारण शामिल हैं।[95] कुछ वर्ष पहले (वित्त वर्ष 14) वास्तविक एफडीआई डिजिटल एफडीआई के मूल्य का लगभग तीन गुना था। अन्य बातों के साथ-साथ सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, परामर्श सेवाओं और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में विदेशी निवेश में वृद्धि के कारण, डिजिटल एफडीआई में वृद्धि देखी गई, जबकि वास्तविक एफडीआई में सापेक्ष गिरावट देखी गई है।

4.64 नोमुरा का ग्लोबल मार्केट रिसर्च मई 2024, श्एशियाज न्यू फ्लाइंग गीजश्, इस बात पर प्रकाश डालता है कि बढ़ते संरक्षणवाद और भू-राजनीतिक तनाव ने वास्तविक एफडीआई की स्थिरता से ऊपर छलांग लगाई है। इस प्रवृत्ति को बढ़ाने वाला कारक अंतरराष्ट्रीय उत्पादन के गैर-इक्विटी मोड का बढ़ता प्रचलन है, जैसे कि संविदा विनिर्माण, तीसरे पक्ष की आउटसोर्सिंग या फ्रेंचाइजिंग। इन परिदृश्यों के अंतर्गत, जबकि अर्थव्यवस्थाएं जीवीसी में अधिक एकीकृत हो सकती हैं, अत: इसे एफडीआई आंकड़ों में परिलक्षित नहीं किया जा सकता है। महामारी के दौरान, घर से काम करने की संस्कृति को बढ़ने और कुशल डिजिटल अवसंरचना की उपलब्धता के कारण कुल एफडीआई में डिजिटल सेवाओं की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई थी। इसके परिणामस्वरूप, कुल एफडीआई में डिजिटल एफडीआई की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 17 में 46.6 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष 21 में 69.2 प्रतिशत हो गई। तथापि, हाल के दिनों में डिजिटल और वास्तविक एफडीआई दोनों में गिरावट हो रही है। डिजिटल एफडीआई में गिरावट का टेक स्टार्ट-अप से सीधा संबंध है। महामारी के दौरान वृद्धि के बाद, टेक स्टार्ट-अप में वैश्विक प्रवाह कम हुआ है और उस प्रवाह की वैश्विक प्रवृत्ति भारत में भी देखने को मिलती है।

94 उद्योग में ड्रग्स और औषध, ऑटोमोबाइल उद्योग, रसायन, निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक्स आदि जैसे क्षेत्र शामिल हैं। सेवाओं में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, बैंकिंग और बीमा सेवाएँ, दूरसंचार, परामर्श सेवाएँ आदि जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

95 संदर्भ: एचएसबीसी ग्लोबल रिसर्च: भारत का एफडीआई रहस्य, बदलती सीमाएं, https://www.hsbc.co.in/wealth/insights/market-outlook/india-economics/2024-01/

चार्ट IV.29(क): कुल एफडीआई में वास्तविक और डिजिटल एफडीआई का हिस्सा

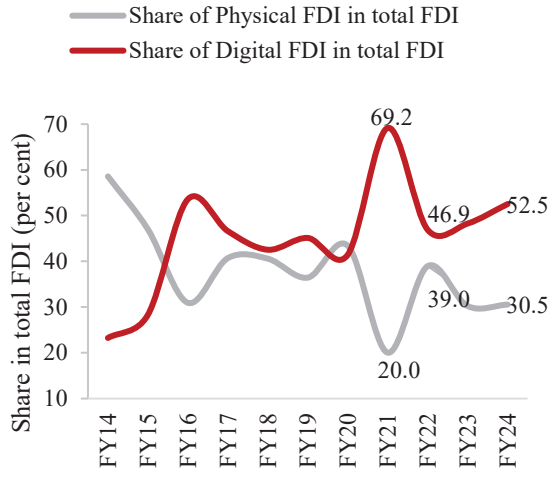

स्रोत: एफडीआई सांख्यिकी, डीपीआईआईटी

चार्ट IV-29(ख): टेक स्टार्ट-अप में वैश्विक पूंजी प्रवाह

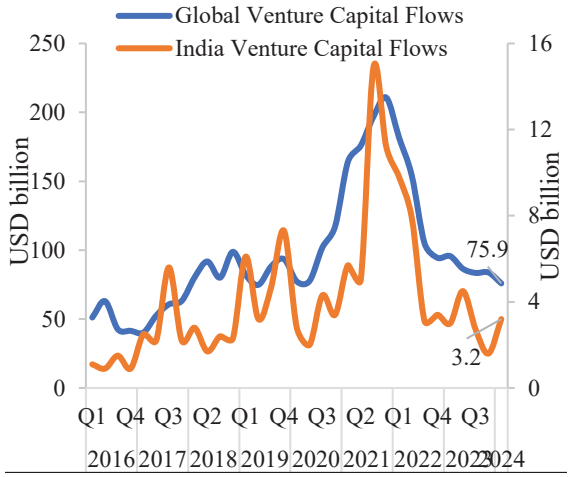

स्रोत: केपीएमजी वेंचर पल्स रिपोर्ट

वास्तविक एफडीआई बनाम लक्ष्य

4.65 भारत में घटते एफडीआई प्रवाह वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात में वैश्विक व्यापार में भारत की बाजार हिस्सेदारी के लक्ष्य को करने के अनुकूल नहीं हैं। इस संदर्भ में, एफडीआई प्रवाह और निवेश अभिप्राय के बीच संबंध को समझने के लिए एक प्रयास किया गया। लक्ष्यों का अनुमान लगाने के लिए आंकड़े संबंधी दो स्रोतों का उपयोग किया गया है। पहला घोषित ग्रीनफील्ड एफडीआई परियोजनाओं पर यूएनसीटीएडी आंकड़ा है; दूसरा सीएमआईई द्वारा घोषित विदेशी निजी क्षेत्र की परियोजनाएं हैं।[96]

चार्ट IV.30(क): भविष्य के एफडीआई अंतर्वाह के भविष्यवक्ता के रूप में निवेश का लक्ष्य

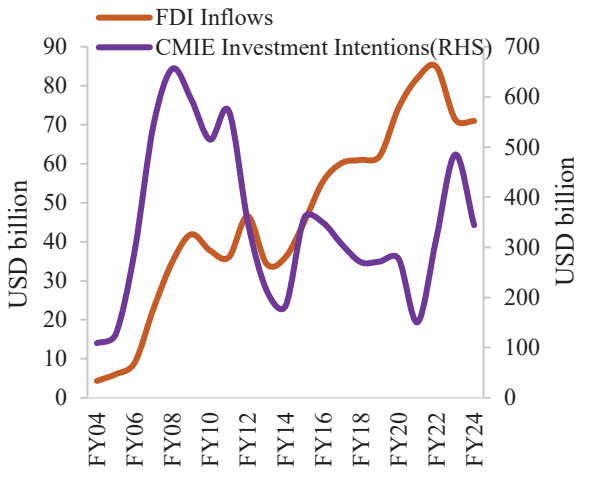

स्रोत: एफडीआई लक्ष्यों के लिए सीएमआईई, एफडीआई अंतर्वाह के लिए डीपीआईआईटी

चार्ट IV.30(ख): एफडीआई प्रवाह और सभी क्षेत्रों के एफडीआई की एकाग्रता के बीच सकारात्मक सहसंबंध

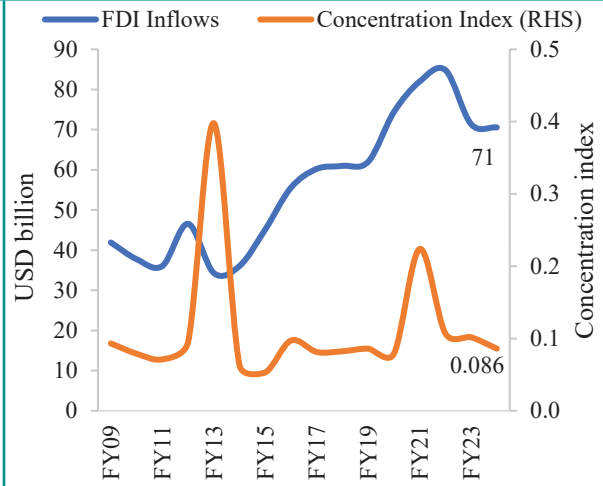

स्रोत: डीपीआईआईटी और स्वयं की गणना

96 यूएनसीटीएडी आंकड़े केवल ग्रीनफील्ड निवेशों को संदर्भित करता है, जबकि सीएमआईई डेटाबेस में विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं। यूएनसीटीएडी आंकड़े तब रिकॉर्ड किए जाते हैं जब यह स्पष्ट संकेत देता है कि नौकरियां और नए पूंजीगत व्यय का सृजन होगा, जबकि सीएमआईई में आवश्यक लाइसेंस या भूमि प्राप्त/अधिग्रहित होने या वित्तपोषण तय होने से पहले की परियोजनाओं को भी शामिल किया जाता है।

4.66 समय के साथ, सभी क्षेत्रों में निवेश के लक्ष्यों में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। जबकि कंप्यूटर और रसायन जैसे उद्योगों में निवेश के लक्ष्य आसान हो गए हैं, नए और भविष्य के क्षेत्रों में निवेश के लक्ष्य बढ़ रहे हैं।[97] हाल की तिमाहियों में, नए और भविष्य के क्षेत्रों में निवेश के लक्ष्यों, जैसे कि नवीकरणीय, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा केंद्र, ईवीएस और बैटरी, ग्रीन हाइड्रोजन और सेमीकंडक्टर तेजी से बढ़े हैं। भारत वर्ष 2022 में एआई से संबंधित एफडीआई के लिए एक प्रमुख गंतव्य था, वर्ष 2022 में एआई से संबंधित 122 एफडीआई परियोजनाएँ प्राप्त हुई, जिसमें एबीबी, एसेसयोर, डेलॉयट, आईबीएम और माईक्रोसॉफ्ट जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने देश में निवेश की घोषणा की।[98] नैसकॉम के शोध के अनुसार, भारत अपेक्षाकृत कम परिचालन लागत और अत्यधिक कुशल एआई, मशीनी शिक्षण और बड़े आंकड़े संबंधी श्रमिकों के दुनिया के दूसरे सबसे बड़े पूल के कारण एआई निवेश के लिए आकर्षक स्थान है।[99]

4.67 सीएमआईई निवेश लक्ष्यों और ग्रीनफील्ड परियोजनाओं पर यूएनसीटीएडी संबंधी आंकड़ों की विस्तृत जांच से पता चलता है कि इन आंकड़ों संबंधी स्रोतों के बीच 56 प्रतिशत से अधिक का मजबूत सहसंबंध मौजूद है। चार्ट IV.30क यह दर्शाती है कि निवेश के लक्ष्य भविष्य के एफडीआई अंतर्वाहों के अच्छे भविष्यवक्ता रहे हैं। एफडीआई प्रवाह ने वित्त वर्ष 15 तक सीएमआईई निवेश लक्ष्यों के समान दिशा का पालन किया; तथापि वित्त वर्ष 2016 में यह प्रवृत्ति भिन्न हो गई।

4.68 हर्शमैन-हर्फिंडाहल सूचकांक (एचएचआई)[100] का उपयोग करते हुए एफडीआई एकाग्रता का अनुमान कुल एफडीआई अंतर्वाह और एकाग्रता सूचकांक के बीच सकारात्मक सहसंबंध पर प्रकाश डालता है, जिसका अर्थ है कि जिन वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था में एफडीआई अंतर्वाह में वृद्धि देखी गई थी, एफडीआई केवल कुछ क्षेत्रों में केंद्रित था और यह सभी क्षेत्रों में व्यापक नहीं था और इसके विपरीत था।

4.69 भारत के पास चुनिंदा क्षेत्रों अर्थात, ग्रीनफील्ड परियोजनाएं जैसे नवीकरणीय, दूरसंचार, सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर जैसे डिजिटल सेवाएं और परामर्श सेवाएं में एफडीआई को आकर्षित करने के लिए सुव्यवस्थित अवसंरचना है तथापि, यह विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न हो सकता है। इसलिए, जहां निवेश के लक्ष्य अधिक हैं, उन क्षेत्रों को निवेश के लिए अधिक सुलभ बनाया जाना चाहिए। विशेष रूप से, उन सभी क्षेत्रों में व्यापारिक सुगमता को बढ़ाने और केवल एफडीआई के लिए आकर्षक क्षेत्रों से आगे बढ़ने पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए। तथापि श्व्यापारिक सुगमताश के संबंध में सुलभ कार्य पिछले कुछ वर्षों में पहले ही किए जा चुके हैं, लेकिन आगे के काम सरकार के राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय सभी स्तरों और विनियामकों के हाथों में हैं।

4.70 अप्रैल 2024[101] में ब्लूमबर्ग के एक लेख में कहा गया है कि भारत केवल एफडीआई आकर्षित करने के लिए अन्य विकासशील देशों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहा है। यह उन उन्नत देशों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहा है जो अब सक्रिय रूप से और आक्रामक रूप से औद्योगिक नीतियों का अनुसरण करते हैं जो व्यवसायों को सब्सिडी देकर घरेलू निवेश को विशेषाधिकार देते हैं ताकि उन्हें विदेशों में निवेश करने से रोका जा सके और अन्य विदेशी निवेशकों को लुभाया जा सके जो अन्यथा भारत जैसे उभरते देशों में निवेश करने पर विचार कर सकते हैं। अनुसंधान एवं विकास संस्कृति, राजनीतिक स्थिरता, नीति पूर्वानुमान और स्थिरता, उचित शुल्क और कर, विवाद समाधान तंत्र और प्रत्यावर्तन में सरलता के अलावा शिक्षित श्रमबल और कुशल कार्यबल महत्वपूर्ण बिन्दु हैं। भारत ने पिछले कुछ वर्षों में इनमें से कई क्षेत्रों में काफी प्रगति की है। कुछ अन्य क्षेत्रों में काम अधूरे हो सकते हैं। लेकिन, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत में सतत निवेशक हित और परिणामी ज्ञान और जानकारी का मार्ग बेहतर शैक्षिक और कौशल परिणामों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

4.71 बॉक्स IV.6 में यह चर्चा की गई है कि चीन से एफडीआई प्रवाह में वृद्धि कैसे निर्यात को बढ़ावा देने के साथ-साथ भारत की वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भागीदारी बढ़ाने में मदद कर सकती है।

---

97 सीएमआईई निवेश लक्ष्यों के के अनुसार आंकड़ें क्षेत्रवार है

98 एआई में एफडीआई के लिए वैश्विक प्रवृत्ति, https://www.investmentmonitor.ai/features/what-are-the-global-trends-for-fdi-in-ai/?cf-view

99 नैसकॉम रणनीतिक रिपोर्ट-पुनरुत्थान के लिए तन्यक: भारत में प्रौद्योगिकी क्षेत्र 2022, https://nasscom.in/knowledge-center/publications/technology-sector-india-2022-strategic-review

100 हर्शमैन हर्फिंडाल इंडेक्स की गणना कुल एफडीआई प्रवाह में प्रत्येक क्षेत्र की हिस्सेदारी के वर्गों के योग को लेकर की गई है

101 'विदेशी निवेश की लड़ाई में बिडेन ने मोदी को पछाड़ा', ब्लूमबर्ग, 4 अप्रैल 2024 (https://www.bloomberg.com/news/newsletters/2024-04-04/modi-vs-biden-why-foreign-investment-into-india-is-still-declining)

बॉक्स IV.6: चीन प्लस वन रणनीति

पिछले पाँच वर्षों में वैश्विक विनिर्माण क्षेत्र में बहुत बड़ा बदलाव आया है, जिसमें एप्पल और अन्य प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ चीन से खुद को 'जोखिम मुक्त' करने की कोशिश कर रही हैं, जिसे पारंपरिक रूप से 'दुनिया की फैक्ट्री' के रूप में जाना जाता था। यह बदलाव मुख्य रूप से कोविड-19 के कारण होने वाले व्यवधानों, अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते तनाव और चीन में व्यापार करने की बढ़ती लागतों के कारण हुआ है। इसके परिणामस्वरूप, कई कंपनियों ने उच्च तकनीक वाले इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों और घटकों के लिए चीन पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए 'चीन प्लस वन रणनीति' अपनाई है। इस दृष्टिकोण में चीन के प्रति अपने जोखिम को कम करने के लिए आपूर्ति श्रृंखला निर्णय शामिल हैं। उदाहरण के लिए वर्ष 2023 में बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप द्वारा सर्वेक्षण किए गए उत्तरी अमेरिका के 90 प्रतिशत से अधिक निर्माताओं ने अपने कुछ या सभी उत्पादन को मैक्सिको, थाईलैंड और वियतनाम जैसे अन्य देशों में स्थानांतरित कर दिया, जो चीन से दूर जाने का संकेत देता है।[102]

क्या भारत इस 'चीन प्लस वन' रणनीति से लाभान्वित हो सकता है? भारत का आकर्षण इसके बड़े घरेलू उपभोक्ता बाजार में निहित है, जो कंपनियों के लिए वहां परिचालन स्थापित करना आकर्षक बनाता है। इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में स्मार्टफोन निर्माण और असेंबली पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। कर छूट और सब्सिडी सहित सरकार की पीएलआई योजना कंपनियों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में स्मार्टफोन की घरेलू मांग में वृद्धि भी कंपनियों के वहां निवेश करने के निर्णय का महत्वपूर्ण कारक है। उदाहरण के लिए एप्पल ने वित्त वर्ष 24 के दौरान भारत में 14 बिलियन अमरीकी डॉलर के आईफोन असेंबल किए, जो इसके वैश्विक आईफोन उत्पादन का 14 प्रतिशत है।[103] फॉक्सकॉन ने कर्नाटक और तमिलनाडु में एप्पल मोबाइल फोन का उत्पादन शुरू कर दिया है।[104]

हालांकि भारत चीन से व्यापार मोड़ का तत्काल लाभार्थी नहीं हो सकता है, लेकिन समय के साथ इसके इलेक्ट्रॉनिक निर्यात में पर्याप्त वृद्धि देखी गई है। पीएलआई योजना का कार्यान्वयन इस वृद्धि का प्रमुख चालक रहा है। उदाहरण के लिए, भारत का इलेक्ट्रॉनिक निर्यात यूएसए को वित्त वर्ष 17 में 0.6 बिलियन अमरीकी डॉलर के व्यापार घाटे से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 8.7 बिलियन अमरीकी डॉलर के व्यापार अधिशेष में बदल गया है, जो मूल्य संवर्धन में उल्लेखनीय वृद्धि को रेखांकित करता है। इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में, जिस श्रेणी में सबसे अधिक वृद्धि हुई है, वह है मोबाइल फोन, जिसका निर्यात यूएसए को वित्त वर्ष 23 में 2.2 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 5.7 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया।

जैसा कि भारत वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (जीवीसी) में अपनी भागीदारी को बढ़ाना चाहता है और इसलिए वह पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं की सफलताओं और रणनीतियों को देखेगा। इन अर्थव्यवस्थाओं ने आम तौर पर दो मुख्य रणनीतियों का अनुसरण किया है: व्यापार लागत को कम करना और विदेशी निवेश को सुविधाजनक बनाना। यह देखते हुए कि जीवीसी को लागत को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है, मलेशिया, वियतनाम और ताइवान जैसे देशों ने समय के साथ अपनी व्यापार लागत को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया है। भारत के लिए, लॉजिस्टिक दक्षता में सुधार प्रमुख केन्द्र बिन्दु रहा है, जैसा कि विश्व बैंक के एलपीआई पर भारत के अंक में उल्लेखनीय वृद्धि से यह स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है (जैसा कि पैरा 4.49 में चर्चा की गई है)। निवेश सुविधा पर केंद्रित दूसरी रणनीति में विदेशी निवेश को बढ़ाने और इसे स्थिर करने के लिए कार्रवाई की गई है। उदाहरण के लिए पीएलआई योजना कंपनियों के अनुपालन हेतु बाजार से जुड़ी प्रोत्साहन प्रणाली की पेशकश करके उच्च गुणवत्ता वाले विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करती है।

मध्यम अवधि में, भारत अपनी मूल्य शृंखला को पश्चिम के साथ एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा और उन्नत प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अर्धचालक और भविष्य के

102 बोस्टन कंसल्टेंसी ग्रुप का लेख, 'वैश्विक विनिर्माण में टेक्टोनिक बदलाव का उपयोग', https://tinyurl.com/bnrcrddz.
103 इंडिया ब्रीफिंग, 'भारत में एप्पल के अनुबंध निर्माता और घटक आपूर्तिकर्ता', दिनांक 17 अप्रैल 2024, https://tinyurl.com/357mv7hy
104 पूर्वोक्त

पीढ़ी के साथ दूरसंचार शामिल हैं। इस रणनीति को ऑस्ट्रेलिया-भारत मुक्त व्यापार करार और यूएस-भारत स्वच्छ ऊर्जा पहल जैसे करार के माध्यम से आगे बढ़ाया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप इन क्षेत्रों के भीतर व्यापार पैटर्न विकसित होने लगे हैं। उदाहरण के लिए, पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकी, जैसे सौर वॉटर हीटर, अपशिष्ट रीसाइक्लिंग उपकरण और पवन टर्बाइन के लिए टैरिफ वर्गीकरण से अमेरीका को निर्यात में वित्त वर्ष 20 में 199.2 मिलियन अमरीकी डालर से वित्त वर्ष 24 में 326.9 मिलियन अमरीकी डालर तक वृद्धि हुई हैं।[105] इसके अतिरिक्त, नवीकरण ीय ऊर्जा क्षेत्र में अग्रणी अमेरिकी और यूरोपीय कंपनियों, जैसे फर्स्ट सोलर, वेस्टा और स्कैटेक ने हरित प्रौद्योगिकियों की बढ़ती मांग का लाभ उठाने के लिए भारत में अपना परिचालन स्थापित किया है।

क्या चीन प्लस वन के परिणामस्वरूप व्यापारिक संबंध चीन से पूरी तरह दूर हो जायेंगे? शायद ऐसा न हो। उदाहरण के लिए, मेक्सिको, वियतनाम, ताइवान और कोरिया जैसे देशों को लें, जो चीन से अमेरिका के व्यापार विचलन के प्रत्यक्ष लाभार्थी थे। भले ही इन देशों ने अमेरिका को निर्यात में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाई, उन्होंने चीनी एफडीआई में भी सहवर्ती वृद्धि प्रदर्शित की।[106] इसलिए, दुनिया पूरी तरह से चीन से आगे नहीं देख सकती, भले ही वह चीन प्लस वन का पीछा कर रही हो।

भारत के पास चीन प्लस वन रणनीति से लाभ उठाने के लिए दो विकल्प हैं: यह चीन की आपूर्ति श्रृंखला में एकीकृत हो सकता है या चीन से एफडीआई को बढ़ावा दे सकता है। इन विकल्पों में से, चीन से एफडीआई पर ध्यान केंद्रित करना अमेरिका में भारत के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए अधिक आशाजनक लगता है, जैसा कि पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं ने अतीत में किया था। इसके अतिरिक्त, चीन प्लस वन दृष्टिकोण से लाभ उठाने के लिए एक रणनीति के रूप में एफडीआई को चुनना व्यापार पर निर्भर रहने से अधिक फायदेमंद प्रतीत होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि चीन भारत का शीर्ष आयात भागीदार है, और चीन के साथ व्यापार घाटा बढ़ रहा है। चूंकि अमेरिका और यूरोप अपने तत्कालिक संसाधन को चीन से दूर कर रहे हैं, इसलिए चीनी कंपनियों द्वारा भारत में निवेश करना और फिर इन बाजारों में उत्पादों का निर्यात करना अधिक प्रभावी है, बजाय इसके कि वे चीन से आयात करें, न्यूनतम मूल्य जोड़ें और फिर उन्हें फिर से निर्यात करें। इसके अतिरिक्त, रोडियम समूह के हालिया शोध नोट में बताया गया है, ष्इतने सारे उत्पाद श्रेणियों पर चीन का प्रभुत्व, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, आर्थिक दबाव का जोखिम पैदा करता है, जहां सरकार राजनीतिक लाभ के लिए महत्वपूर्ण निविष्टि तक पहुंच को रोकती है।''[107] उसी संक्षिप्त विवरण में यह भी कहा गया है, 'ब्राजील और तुर्की ने चीनी ईवी के आयात पर बाधाएं खड़ी की हैं, लेकिन इस क्षेत्र में चीनी एफडीआई को आकर्षित करने के लिए उपाय किए हैं।' यूरोपीय देशों ने भी इसी तरह का दृष्टिकोण अपनाने का फैसला किया है।[108] इसलिए यह जरूरी है कि भारत चीन से माल आयात करने और चीन से पूंजी (एफडीआई) आयात करने के बीच सही संतुलन बनाए।

पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार

4.72 बड़े पूंजी प्रवाह के साथ सीएडी में कमी के कारण वित्त वर्ष 24 में विदेशी मुद्रा भंडार (एफईआर) में वृद्धि हो पाई है। एफईआर का बफर घरेलू आर्थिक कार्यकलाप को वैश्विक उतार-चढ़ाव से बचाता है। ये भंडार आधार के रूप में कार्य करते हैं और नकदी प्रदान करते हैं और यह सुनिश्चित करते है कि भारत अपने विदेशी दायित्वों को पूरा कर सकते है। वित्त वर्ष 24 के दौरान, भारत का एफईआर 68 बिलियन अमेरिकी डालर बढ़ गया, जो प्रमुख विदेशी मुद्रा भंडार रखने वाले देशों में सबसे अधिक वृद्धि है। दिनांक 21 जून 2024 को एफईआर 653.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो वित्त वर्ष 25 के लिए अनुमानित 10 महीने से अधिक के आयात और मार्च 2024 के अंत में बकाया कुल विदेशी ऋण के 98 प्रतिशत से अधिक को कवर करने के लिए पर्याप्त है।

105 एचएस कोड-8402, 8406 और 8414

106 2 जुलाई 2024 को एनसीईएआर, इंडिया पॉलिसी फोरम में आईएमएफ के आर्थिक परामर्शदाता और अनुसंधान विभाग के निदेशक पियरे-ओलिवियर गौरींचस द्वारा दी गई प्रस्तुति से लिया गया, 'सिस्टम में दरारें: कैसे भू-आर्थिक विखंडन दुनिया को फिर से आकार दे रहा है'

107 कैसे चीन की अत्यधिक क्षमता उभरती अर्थव्यवस्थाओं को रोकती है', रोडियम ग्रुप, 13 जून 2024, https://tinyurl-com/y9d6rpna.

108 'चीन शॉक 2-0 पर यूरोप की प्रतिक्रिया: चीन को करीब रखें', वॉल स्ट्रीट जर्नल, 23 जून 2024, https://tinyurl-com/j8trksxv

चार्ट IV.31: भारत ने वित्त वर्ष 24 में विदेशी मुद्रा भंडार रिजर्व में सबसे महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की है

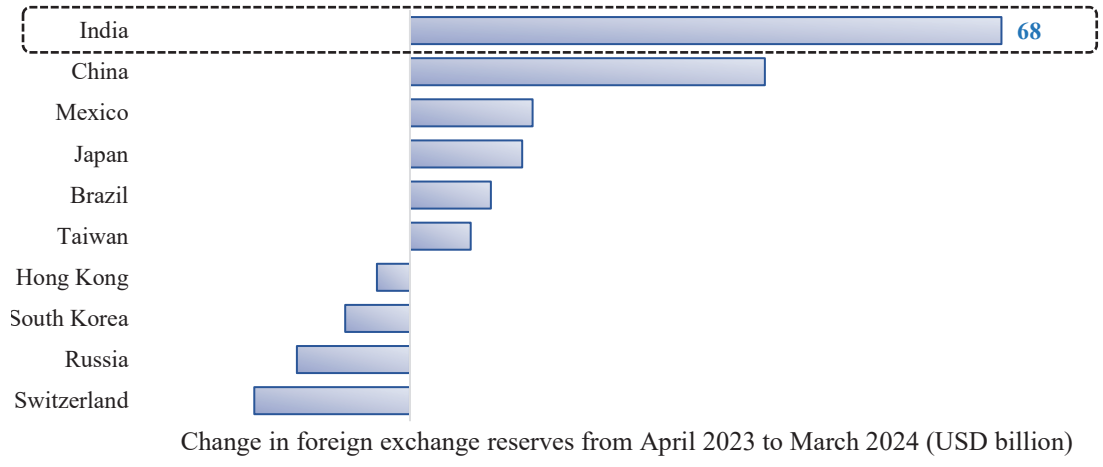

स्रोत: ब्लूमबर्ग, भारत के लिए आरबीआई (हैंडबुक ऑफ स्टैटिस्टिक्स ऑन इंडियन इकोनॉमी, फॉरेन एक्सचेंज रिजर्व, वीकली, आरबीआई)

चार्ट IV.32: भारत के विदेशी मुद्रा भंडार की पर्याप्तता (वार्षिक आयात के महीनों की संख्या के संदर्भ में): अंतर-राष्ट्र परिप्रेक्ष्य

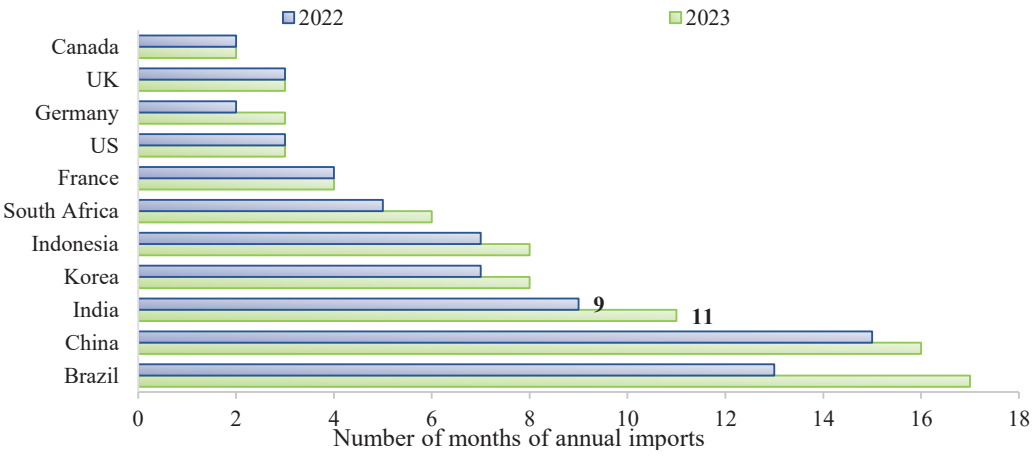

स्रोत: आईएमएफ (विदेशी मुद्रा भंडार) और विश्व व्यापार संगठन (आयात आंकड़ों के लिए)

विनिमय दरें

4.73 वित्त वर्ष 24 में भू-राजनीतिक जोखिमों, बढ़ती ब्याज दरों और अस्थिर कमोडिटी की कीमतों के बावजूद, अमेरिकी अर्थव्यवस्था ने टाइट लेबर मार्केट और उत्साहित कंज्यूमर भावनाओं जैसे सकारात्मक आर्थिक संकेतकों के साथ बेहतर प्रदर्शन किया है। इन कारकों ने अमेरिकी ट्रेजरी बाजारों में वैश्विक निधि आकर्षित करने में योगदान दिया क्योंकि ग्रीनबैक ऑन सेफ-हेवन अपील की उच्च मांग थी। वित्त वर्ष 24 में, अमेरिकी डॉलर लगभग हर प्रमुख समकक्ष देशों की तुलना में अग्रणी रहा। रुपया भी अवमूल्यन दबाव में आ गया। तथापि, रुपया सबसे कम अस्थिर प्रमुख मुद्राओं में से एक था। इसके अतिरिक्त, इसने पिछले वर्षों की तुलना में वित्त वर्ष 24 में सबसे कम अस्थिरता दर्शाई। भिन्नता के गुणांक (सीवी) का उपयोग करके अस्थिरता को अनुमान से यह पता लगाता है कि सीवी वित्त वर्ष 24 के दौरान 0.58 था, जो पिछले वर्षों की तुलना में बहुत कम था। मजबूत अमेरिकी डॉलर और अमेरिकी ट्रेजरी प्रतिफल में बढ़ोतरी के बावजूद रुपये की सापेक्ष स्थिरता भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूत वृहद आर्थिक बुनियाद की मजबूती, वित्तीय स्थिरता और विदेशी स्थिति में सुधार को दर्शाती है। भविष्य में, मजबूत विदेशी प्रवाह और सरल व्यापार घाटे से रुपये के बेहतर स्थिति में रहने की उम्मीद है।

चार्ट IV.33: रुपया/अमेरिकी डालर विनिमय दर की अस्थिरता

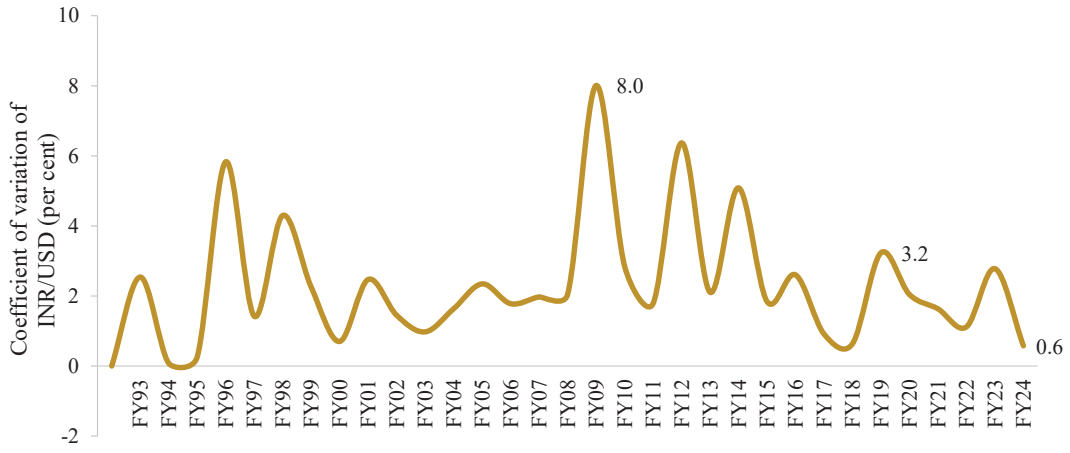

स्रोत: चार्ट संख्या 200 पर आधारित स्वयं की गणना के अनुसार, एसडीआर, अमेरिकी डॉलर, पाउंड स्टर्लिंग, यूरो और जापानी येन, विदेशी क्षेत्र की तुलना में भारतीय रुपये की विनिमय दर, भारतीय अर्थव्यवस्था सांख्यिकी की पुस्तिका, आरबीआई

चार्ट IV.34: वित्त वर्ष 24 में अमेरिकी डॉलर के संदर्भ में अन्य देशों की विनिमय दर में अस्थिरता

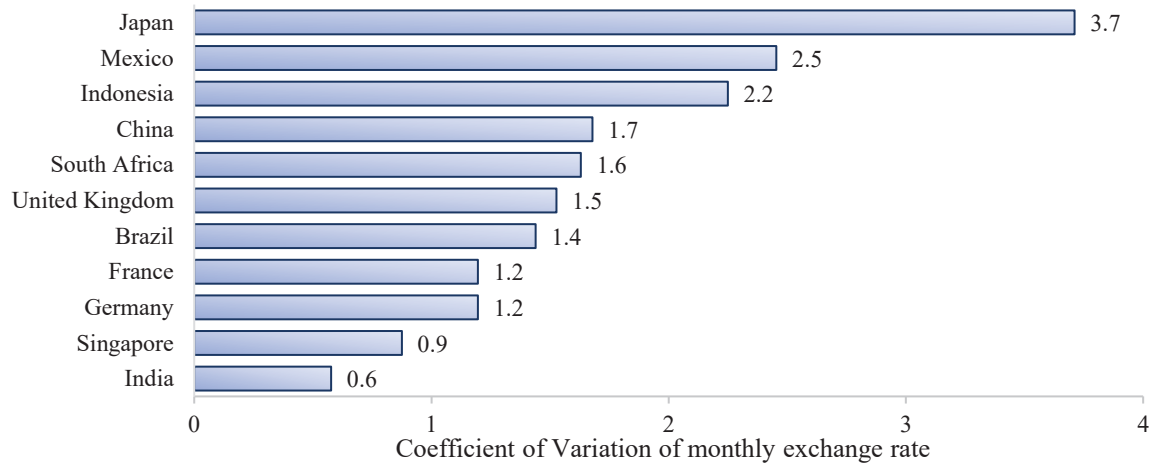

स्रोत: बीआईएस डेटा पोर्टल से द्विपक्षीय विनिमय दर पर डेटा और स्वयं की गणना
टिप्पणी: विनिमय दर की अस्थिरता की गणना परिवर्तन गुणांक का उपयोग करके की गई है

4.74 रुपया/अमेरिकी डॉलर विनिमय दर वित्त वर्ष 24 में 82-83.5 अमेरिकी डॉलर की सीमा में थी, जो वित्त वर्ष 24 के दौरान अमेरिकी डालर की तुलना में केवल 2.9 प्रतिशत कम थी। वित्त वर्ष 24 में पाउंड स्टर्लिंग और यूरो की तुलना में रुपये में क्रमश: 6.9 और 6.8 प्रतिशत की गिरावट आई। तथापि, इस अवधि में जापानी येन की तुलना में इसमें 3.5 प्रतिशत की तेजी देखी गई।

4.75 रुपये की विनिमय दर बाजार द्वारा निर्धारित है। आरबीआई विदेशी मुद्रा बाजार को अपने व्यवस्थित कामकाज और विकास को सुनिश्चित करने के लिए नियंत्रित करता है और केवल रुपये में अनुचित अस्थिरता को रोकने के लिए हस्तक्षेप करता है। यह रुपये की अस्थिरता को नियंत्रित करने और विदेशी मुद्रा बाजारों को स्थिर रखने में कामयाब रहा है। हाल ही में, इसने विनिमय दर की अस्थिरता को कम करने और वैश्विक स्पिल ओवर को कम करने के लिए विदेशी मुद्रा वित्त पोषण के स्रोतों में विविधता लाने और विस्तार करने के लिए विभिन्न उपायों की घोषणा की है। उदाहरण के लिए, ऋण प्रवाह में एफपीआई निवेश से संबंधित विनियामक व्यवस्था को भारतीय ऋण लिखतों में विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए संशोधित किया गया है।

चार्ट IV.35: वित्त वर्ष 24 के दौरान आरबीआई द्वारा विदेशी मुद्राओं की निवल खरीद (+) और बिक्री (-) संबंधी रुझान

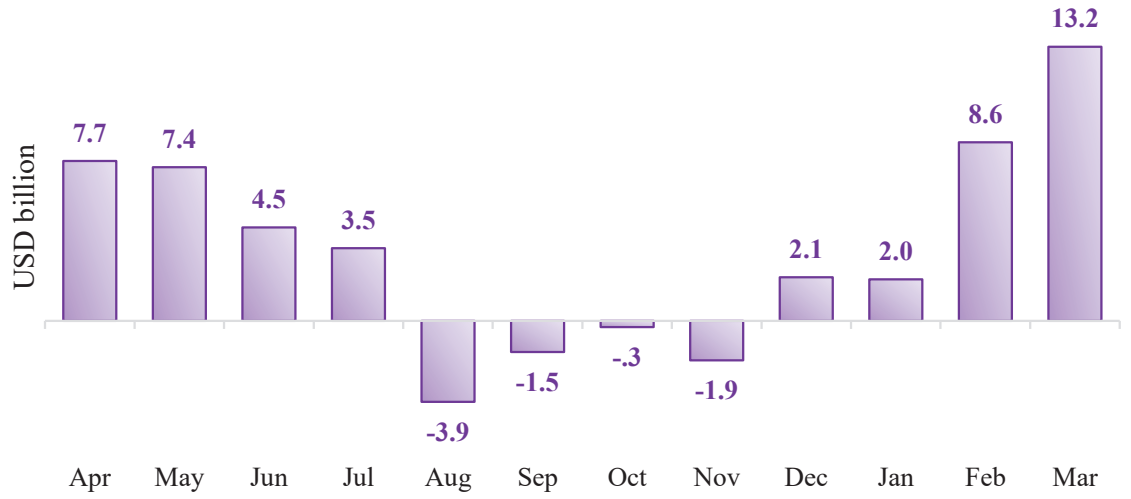

स्रोत: चार्ट संख्या 206, 'भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अमेरिकी डॉलर की बिक्री और खरीद', विदेशी क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था की सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई

4.76 सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर (एनईईआर) और वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (आरईईआर) के सूचकांकों का उपयोग विदेशी प्रतिस्पर्धात्मकता के सूचक के रूप में किया जाता है।[109] वित्त वर्ष 24 में 40-मुद्रा (व्यापार-भारित) के संदर्भ में, एनईईआर में 0.6 प्रतिशत की कमी हुई है। तथापि वित्त वर्ष 24 के दौरान आरईईआर में 0.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मई 2024 में, एनईईआर 92.2 और आरईईआर 104.7 देखी गई है जिसमें क्रमशः 0.03 प्रतिशत और 1.2 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।

चार्ट IV.36: 40-मुद्रा एनईईआर और आरईईआर (व्यापार-आधारित भार) के सूचकांक का उतार-चढ़ाव (आधार वर्ष 2015-16 = 100)

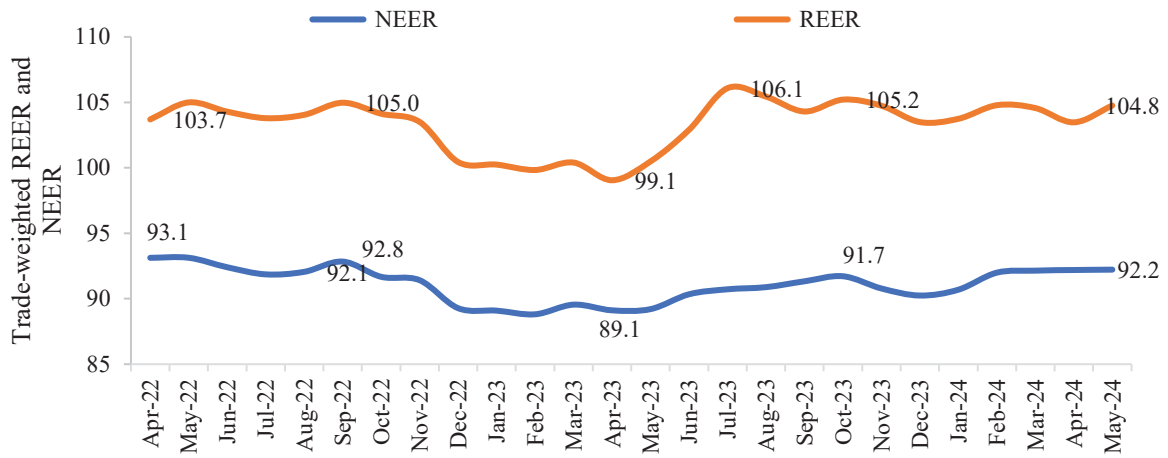

स्रोत: चार्ट संख्या 202, 'भारतीय रुपये की वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (आरईईआर) और सांकेतिक प्रभावी विनिमय दर (एनईईआर) के सूचकांक (40-मुद्रा द्विपक्षीय भार, मासिक औसत), विदेशी क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था की सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई

4.77 नीचे दिए गए बॉक्स IV.7 में व्यापार चैनल के साथ-साथ वित्तीय चैनल के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था पर विनिमय दर में परिवर्तन के प्रभाव पर चर्चा की गई है।

109 एनईईआर विदेशी मुद्राओं के संदर्भ में घरेलू मुद्रा की द्विपक्षीय सांकेतिक विनिमय दरों का भारित औसत है। आरईईआर को घरेलू और विदेशी देशों के बीच सापेक्ष मूल्य अंतर के लिए समायोजित सांकेतिक विनिमय दरों के भारित औसत के रूप में परिभाषित किया गया है।

बॉक्स IV.7: विनिमय दर के व्यापार और वित्तीय चैनल

ऐतिहासिक रूप से, अवमूल्यित मुद्रा निर्यात वृद्धि का एक प्रमुख चालक रही है। मार्शल लर्नर की शर्तें, यदि पूरी होती हैं, तो यह सुझाव देती हैं कि मुद्रा अवमूल्यन निर्यात लागत को कम करके और आयात कीमतों को बढ़ाकर शुद्ध निर्यात में वृद्धि को प्रोत्साहित कर सकता है। भारत में विनिमय दर के इस 'व्यापार' चैनल को अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। हालाँकि, विनिमय दर 'वित्तीय' चैनल के माध्यम से बाहरी क्षेत्र को भी प्रभावित करती है। सिद्धांत बताता है कि विनिमय दर का वित्तीय चैनल संभावित रूप से व्यापार चैनल के माध्यम से किए गए लाभ (या हानि) को संतुलित कर सकता है।

कमजोर रुपया विदेशी फंडिंग की आपूर्ति और लागत को बदलकर भुगतान संतुलन (बीओपी) को प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, मूल्यह्रास स्थानीय उधारकर्ताओं की ऋण-योग्यता को कम कर सकता है यदि उनके पास रुपया-मूल्यांक वाली परिसंपत्तियां हैं और वे विदेशी मुद्राओं में उधार लेते हैं। इससे विदेशी ऋण की लागत बढ़ सकती है और शुद्ध पूंजी का बहिर्वाह हो सकता है। वैश्विक स्तर पर, घरेलू मुद्राओं (डॉलर के मुकाबले) में वृद्धि ने सीमा पार बैंकिंग पूंजी प्रवाहों[110] को बढ़ा दिया है। हालांकि, केयर्न्स और पटेल (2016) दर्शाते हैं कि विनिमय दर का वित्तीय चैनल आम तौर पर ईएमई में अधिक सामर्थवान होता है, जहां अनियंत्रित विदेशी मुद्रा जोखिम मौजूद[111] होने की अधिक संभावना होती है।

पिछले दो दशकों में, भारत का एफडीआई और इक्विटी पोर्टफोलियो प्रवाह सालाना सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 2.5 प्रतिशत रहा है (आईएमएफ, 2023)[112]। सामान्य तौर पर, वित्त वर्ष 2014 और वित्त वर्ष 2024 के बीच पूंजी खाते में प्रवाह में 65 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसलिए, दुनिया के बाकी हिस्सों के साथ भारत के बड़े और बढ़ते वित्तीय खाते के संदर्भ में, क्या रुपया प्रतिस्पर्धी बना रहना चाहिए, यह विचारणीय प्रश्न है।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, व्यापार-भारांकित विनिमय दर और ऋण-भारित विनिमय दर का उपयोग करके विनिमय दर के दो अलग-अलग चैनलों का प्राक्कलन किया गया था। आरबीआई द्वारा प्रदान की गई व्यापार-भारांकित नामित प्रभावी विनिमय दर (एनईईआर) का उपयोग व्यापार चैनल को कैप्चर करने के लिए किया जाता है। वित्तीय चैनल को ऋण-भारांकित विनिमय दर (डीडब्ल्यूईआर) द्वारा निर्धारित किया जाता है, जिसे प्रमुख विदेशी मुद्राओं के मुकाबले रुपए के अंकगणितीय औसत के रूप में तैयार किया जाता है, तथा बाह्य ऋण की संरचना में उनके हिस्से के आधार पर भारांकित किया जाता है।

सिद्धांत रूप में, शुद्ध 'भुगतान संतुलन (बीओपी)' शून्य के बराबर होना चाहिए क्योंकि व्यापार अधिशेष (घाटे) पूंजी खाता घाटे (अधिशेष) के बराबर होते हैं। हालाँकि, व्यवहार में, देश बीओपी संतुलन के दुर्लभ उदाहरणों के साथ शुद्ध बीओपी घाटे/अधिशेष की सूचित करते हैं। साहित्य 'भुगतान संतुलन' (बीओपी) असंतुलनों को मौद्रिक असंतुलन और मुद्रा की अत्यधिक आपूर्ति या मांग के परिणाम के रूप में समझाता है। इसलिए, मुद्रा के आवागमन की उपस्थिति में दो चैनल (व्यापार और वित्तीय) किस हद तक एक दूसरे का प्रतिकार करते हैं, इसका अध्ययन करने के लिए, यहाँ इस्तेमाल किया जाने वाला आश्रित चर शुद्ध बीओपी होता है।

शुद्ध भुगतान संतुलन (बीओपी) पर रुपये के मूल्यह्रास/मूल्यवृद्धि के अलग-अलग चैनलों को कैप्चर के लिए एक ऑटो-रिग्रैसिव डिस्ट्रिब्यूटिव लैग (एआरडीएल) मॉडल का उपयोग किया जाता है। त्रुटियों के स्वत: सहसंबंध की अनुपस्थिति में एआरडीएल रूपरेखा में अंतर्जातता की समस्या को नियंत्रित किया जाता है। इसके अलावा, 'बहुसमरेखीयता (मल्टीकोलिनेअरिटी)' भी कोई महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं है क्योंकि इसमें चरों के अंतराल और अंतरों का उपयोग किया जाता है।

$$\Delta lnBoP_t = \gamma_i \sum BoP_{t-1} + \delta_i \sum \Delta DWER_t + \beta_i \sum \Delta NEER_t + \theta X_t + \varepsilon_t$$

110 ब्रूनो, वी., और शिन, एच.एस. (2015). कैपिटल फ्लोज एंड द रिस्क टेकिंग चैनल ऑफ मोनीटरी पालिसी, जर्नल ऑफ मोनीटरी इकोनॉमिक्सए 71, 119-132
111 बनर्जी, आर., हॉफमैन, बी., एंड मेहरोत्रा, ए. एन. (2020). कॉर्पोरेट इन्वेस्टमेंट एंड द एक्सचेंज रेट : द फाइनेंसियल चैनल
112 आईएमएफ, 2024 इंडियाज फाइनेंसियल सिस्टम : बिल्डिंग द फाउंडेशन फॉर स्ट्रांग एंड सस्टेनेबल ग्रोथ

उपयोग में लाया गया डेटा वित्त वर्ष 2012 की पहली तिमाही से वित्त वर्ष 2024 की तीसरी तिमाही के बीच तिमाही आवृत्ति पर है। आश्रित चर नामिक शर्तों में शुद्ध भुगतान संतुलन है जिसकी गणना Ln (BoP क्रेडिट)/(BoP डेबिट) के रूप में की जाती है; डीडब्ल्यूईआर ऋण-भारांकित विनिमय दर को प्रदर्शित करता है। गुणांक δ_i और β_i, विनिमय दर के ऋण चैनल और विनिमय दर के व्यापार चैनल में परिवर्तन के प्रति शुद्ध भुगतान संतुलन की लोच को दर्शाते हैं। Xt में विश्व आयात, रेपो दर, कमोडिटी की कीमतें, घरेलू मांग, जीडीपी डिफ्लेटर और कोविड-19 वर्षों (मार्च 2020 से मार्च 2022) के लिए एक डमी जैसे नियंत्रण चर शामिल हैं। एआईसी मानदंड के अनुसार रिग्रेसर्स के लिए इष्टतम अंतरालों का चयन किया जाता है।

आश्रित चर - नेट बीओपी

रिग्रेसर्स	लॉन्ग रन इलास्टिसिटी
डीडब्ल्यूईआर	0-16*
एनईईआर	&0-7*

'*' 10 प्रतिशत के स्तर पर महत्व को दर्शाता है

परिणाम दर्शाते हैं कि भारत का व्यापार चैनल वित्तीय चैनल से अधिक मजबूत है। दीर्घावधि में, मूल्यवृद्धि का शुद्ध प्रभाव ऋणात्मक (-0.7 + 0.16) होता है। इस प्रकार, रुपये में एक प्रतिशत की वृद्धि से भुगतान संतुलन में 0.54 प्रतिशत की शुद्ध गिरावट आती है।[113]

क्रमिक सहसंबंध और पैरामीटर स्थिरता (सीयूएसयूएम परीक्षण) के लिए अनुमान के बाद की जाँच करने के अलावा, गतिशील ओएलएस ढांचे में चर का अध्ययन करके सुदृढ़ता की जाँच की गई। सुदृढ़ता जाँच का परिणाम नीचे दिया गया है:

आश्रित चर - नेट बीओपी

रिग्रॉसर	लॉन्ग रन इलास्टिसिटी
डीडब्ल्यूईआर	0-12**
एनईईआर	&1-01**

'**' 5 प्रतिशत के स्तर पर महत्त्व को दर्शाता है

परिणाम यह रेखांकित करते हैं कि प्रतिस्पर्धी रुपया भुगतान संतुलन को बढ़ावा देता रहता है क्योंकि व्यापार चैनल के माध्यम से प्राप्त लाभ वित्तीय चैनल में होने वाली लागतों से अधिक होते हैं। जैसा कि लॉन्गरिक 2022 द्वारा उल्लेख किया गया है, भारत के उच्च व्यापार खुलेपन और बाहरी ऋण की कम हिस्सेदारी का मतलब है कि मुद्रा में उतार-चढ़ाव का व्यापार चैनल प्रभाव वित्तीय चैनल प्रभाव पर हावी है। यह ब्राजील और फिलीपींस जैसी अन्य ईएमई के विपरीत है, जिनके वित्तीय चैनल प्रभाव व्यापार प्रभाव पर हावी हैं।

अंतर्राष्ट्रीय निवेश की स्थिति

4.78 निवल आईआईपी[114] स्थिति यह निर्धारित करती है कि कोई देश अपनी विदेशी आस्तियों और देनदारियों के बीच अंतर को मापकर निवल लेनदार या देनदार राष्ट्र है या नहीं। मार्च 2024 के अंत तक, भारतीय निवासियों की विदेशी वित्तीय आस्ति 1,028.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर थी, जो मार्च 2023 के स्तर की तुलना में 109.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर या 11.9 प्रतिशत अधिक थी, जो मुख्य रूप से आरक्षित आस्ति, मुद्रा और जमा, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, व्यापार ऋण और अग्रिम और ऋण में वृद्धि हुई थी। इसी अवधि में देश की आरक्षित आस्तियां 646.4 बिलियन डॉलर रहीं, जो भारत की अंतरराष्ट्रीय वित्तीय आस्तियों का लगभग 62.9 प्रतिशत है।इसमें इसी अवधि के दौरान 11.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

113 उदाहरण के लिए देखें, फ्रेंकेल, जे., और मुसा, एम. (1985)। एसेट मार्केट्स, एक्सचेंज रेट्स एंड बैलेंस ऑफ पेमेंट्स, हैंडबुक ऑफ इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम II (एडि.), रोनाल्ड जोन्स एंड पीटर केनन; जॉनसन, एच, जी. (1958)। टुवर्ड्स जनरल अ थ्योरी ऑफ बैलेंस ऑफ पेमेंट।

114 आईएमएफ, बैलेंस ऑफ पेमेंट्स एंड इंटरनेशनल इन्वेस्टमेंट पोजिशन मैनुअल के अनुसार, आईआईपी सांख्यिकीय विवरण है जो किसी समय पर (क) किसी अर्थव्यवस्था के निवासियों की वित्तीय आस्तियों का मूल्य और संरचना दर्शाता है जो गैर-निवासियों का दावा है और आरक्षित आस्तियों के रूप में रखे गए सोने के बुलियन, और (ख) किसी अर्थव्यवस्था के निवासियों की गैर-निवासियों के प्रति देनदारियाँ हैं। किसी भी अर्थव्यवस्था की विदेशी वित्तीय आस्तियों और देनदारियों के बीच का अंतर अर्थव्यवस्था का निवल आईआईपी है, जो सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है।

4.79 मार्च 2024 के अंत तक 1,390 बिलियन अमेरिकी डॉलर की अंतर्राष्ट्रीय देनदारियां मार्च 2023 के स्तर की तुलना में 104.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर (8.1 प्रतिशत) अधिक थीं। इस वृद्धि को मुख्य रूप से पोर्टफोलियो निवेश, ऋण, प्रत्यक्ष निवेश और अन्य देय खातों में वृद्धि के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था। मार्च 2024 तक कुल विदेशी देनदारियों में ऋण देनदारियों का हिस्सा 51.1 प्रतिशत था।

4.80 इस प्रकार, मार्च 2024 के अंत तक भारत में गैर-निवासियों के निवल दावों का मूल्य 361.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो मार्च 2023 के स्तर से 5.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर कम हो गया। मार्च 2024 के अंत तक भारत की अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय आस्तियों में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय देनदारियों का 74 प्रतिशत शामिल था।

मार्च 2024 के अंत में भारत की निवल अंतर्राष्ट्रीय निवेश स्थिति में सुधार

चार्ट IV.37(क): निवल आईआईपी और जीडीपी के प्रतिशत के रूप में

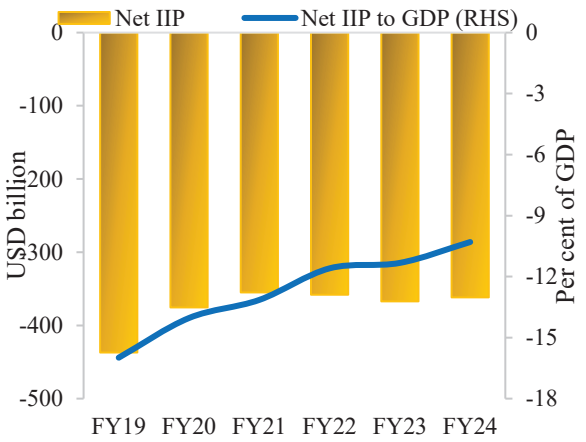

चार्ट IV.37(ख): आस्ति देनदारियों का अनुपात (प्रतिशत में)

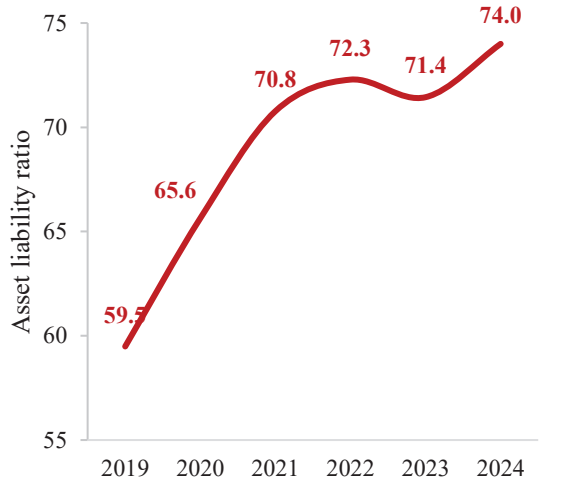

स्रोत: 'भारत की अंतर्राष्ट्रीय निवेश स्थिति', सांख्यिकी, विदेशी क्षेत्र, अंतर्राष्ट्रीय वित्त, आरबीआई

स्थिर विदेशी ऋण की स्थिति

4.81 चालू खाते को राष्ट्रीय (सार्वजनिक और निजी दोनों) बचत और निवेश के बीच अंतर के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है। अत चालू खाता घाटा निवेश के वांछित स्तर की तुलना में राष्ट्रीय बचत के निम्न स्तर को प्रतिबिम्बित कर सकता है। घरेलू बचत के पूरक के रूप में विदेशी ऋण देशों को तेजी से बढ़ने में मदद करता है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में, उच्च आर्थिक विकास आमतौर पर उच्च विदेशी ऋण से और विलोमत: जुड़ा होता है। तथापि, विदेशी ऋण का असंधारणीय बड़ा स्टॉक संभावित रूप से संवेदनशीलता पैदा कर सकता है और विकास की संभावनाओं को कम कर सकता है।

4.82 भारत ने चालू खाता घाटे को संधारणीय सीमाओं के भीतर रखने और विदेशी वित्त के गैर-ऋण सृजन को प्रोत्साहित करने के व्यापक उद्देश्य के साथ अपने विदेशी ऋण का विवेकपूर्ण प्रबंधन किया है। भारत का विदेशी ऋण वर्षों से संधारणीय रहा है, जैसा कि नीचे चार्ट IV.38 में स्पष्ट है। सकल घरेलू उत्पाद अनुपात में विदेशी ऋण मार्च 2024 के अंत में घटकर 18.7 प्रतिशत हो गया, जो मार्च 2023 के अंत में 19.0 प्रतिशत था। कुल विदेशी ऋण में अल्पकालिक ऋण (एक वर्ष तक की मूल परिपक्वता सहित) की हिस्सेदारी मार्च 2024 के अंत में घटकर 18.5 प्रतिशत हो गई, जो मार्च 2023 के अंत में 20.6 प्रतिशत थी। कुल ऋण का एफईआर अनुपात मार्च 2024 तक 97.4 प्रतिशत था।

चार्ट IV.38: स्थिर भारत की विदेशी ऋण स्थिति और सुगम संकेतक

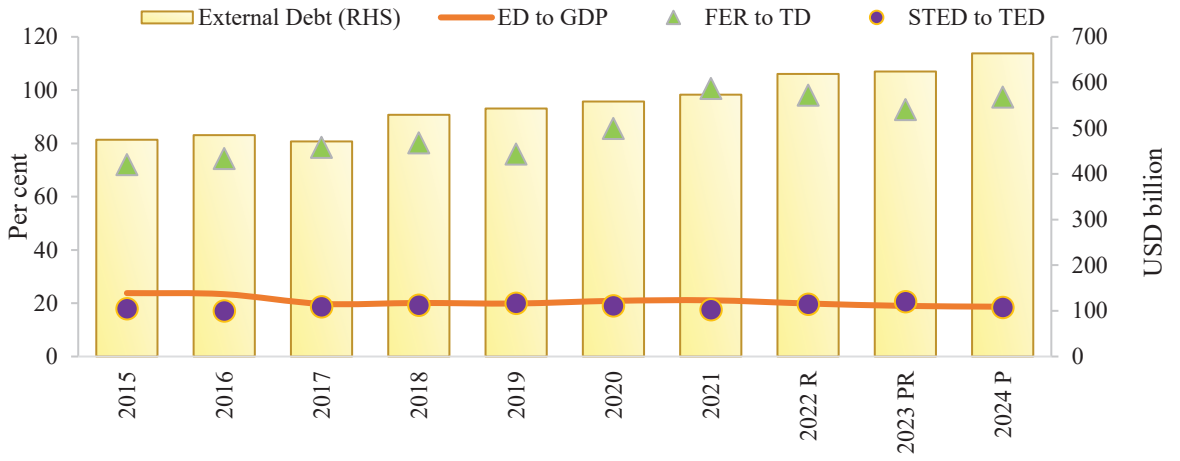

स्रोत: 'भारत का विदेशी -त्रैमासिक ऋण और भारत का विदेशी ऋण-अमेरिकी डॉलर (मार्च के अंत तक)', सांख्यिकी, विदेशी क्षेत्र, विदेशी ऋण-आरबीआई
टिप्पणी: आर-संशोधित, पीआर-आंशिक रूप से संशोधित, पी-अनंतिम; ईडी-विदेशी ऋण, एफईआर-विदेशी मुद्रा भंडार, टीईडी-कुल विदेशी ऋण, एसटीईडी-अल्पवाधिक विदेशी ऋण

4.83 वर्ष 2022 में अन्य देशों के साथ भारत के विभिन्न ऋण सुगम संकेतकों की तुलना करने से यह संकेत मिलता है कि सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) के प्रतिशत के रूप में कुल ऋण के अपेक्षाकृत निम्न स्तर और कुल विदेशी ऋण के प्रतिशत के रूप में अल्पकालिक विदेशी ऋण सहित भारत की स्थिति बेहतर है। एफईआर का पर्याप्त स्तर इसे और अधिक सुगम बनाता है।

सारणी IV.3: भारत के प्रमुख विदेशी ऋण संकेतक: स्थिरता का संक्षिप्त विवरण

(प्रतिशत, जब तक कि अन्यथा इंगित न किया गया हो)

मार्च के अंत में	विदेशी ऋण (बिलियन अमेरिकी डालर)	सकल घरेलू उत्पाद में विदेशी ऋण	ऋण सेवा अनुपात	कुल ऋण के लिए विदेशी मुद्रा भंडार	कुल ऋण में रियायती ऋण	विदेशी मुद्रा भंडार में अल्पावधि ऋण	कुल ऋण में अल्पकालिक ऋण (मूल परिपक्वता)
2018	529.3	20.1	7.5	80.2	9.1	24.1	19.3
2019	543.1	19.9	6.4	76.0	8.7	26.3	20.0
2020	558.4	20.9	6.5	85.6	8.8	22.4	19.1
2021	573.4	21.1	8.2	100.6	9.0	17.5	17.6
2022 आर	618.8	19.9	5.2	98.1	8.3	20.0	19.7
2023पीआर	624.1	19.0	5.3	92.7	8.2	22.2	20.6
2024 पी	663.8	18.7	6.7	97.4	7.5	19.0	18.5

स्रोत: वित्त मंत्रालय
आर: संशोधित, पीआर: आंशिक रूप से संशोधित; अ: अनंतिम

संभावनाएं और चुनौतियां

4.84 हालांकि सतत भू-राजनीतिक ऊथल-पुथल ने भारत के व्यापारिक निर्यात को प्रभावित किया, लेकिन अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी की कीमतों को कम करने से वित्त वर्ष 23 की तुलना में वित्त वर्ष 24 में कम व्यापार घाटा सुनिश्चित हुआ।

व्यापारिक घाटे में कमी और सेवा निर्यात में वृद्धि से चालू खाते के घाटे में सुधार हुआ है, जिससे वित्त वर्ष 2024 की चौथी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद का 0.6 प्रतिशत अधिशेष रहा। आने वाले वर्षों में, भारत के व्यापार घाटे में और गिरावट आने की उम्मीद है क्योंकि पीएलआई योजना का विस्तार किया गया है और भारत कई उत्पाद श्रेणियों में विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी विनिर्माण आधार तैयार करता है। इसके अतिरिक्त, हाल ही में हस्ताक्षरित ईएफटीए से देश के निर्यात के वैश्विक बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि होने की उम्मीद है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों और आरबीआई को उम्मीद है कि वित्त वर्ष 24 के लिए सीएडी से जीडीपी एक प्रतिशत से कम हो जाएगा, जो बढ़ते व्यापारिक और सेवाओं के निर्यात और रेजीलिएस रेमिटेंस से प्रेरित है

4.85 तथापि वर्तमान भू-राजनीतिक तनाव और नीतिगत अनिश्चितता की निरंतरता के कारण भारत के विदेशी क्षेत्र के निष्पादन के लिए जोखिम कम हुआ है। कुछ चुनौतियों का उल्लेख नीचे किया गया है: -

- **प्रमुख व्यापारिक भागीदारों की मांग में गिरावट:** डीजीसीआईएस आंकड़ों के अनुसार, चीन के बाद वित्त वर्ष 24 में अमेरिका भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था। तथापि, वर्ष 2022 में 8.6 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में वर्ष 2023 में यूएसए को कुल आयात में 1.7 प्रतिशत की गिरावट आई है। इसने भारत सहित व्यापारिक भागीदारों में निर्यात वृद्धि को काफी प्रभावित किया।[115] बढ़ता संरक्षणवाद एक और जोखिम है जो वर्ष 2024 और वर्ष 2025 में व्यापार रिकवरी को कमजोर कर सकता है।
- **व्यापार लागत में वृद्धि:** लाल सागर में शिपिंग पर हमलों और पनामा नहर में सूखे के कारण व्यापार प्रवाह का मार्ग बदल गया है, जिससे यात्रा का समय और लागत बढ़ गई है, जैसा कि ऊपर पैरा 4.8 में बताया गया है। भारत का मर्केनडाइडेड व्यापार समुद्री व्यापार पर बहुत अधिक निर्भर करता है, इसलिए प्रमुख पोत परिवहन मार्गों में गड़बड़ी इसकी अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है। सीआरआईएसआईएल की एक रिपोर्ट[116] में कहा गया है कि लाल सागर संकट ने भारत में मध्य पूर्व के उर्वरक निर्यात को प्रभावित किया है क्योंकि जॉर्डन और इजराइल से म्यूरिएट ऑफ पोटाश का आयात प्रभावित हुआ है।
- **कमोडिटी की कीमत में अस्थिरता:** कमोडिटी विशेष रूप से तेल, धातु और कृषि उत्पादों जैसे महत्वपूर्ण आयातों की कीमतों में उतार-चढ़ाव, भारत के व्यापार संतुलन और मुद्रास्फीति के स्तर को प्रभावित कर सकते हैं। निराशाजनक वैश्विक विकास विशेष रूप से औद्योगिक वस्तुओं के लिए नकारात्मक जोखिम उत्पन्न कर सकता है। अतिरिक्त व्यापार प्रतिबंध खाद्य कीमतों को अधिक बढ़ा सकते हैं।
- **व्यापार नीति में बदलाव:** प्रमुख व्यापारिक भागीदारों द्वारा व्यापार नीतियों में परिवर्तन या भू-राजनीतिक घटनाक्रम भारत के निर्यात अवसरों और बाजार पहुंच को प्रभावित कर सकते हैं। विश्व व्यापार संगठन की व्यापार निगरानी रिपोर्ट, नवंबर 2023[117] के अनुसार, विश्व व्यापार संगठन के सदस्यों द्वारा नए निर्यात प्रतिबंधों के कार्यान्वयन की गति वर्ष 2020 से काफी बढ़ गई है। कोविड-19 से संबंधित 20 निर्यात प्रतिबंधों के अतिरिक्त खाद्य, चारा और उर्वरकों पर 75 निर्यात प्रतिबंध अभी भी लागू हैं। वर्ष 2023 के लिए लागू आयात प्रतिबंधों के तहत शामिल किया गया व्यापार अनुमानत 2,480 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो कुल विश्व आयात के लगभग दसवें हिस्से को दर्शाता है।

4.86 यह पता लगाना महत्वपूर्ण है कि भारत के लिए इन बदलते प्रतिमानों का क्या अर्थ है। नीतियों को ऐसा होना चाहिए जो आर्थिक विचारों के साथ सुरक्षा संबंधी समस्याओं का समाधान करे। पीएलआई और मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं के माध्यम से जटिल और विशिष्ट क्षेत्रों में विनिर्माण हेतु भारत के महत्वपूर्ण कदमों में इन लक्ष्यों को संतुलित करना शामिल है। दूसरी ओर, सेवाओं में भारत की बढ़त आने वाले वर्षों में हमारे वैश्वीकरण को बल प्रदान करेगी। पीटरसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स[118] के हालिया लेख में यह दावा किया गया है कि सेवाओं में वैश्वीकरण जारी है, भले ही हम माल में हाइपरग्लोबलाइज्ड व्यापार के युग से आगे निकल चुके हैं। इसका अर्थ यह है कि भारत के सेवा क्षेत्र के निर्यात की वैश्विक मांग बढ़ रही है।

115 ओईसीडी आर्थिक आउटलुक, मई 2024, https://www.oecd.org/economic-outlook/may-2024/ https://tinyurl.com/2xf5cb6x

116 https://tinyurl.com/2xf5cb6x

117 https://www.wto.org/english/news_e/spno_e/spno42_e.htm

118 आईबीआईडी, टिप्पणी37

4.87 भारत एक साथ लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में विकास से एकीकरण द्वारा संभावित लाभों का फायदा उठाने की दिशा में काम कर रहा है। यह व्यापार को बढ़ाने के लिए किए गए अवसंरचना के महत्वपूर्ण समझौते से स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर (आईएनएसटीसी) से रूस और यूरोप में शिपमेंट के लिए व्यापार समय कम होने की उम्मीद है। एक अन्य प्रमुख संयुक्त अवसंरचना समझौता, भारत-मध्य पूर्व यूरोप गलियारा (आईएमईसी), एशिया को पत्तनों और रेलमार्गों के माध्यम से यूरोप से जोड़ेगा। इसी तरह, भौगोलिक क्षेत्रों में फैले देशों के साथ व्यापार समझौते करने की दिशा में ठोस प्रयास किया जा रहा है।

4.88 अंततः, भारत को कई उत्पाद क्षेत्रों में अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करने पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, भारत में कृषि संबंधी वस्तुओं का बड़ा वैश्विक निर्यातक बनने की जबरदस्त क्षमता है। मजबूत क्षेत्रीय व्यापार संबंधों को बढ़ावा देने और भारतीय वस्तुओं के लिए अधिक बाजार जोड़ने से वैश्विक मांग में उतार-चढ़ाव को कम करने में मदद मिलेगी। ऐसे युग में जब वैश्विक आर्थिक विकास भू-राजनीतिक तनाव और संरक्षणवाद से प्रभावित होने की संभावना है, वैसे में भारत के माल और सेवाओं के निर्यात में वृद्धि पहले की तुलना में कठिन चुनौती होगी। निजी क्षेत्र में उत्पाद सुरक्षा और गुणवत्ता संबंधी धारणा और सार्वजनिक क्षेत्र में नीतिगत स्थिरता संबंधी चुनौती को अवसर में बदलने के लिए निश्चित रूप से सही समय हैं।

****